केनरा ज्योति

अंक : 35 | केनरा बैंक की त्रैमासिक हिंदी गृह पत्रिका | जनवरी–मार्च, 2023

OpenAI ChatGPT 4.0

केनरा बैंक
भारत सरकार का उपक्रम

Canara Bank
A Government of India Undertaking

सिंडिकेट Syndicate

Together We Can

दिनांक 27 फरवरी, 2023 को आयोजित प्रधान कार्यालय, राजभाषा अनुभाग, बेंगलूरु की 187वीं राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दौरान **'केनरा ज्योति'** पत्रिका के 34वें अंक का विमोचन करते हुए श्री के. सत्यनारायण राजु, प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री अशोक चंद्र, कार्यपालक निदेशक, श्री शंकर. एस., मुख्य महाप्रबंधक एवं उपस्थित अन्य गणमान्य।

दिनांक 21 अप्रैल, 2023 को संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा हमारे क्षेत्रीय कार्यालय शिमला का राजभाषाई निरीक्षण किया गया। निरीक्षण कार्यकम के समापन पर उप समिति के संयोजक माननीय सांसद श्री मनोज रजोरिया जी से सफल निरीक्षण हेतु प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए श्री प्रवीण राय, सहायक महाप्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय शिमला साथ में उपस्थित हैं श्री जी.एस. रविसुधाकर, महाप्रबंधक, मानव संसाधन विभाग, प्रधान कार्यालय, बेंगलूरु एवं श्रीमती सैलीना गोयल, महाप्रबंधक, अंचल कार्यालय, चंडीगढ़।

श्री के. सत्यनारायण राजु
प्रबंध निदेशक
व मुख्य कार्यकारी अधिकारी

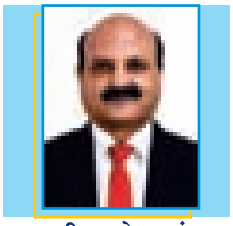

श्री अशोक चंद्र
कार्यपालक निदेशक

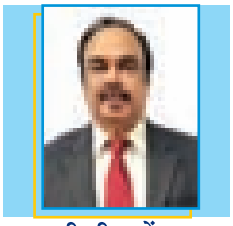

श्री डी. सुरेंद्रन
मुख्य महाप्रबंधक

श्री जी. एस. रविसुधाकर
महाप्रबंधक

श्री ई. रमेश
सहायक महाप्रबंधक

संपादक
श्री राघवेन्द्र कुमार तिवारी, वरिष्ठ प्रबंधक

संपादन सहयोग
श्री जी. अशोक कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक
श्री मयंक पाठक, वरिष्ठ प्रबंधक
श्री डी. बालकृष्ण, वरिष्ठ प्रबंधक
सुश्री अंकिता कुमारी, परि.अधिकारी

बिक्री के लिए नहीं
प्रकाशन : केनरा बैंक,
राजभाषा अनुभाग,
मानव संसाधन विभाग, प्रधान कार्यालय
112, जे.सी. रोड,
बेंगलूरु - 560 002
दूरभाष : 080-2223 9075
वेबसाइट :
www.canarabank.com

केवल आंतरिक परिचालन हेतु
* * *
पत्रिका में अभिव्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। केनरा बैंक का उनसे सहमत होना ज़रूरी नहीं है।

विषय सूची — पृष्ठ संख्या

प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश – **के. सत्यनारायण राजु**	02
मुख्य संपादक का संदेश – **ई. रमेश**	03
चैट जीपीटी-कृत्रिम बुद्धिमत्ता की दुनिया में क्रांति – **अमित सिंह**	04
भारत की जी20 अध्यक्षता के निहितार्थ – **प्रकाश माली**	06
शक्ति स्वरूपा – **अस्मिता द्विवेदी**	12
गीत – **स्वाति पाण्डेय**	12
क्रेडिट कार्ड पर कुछ अंतर्दृष्टि – **निशीथ श्रीवास्तव**	13
भविष्य का स्टोरेज – **कर्णी शरण सक्सेना**	18
मार्केटिंग एवं राजभाषा – **शशिकांत पाण्डेय**	20
कितनों की नईया पार करूँ? – **कुश राज**	24
अबला क्यों? – **पुष्कर पाण्डेय**	24
राजभाषा अधिकारियों की तीन दिवसीय हिंदी कार्यशाला की झलकियां	25
कार्ड टोकनाइजेशन – **डॉ. सुरेश कुमार**	29
राष्ट्र निर्माण हेतु ग्रामीण युवाओं का सशक्तिकरण – **लक्ष्मण राम**	31
किरदार – **अतुल कुमार शुक्ल**	35
नाम – **अक्षता वी. नूली**	35
मुसाफिर हूँ यारों – **निखिल दीप मेहंदीरत्ता**	36
बैंकर की रसोई – **बिनय कुमार मिश्रा**	41
दर्पण – **बिनोद कुमार बेदिया**	44
चलें दक्षिण की ओर – **रोहित कुमार**	45
एक थी नारायणी – **मीता भाटिया**	47
मैं (अहम्) – **यतीश कुमार गोयल**	49
इतवार – **पूजा धालीवाल**	51
मैं एक औरत हूं – **संध्या बाला**	51
ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता श्रृंखला	52

प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश

प्रिय केनराइट्स !

केनरा बैंक की त्रैमासिक हिंदी पत्रिका केनरा ज्योति के 35वें अंक को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यंत प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। किसी भी देश की एकता एवं अखंडता को बनाए रखने के लिए उसकी एक राजभाषा का होना अनिवार्य है। जिस भाषा में सरकार का आधिकारिक कामकाज़ होता है तथा जिसे संवैधानिक दर्जा भी प्राप्त है, वह है राजभाषा–हिंदी। भाषा से प्रत्येक मनुष्य, समाज और राष्ट्र एकता के सूत्र में आबद्ध रहते हैं। इसके द्वारा ही सभी देशवासियों के मनोमस्तिष्क में सहकारिता की भावना का उदय होता है।

हिंदी के अतीत की तरह उसका वर्तमान भी सुखद है तथा भविष्य और भी बेहतर होगा। संचार माध्यमों के द्वारा भी हिंदी के प्रचार–प्रसार से देश के कोने–कोने में प्रत्येक वर्ग और संप्रदाय की एकता को बल मिला है। हिंदी भाषा ने बाज़ार और कंप्यूटर दोनों की भाषा के रुप में अपना सामर्थ्य सिद्ध कर दिया है। आजकल मुद्रित और इलेक्ट्रॉनिक दोनों ही प्रकार के जनसंचार माध्यम नई ऊंचाइयों को छू रहे हैं।

वैश्वीकरण के इस युग में भारतीय संस्कृति विश्व पर हावी हो रही है। वैश्वीकरण के कारण जहाँ पूरा विश्व एक गांव के रुप में तब्दील हो चुका है, वहीं आज हिंदी को सबसे अनुकूल भाषा के रुप में वैश्विक बाज़ार में स्वीकारा जा रहा है। इससे एक ओर तो जहां हिंदी का विकास व विस्तार हो रहा है वहीं दूसरी ओर संपूर्ण राष्ट्र में भाषिक संपन्नता का परिचय पाकर हिंदी की स्वीकृति का भी क्षेत्र व्यापक होता जा रहा है।

भाषा जोड़ने का काम करती है यह देखना सुखद होगा कि आने वाले समय में आप सभी हिंदी एवं अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से कैसे अधिक से अधिक ग्राहकों को बैंक से जोड़ पाते हैं। जब हम ग्राहकों को उनकी भाषा में बैंकिंग सेवा प्रदान करते हैं तो हम उनके साथ एक आत्मीय संबंध बनाने में भी सफल होते हैं। जिससे हमारे कारोबार में भी वृद्धि होती है। दिनांक 8 मई, 2023 को घोषित हमारे बैंक के वार्षिक नतीजे 2023 को आप सभी ने अवश्य देखा होगा। इस बार, हमारे बैंक का वैश्विक कारोबार ₹20,41,764 करोड़ पहुंच गया है जो कि कुल 11.72% की वृद्धि दर है। हमारे बैंक के सकल अग्रिम में 16.41% वृद्धि हुई है और वित्तीय वर्ष 2023 के दौरान बैंक का निवल लाभ ₹ 10,604 करोड़ का हुआ है, 5 अंकों में अर्जित यह लाभ बैंक के लिए अभूतपूर्व उपलब्धि है। हमारे सभी ऊर्जावान केनराइट्स के मेहनत का ही परिणाम है कि बैंक ने लगातार तीसरी बार 15 दिन का पीएलआई सभी कर्मचारियों को प्रदान किया है। साथ ही, बैंक के सभी शेयरधारकों को जिन्होंने हम पर अपना विश्वास बनाए रखा है, उन्हें 120% का लाभांश देने की घोषणा, बैंकिंग उद्योग में ऐतिहासिक है। बैंक सकारात्मक सोच के साथ आगे की ओर बढ़ रहा है।

केनरा ज्योति के इस अंक में प्रकाशित रचनाओं एवं पत्रिका के स्तर में निरंतर उत्कृष्टता बनाए रखने के लिए रचनाकार एवं संपादन मंडल निश्चित ही बधाई के पात्र हैं। मेरी शुभकामनाएं है कि पत्रिका की यात्रा ऐसे ही जारी रहे एवं राजभाषा के प्रति प्रेम और समर्पण का भाव निरंतर बढ़ता रहे।

के. सत्यनारायण राजु
प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी

मुख्य संपादक का संदेश

प्रिय पाठकों,

आप सभी को केनरा ज्योति पत्रिका का 35वां अंक सौंपते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। केनरा ज्योति अपने हर एक अंक में नए अनुभव, नए कलेवर के साथ प्रकाशित हो रही है। वर्तमान अंक के लिए हमें बड़ी संख्या में रचनाएं प्राप्त हुई हैं, जो न केवल बैंक के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के राजभाषा हिंदी के प्रति लगाव का द्योतक है, अपितु उनकी साहित्यिक सृजनशीलता को भी रेखांकित करता है। यद्यपि स्थानाभाव के कारण सभी रचनाओं को शामिल करना संभव नहीं था तथापि, हमने उन रचनाओं को सम्मिलित किया है जो पाठक वर्ग को किसी न किसी रुप में प्रभावित करेंगी।

हम राजभाषा कार्यान्वयन का कार्य केवल संवैधानिक दायित्व के रुप में ही नहीं निभाते बल्कि बृहत जन समूह के साथ आत्मीय रुप से जुड़ने हेतु इसका प्रयोग करते हैं। बैंक राजभाषा की दिशा में 5 दशकों की यात्रा पूरा करने वाला है। अत: हमारे सुधी एवं सृजनात्मक रचनाकारों से आग्रह है कि इन 5 दशकों की लम्बी यात्रा के अनुभव को अपनी लेखनी के माध्यम से आगामी अंक को सुशोभित करें।

हिंदी सरल एवं सुबोध भाषा है। यह हमारी राजभाषा के साथ-साथ अखिल भारतीय स्तर पर भी प्रतिष्ठित है। हिंदी की प्रगति, हमारे राष्ट्र के मूल्यों के प्रसार के साथ -साथ विश्व बंधुत्व के भाव से भी जुड़ी हुई है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की विशेष पहचान और भारतवासियों को एकता के सूत्र में पिरोने में हिंदी एक मज़बूत कड़ी है।

मैं आशा करता हूं कि केनरा ज्योति का यह अंक पाठकों की प्रशंसा की दृष्टि से सफल होगा। सभी रचनाकारों के सहयोग के बिना पत्रिका प्रकाशन का कार्य संभव नहीं था। आशा है, भविष्य में भी इसी तरह आपका सहयोग प्राप्त होता रहेगा। पत्रिका का अनवरत प्रकाशन होता रहे एवं कार्यालय में राजभाषा की अविरल धारा इसी प्रकार प्रवाहित होती रहे यही हमारी कामना है। इस अंक पर भी आपकी अनुभवी दृष्टि हमारा मार्गदर्शन करेगी, इन्हीं अपेक्षाओं के साथ नए वित्तीय वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं ।

ई. रमेश
सहायक महाप्रबंधक

आलेख

चैट जीपीटी – कृत्रिम बुद्धिमत्ता की दुनिया में क्रांति

अमित सिंह
अधिकारी
अंचल कार्यालय, भोपाल

चैट जीपीटी क्या है :

चैट जीपीटी का फुलफॉर्म चैट जेनरेटिव प्रिट्रेंड ट्रांसफार्मर होता है। जनरेटिव का मतलब कुछ जनरेट करने वाला या बनाने वाला, प्रिट्रेंड का मतलब जो पहले से ट्रेन किया गया है, वहीं, ट्रांसफार्मर का मतलब ऐसा मशीन लर्निंग मॉडल जो दिए गए टेक्स्ट को आसानी से समझ लेता है। इसका निर्माण ओपन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के द्वारा किया गया है जो कि एक प्रकार का चैट बोट है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की वजह से ही यह आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर काम करेगा। आप इससे किसी भी तरह का सवाल करके इससे जानकारी प्राप्त कर सकते है। चैट जीपीटी ट्युरिंग टेस्ट भी पास कर चुका है मतलब यह आम इंसानों की तरह बात करता है और इससे इंसान एवं मशीन में अंतर कर पाना मुश्किल है।

चैट जीपीटी लांच एवं यूजर:

इसे साल 2022 में 30 नवंबर को लांच किया गया है। इसके यूजर की संख्या जनवरी 2023 तक 100 मिलियन से ज्यादा हो चुकी है एवं रोजाना 13 मिलियन से ज्यादा यूजर चैट जीपीटी पर विजिट करते है। चैट जीपीटी ने केवल 5 दिन में ही 1 मिलियन यूजर का आंकड़ा हासिल कर लिया एवं लोगों ने इसको खूब पसंद भी किया।

कंपनी नाम	1 मिलियन यूजर
नेटफ्लिक्स	3.5 साल
ट्विटर	2 साल
फ़ेसबुक	10 महीना
स्पोटीफ़ाई	5 महीना
इंस्टाग्राम	2.5 महीना
चैट जीपीटी	5 दिन

चैट जीपीटी कैसे काम करता है :

चैट जीपीटी को डेवलपर ने इस तरह बनाया है कि जो भी डेटा पब्लिकली उपलब्ध है वह इसके अंदर फीड है। ये एक मशीन लर्निंग आधारित चैट बोट है जिसमें वो सभी डेटा फीड है जो इंटरनेट पर उपलब्ध है या इंसानों द्वारा लिखा गया है।

इसकी वेबसाइट पर इस बारे में काफी विस्तार से इस बात की जानकारी दी गई है कि आखिर यह काम कैसे करता है। यह चैट बोट आपके द्वारा जो सवाल खोजे जाते हैं उसका जवाब ढूंढता है और फिर जवाब को सही प्रकार से और सही भाषा में तैयार करता है और उसके पश्चात परिणाम को आपके डिवाइस की स्क्रीन पर प्रस्तुत करता है।

यहां पर आपको यह भी बताने का विकल्प मिलता है कि आप इसके द्वारा बताए गए जवाब से संतुष्ट हैं अथवा नहीं है। आपके द्वारा जो भी जवाब दिया जाता है उसके हिसाब से यह अपने डाटा को भी लगातार अपडेट करता रहता है।

चैट जीपीटी की विशेषताएं :

इसकी प्रमुख विशेषता यह है कि आपके द्वारा जो सवाल यहां पर पूछे जाते हैं उनका जवाब आपको बिल्कुल विस्तार से आर्टिकल के रूप में

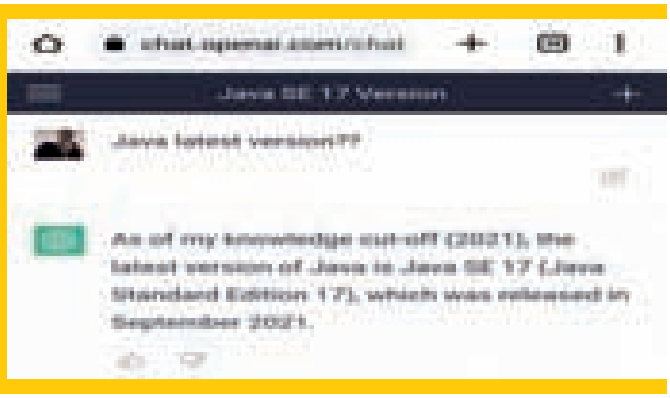

प्रदान होता है। कंटेंट तैयार करने के लिए चैट जीपीटी का इस्तेमाल किया जा सकता है। यहां पर आप जो भी सवाल पूछते हैं उसका जवाब आपको रियल टाइम में प्राप्त होता है।

इस सुविधा की सहायता से बायोग्राफी, एप्लीकेशन, निबंध, प्रोगामिंग कोड, कहानी इत्यादि चीजें भी लिखकर तैयार कर सकते हैं।

चैट जीपीटी का इस्तेमाल कैसे करें :

चैट जीपीटी का इस्तेमाल करने के लिए आपको इसको ऑफिशियल वेबसाइट Chat.openai.com पर जाकर साइनअप करके लॉग इन करना होगा तभी आप इसका इस्तेमाल कर सकते है। वर्तमान में इसका इस्तेमाल बिल्कुल मुफ्त में किया जा सकता है और बिल्कुल मुफ्त में इसकी आधिकारिक वेबसाइट पर अकाउंट भी क्रिएट किया जा सकता है। हालांकि भविष्य में हो सकता है कि इसका इस्तेमाल करने के लिए लोगों से शुल्क लिया जाए।

चैट जीपीटी V/S गूगल :

1. जब आप गूगल पर कुछ भी सर्च करते हैं तो सर्च रिजल्ट के बाद अलग-अलग वेबसाइट दिखाई देती है, परंतु चैट जीपीटी पर ऐसा नहीं होता है। आपको यहां पर डायरेक्ट संबंधित रिजल्ट पर ले जाता है। इसमें एक सुविधा और भी है की इसके द्वारा दिए गये जवाब से आप संतुष्ट नहीं है तो आप इससे बोल सकते है और फिर ये उसे आपको और भी अपडेट करके अच्छे से जवाब देता है।

2. गूगल पर सर्च करने पर जो भी जानकारी मिलती है हमें उसका सोर्स पता होता है जिससे हमको जानकारी की वास्तविकता पता चल जाती है, जबकि चैट जीपीटी पर जो भी जानकारी मिलती है हमें उसका सोर्स नहीं पता होता है जिससे हमको जानकारी की वास्तविकता का पता नहीं चल पाता है इससे लोग गुमराह भी हो सकते हैं, यही चैट जीपीटी की कमजोरी है।

3. वर्तमान के ऐसे कई सवाल है जिसका जवाब आपको यहां पर नहीं मिलेगा इसकी ट्रेनिंग साल 2022 के आरंभ में ही खत्म हो चुकी है। ऐसे में साल 2021 के पश्चात की जो घटना है उसके बारे में जानकारी अभी चैट जीपीटी पर उपलब्ध नहीं है। जबकि गूगल के पास तत्कालीन जानकारी उपलब्ध रहती है।

4. वर्तमान में गूगल भी अपने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस चैट बोट बार्ड पर तेजी से काम कर रहा है ओर यह कहा जा रहा है यह और लेटेस्ट होगा एवं तत्कालीन जानकारी भी उपलब्ध करा पायेगा एवं इतना यूजर फ्रेन्ड्ली होगा कि 9 साल का बच्चा भी नासा द्वारा की गई खोजों को आसानी से समझ पायेगा। जबकि माइक्रोसॉफ्ट चैट जीपीटी चैट बोट को अपने बिंग सर्च इंजन से जोड़ने वाला है और चैट जीपीटी ने चैट जीपीटी 4 लांच किया है। इसमें यह वर्ड के साथ इमेज को भी हैंडल कर सकता है एवं और ज्यादा सही जवाब प्रदान करेगा।

चैट जीपीटी चैट बोट का उपयोग बैंकिंग में :

चैट जीपीटी एक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस चैट बोट है। इसका उपयोग भविष्य मे मोबाइल बैंकिंग एप से जोड़ के ग्राहकों को 24*7 बैंकिंग सेवाएं प्रदान करने में, उनकी आवश्यकता समझने में, आवश्यकता के अनुसार सुविधा प्रदान करने में, ग्राहकों को बैंकिंग उत्पादों की जानकारी प्रदान करने में, वित्तीय सलाह देने में एवं अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में हो सकता है।

भविष्य में माइक्रोसॉफ्ट कंपनी इसको माइक्रोसॉफ्ट 365 से जोड़ने वाला है, इससे वह आने वाले मेल का जवाब खुद दे सकता है।

क्या चैट जीपीटी से जॉब में कमी आएगी :

तकनीकी की बात की जाए तो ऐसी कई तकनीकी आ चुकी है जिसकी वजह से समय-समय पर इंसानों को अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ा है। इसीलिए कई लोग इस बात को लेकर भी चिंतित हैं कि चैट जीपीटी की वजह से कई लोगों को अपनी नौकरी गंवानी पड़ सकती है। मुख्यत: सामान्य सॉफ्टवेयर कोड जो प्रोगामिंग में प्रयुक्त होते हैं वह चैट जीपीटी पर आसानी से मिल जाते हैं, इससे प्रोगामिंग और आसान हो जायेगी और प्रोग्रामर की जॉब में कमी आ सकती है।

हालांकि इसके द्वारा जो जवाब उपलब्ध करवाएं जाते हैं वह शत प्रतिशत सही नहीं होते हैं हो सकता है कि आने वाले समय में चैट जीपीटी की टीम इस पर काफी मेहनत के साथ काम करे और इसे नवीनतम तकनीकी के साथ एडवांस बनाने का प्रयास करे। ऐसी अवस्था में यह काफी लोगों की नौकरी को खत्म भी कर सकता है। अगर इसे लगातार डेवलप किया जाता रहता है तो इसकी वजह से ऐसी नौकरी खत्म हो सकती है जिसमें सवाल-जवाब से संबंधित कामकाज होते हैं, जैसे कि कस्टमर केयर, कोचिंग पढ़ाने वाले टीचर इत्यादि।

आलेख

भारत की जी20 अध्यक्षता के निहितार्थ

प्रकाश माली
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, मथुरा

प्रस्तावना :

हाल ही में भारत को विश्व के सर्वाधिक महत्वपूर्ण देशों के समूह - जी20 की अध्यक्षता मिलना चर्चाओं में रहा है। भारत को इंडोनेशिया से जी-20 की अध्यक्षता स्थानांतरित हुई है। भारत की आजादी के अमृतकाल में जी20 की अध्यक्षता ने देश को एक नई ऊर्जा और उत्साह से भर दिया है। जी-20 की स्थापना एशियाई वित्तीय संकट-1997-98 के बाद, अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था और वित्तीय स्थिरता के बारे में विचार-विमर्श करने के लिए विश्व की सर्वाधिक महत्वपूर्ण औद्योगिक और विकसित अर्थव्यवस्था वाले देशों के वित्त-मंत्रियों और उनके केंद्रीय बैंकों के गवर्नरों के अनौपचारिक मंच के रूप में वर्ष 1999 में हुई। परंतु वर्ष 2007-08 और 2008-09 के वैश्विक वित्तीय संकट के बाद यह जरूरी हो गया था कि ऐसे संकटों के दौरान सदस्य देशों के बीच आपसी समन्वय सर्वोच्च स्तर पर ही संभव हो सकता है। अतः जी-20 को सभी देशों के राष्ट्राध्यक्षों एवं राष्ट्र-प्रमुखों के स्तर का संगठन बना दिया गया। तब से जी-20 के सदस्य देशों के राष्ट्राध्यक्ष नियमित तौर पर मिल रहे हैं और अब जी-20 अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग का एक महत्वपूर्ण मंच बन गया है।

जी20 का संक्षिप्त परिचय :

जी20 के सदस्य देशों में-अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया, कोरिया गणराज्य, मेक्सिको, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, तुर्की, यू.के. और संयुक्त राज्य अमेरिका सहित कुल 19 देश शामिल है। जी20 की महत्ता इस बात से जाहिर होती है कि इसके सदस्य-देश विश्व की कुल जीडीपी के 85%, कुल व्यापार का 75% और विश्व की कुल जनसंख्या के दो-तिहाई हिस्से का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस प्रकार जी20 अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण संगठन है, जो सभी अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक मुद्दों के समाधान और वैश्विक-व्यवस्था को आकार देने में अहम भूमिका निभाता है। जी20 के एजेंडे में पहले सिर्फ महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक मुद्दे ही हुआ करते थे, लेकिन अब अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, जलवायु परिवर्तन, सतत विकास, स्वास्थ, ऊर्जा, पर्यावरण और भ्रष्टाचार आदि सहित वे सभी महत्वपूर्ण समसामयिक मुद्दे भी जी20 के एजेंडे के भाग होते हैं, जो संपूर्ण विश्व-विकास और मानवता को प्रभावित करते हैं।

जी-20 की कार्यप्रणाली :

भारत की जी20 की अध्यक्षता के निहितार्थों पर विस्तृत चर्चा करने से पूर्व जी20 के तहत आयोजित होने वाली बैठकों और जी20 की कार्यप्रणाली पर विचार-विमर्श कर लेना समीचीन होगा। जी20 की अध्यक्षता सभी सदस्य देशों को बारी-बारी से मिलती हैं। जी20 की अध्यक्षता इस मायने में भी महत्वपूर्ण होती है कि वैश्विक अर्थव्यवस्था और अंतर्राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर सदस्य देशों को एक साथ लाना और आपसी विचार-विमर्श के बाद, अंतर्राष्ट्रीय-सहयोग हेतु किसी निर्णय पर पहुंचने की जिम्मेदारी जी20 के अध्यक्ष देश की होती है। अतः जी20 के अध्यक्ष देश के पास अपने नेतृत्व और दूरदर्शिता से वैश्विक मुद्दों और विश्व राजनीति पर प्रभाव डालने का महत्वपूर्ण अवसर होता है।

भारत 01 दिसंबर, 2022 से 30 नवंबर, 2023 तक जी20 की अध्यक्षता करेगा। वर्ष 2022 में इंडोनेशिया जी20 का अध्यक्ष था। जबकि वर्ष 2023 व 2024 में क्रमशः भारत और ब्राजील जी20 की अध्यता करेंगे। जी20 का कोई सचिवालय नहीं होता है। जी20 के भूतपूर्व, वर्तमान और भावी अध्यक्ष मिलकर एक 'तिकड़ी' (ट्रॉइका) बनाते हैं। भारत की जी20 अध्यक्षता के दौरान यही तिकड़ी (इंडोनेशिया-भारत-ब्राजील) मिलकर जी20 की बैठकों में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करेगी।

डेवलपमेंट वर्किंग-ग्रुप (DWG) :- डेवलपमेंट वर्किंग-ग्रुप कार्यप्रणाली का अहम अंग होते हैं। डेवलपमेंट वर्किंग-ग्रुप की बैठकों का उद्देश्य विकासशील देशों (DCs), कम विकसित देशों (Lcs) तथा द्वीपीय देशों (ICs) और छोटे द्वीपीय विकासशील राष्ट्रों/ देशों (SIDS) में विकास संबंधी मुद्दों पर विचार-विमर्श करना है। यह एक ऐसा मंच है जिस पर जी20 के देश मिलते हैं और बहुपक्षीयवाद को समर्थन देते हुए आर्थिक संवृद्धि को उन्नत करने हेतु समाधान तलाशते हैं। विभिन्न क्षेत्रों में विकास के लक्ष्य निर्धारित करते हैं और सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु रोड मैप तैयार करते हैं।

जी20 के अंतर्गत होने वाली विभिन्न बैठकों में वर्ष भर के दौरान दो समांतर स्तरों पर चर्चाएं एवं आपसी विचार-विमर्श किया जाता है। ये दो समांतर स्तर हैं: 1.वित्तीय स्तर और 2. शेरपा-स्तर।

1. वित्तीय-स्तर :- वित्तीय-स्तर का नेतृत्व सदस्य देशों के वित्त मंत्री और उनके केंद्रीय बैंकों के गर्वनर करते हैं। ये सभी अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक मुद्दों पर अपने-अपने देश का प्रतिनिधित्व करते हैं। वर्ष के दौरान इस प्रकार की चार बैठकें आयोजित की जाती हैं, जिनमें से दो बैठके विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की बैठकों के साथ आयोजित होती हैं। इन बैठकों में राजस्व और मौद्रिक नीतियों से संबंधित मुद्दे-जैसे- वैश्विक अर्थव्यवस्था, आधारभूत संरचना, वित्तीय-विनियमन, वित्तीय समावेशन, अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय-व्यवस्था और अंतर्राष्ट्रीय कराधान आदि, चर्चाओं के केंद्र में होते हैं। इस दौरान निम्नलिखित कार्यबलों(वर्किंग-ग्रुप्स) की बैठकें आयोजित की जाती हैं:-

1. फ्रेमवर्क वर्किंग-ग्रुप
2. इंटरनेशन फाइनेंशियल आर्किटेक्चर वर्किंग-ग्रुप
3. इंफ्रास्ट्रक्चर वर्किंग-ग्रुप
4. सस्टेनेबल फाइनेंस वर्किंग-ग्रुप
5. ग्लोबल पार्टरनरशिप फॉर फाइनेंन्शियल इंक्लुजन
6. ज्वाइंट फाइनेंस एंड हेल्थ टॉस्क फोर्स
7. इंटरनेशनल टेक्सेसन मामले
8. फाइनेंन्शियल मामले

2. शेरपा-स्तर: शेरपा, संबंधित सदस्य देश के राष्ट्राध्यक्ष द्वारा नामित प्रतिनिधि / दूत होते हैं, जो शेरपा- स्तर पर होने वाली बैठकों में संबंधित देश का प्रतिनिधित्व करते हैं। शेरपा-स्तर पर आयोजित होने वाली बैठकों के केंद्र में सामाजिक-आर्थिक मुद्दे-जैसे-कृषि,

भ्रष्टाचार-निरोध, जलवायु, डिजिटल अर्थव्यवस्था, शिक्षा, रोजगार, पर्यावरण, स्वास्थ्य, पर्यटन, व्यापार और निवेश आदि होते हैं। शेरपा-स्तर पर संबंधित कार्यबलों (वर्किंग-ग्रुपों) की बैठकें आयोजित की जाती हैं। इस स्तर पर आयोजित होने वाली बैठकों के संबंधित वर्किंग-ग्रुप निम्नलिखित हैं:-

1. एग्रीकल्चर वर्किंग	-	ग्रुप
2. एंटी-करप्शन वर्किंग	-	ग्रुप
3. कल्चरल वर्किंग	-	ग्रुप
4. डवलपमेंट वर्किंग	-	ग्रुप
5. डिजिटल इकॉनॉमी वर्किंग	-	ग्रुप
6. डिजास्टर रिस्क रिडक्शन वर्किंग	-	ग्रुप
7. एज्यूकेशन वर्किंग	-	ग्रुप
8. एम्प्लॉयमेंट वर्किंग	-	ग्रुप
9. एनर्जी ट्रांजीशन वर्किंग	-	ग्रुप
10. एंवायरन्मेंट एंड क्लाइमेट सस्टेनेबिलिटी वर्किंग	-	ग्रुप
11. हेल्थ वर्किंग	-	ग्रुप
12. टूरिज्म वर्किंग	-	ग्रुप
13. ट्रेड एवं इंवेस्टमेंट वर्किंग	-	ग्रुप आदि

उपरोक्त दोनों स्तरों के अतिरिक्त, जी20 की दो महत्वपूर्ण पहलों (इनिशिएटिव्स) एवं पारस्परिक-समूहों (इंगेजमेंट-ग्रुप्स) की भी बैठकें आयोजित की जाती हैं। जी20 की ये दो महत्वपूर्ण पहलें इस प्रकार हैं :

I. रिसर्च एंड इनोवेशन इनिशिएटिव गैदरिंग (आरआईआईजी):- इसका उद्देश्य जी20 के सदस्य देशों के बीच शोध और नवाचार के क्षेत्र में सहयोग को बढ़ावा देना और सदस्य देशों के विज्ञान, तकनीकी और नवाचार विशेषज्ञों को एक मंच पर लाना है।

II. **जी20 एम्पॉवर:–** 'द जी20 एलायंस फॉर द एम्पावरमेंट एंड प्रोग्रेसन ऑफ वीमेंस इकॉनोमिक रिप्रजेंटेशन'– (जी20 एम्पावर) नामक पहल की शुरुआत वर्ष 2019 में 'ओसाका शिखर बैठक' के दौरान की गई थी। इसका उद्देश्य निजी क्षेत्र में महिलाओं के नेतृत्व और सशक्तीकरण को बढ़ावा देना है।

पारस्परिक समूह (इंगेजमेंट ग्रुप):– जी20 के इगेजमेंट ग्रुपों में निम्न ग्रुप शामिल हैं:– बिजनेस20, सिविल20, लेबर20, पार्लियामेंट 20, साइंस20, साई20, स्टॉर्टप20, थिंक20, अर्बन20, वीमेन20 और यूथ20 आदि।

अपनी जी20 अध्यक्षता के पूरे एक साल के दौरान जी20 के एजेंडे के अनुसार विभिन्न बैठकें आयोजित की जाती हैं और अंत में राष्ट्राध्यक्षों की शीर्ष बैठक आयोजित की जाती है, जिसमें इन दोनों स्तरों पर हुई बैठकों, चर्चाओं और विचार–विमर्श के बाद लिए गये निर्णयों और सहमतियों पर अंतिम मुहर लगाई जाती है।

भारत की जी20 अध्यक्षता के निहितार्थ : –

जी20 का लोगो और थीम : भारतीय जीवन–मूल्यों का प्रतीक : –

भारत ने 1 दिसंबर, 2022 से जी20 की अध्यक्षता संभाली है। भारत की जी20 की अध्यक्षता की थीम है –**'वसुधैव कुटुंबकम और 'एक पृथ्वी–एक परिवार–एक भविष्य'।** इसके लोगो में G20 के बाद कमल के पुष्प के ऊपर विराजमान 'पृथ्वी' का चित्र अंकित हैं और उसके नीचे देवनागरी लिपि में 'भारत–2023' लिखा हुआ है। इसके लोगो का रंग – केसरिया, सफेद, हरा और नीला है, जो भारत के राष्ट्रीय ध्वज– 'तिरंगे' के रंग से प्रेरित है। इस लोगो पर अंकित भारत का राष्ट्रीय पुष्प 'कमल' चुनौतियों के बावजूद उन्नति करते रहने' का प्रतीक है, जबकि 'पृथ्वी' का चित्र– भारत की 'संपूर्ण पृथ्वी को एक परिवार' मानने की भावना का प्रतीक है।

भारत की जी20 अध्यक्षता की थीम – **'वसुधैव कुटुंबकम्– एक पृथ्वी–एक परिवार–एक भविष्य'** संस्कृत में लिखित 'महा उपनिषद' से ली गई है। यह थीम– पृथ्वी और इस अनंत ब्रह्माण्ड में मानव, पशु–पक्षी, पेड़–पौधों और सूक्ष्म–जीवों के, जीवन के महत्व और उनकी परस्पर अन्योन्याश्रितता, सहजीविता, और परस्पर–निर्भरता का प्रतीक है।

इसके अतिरिक्त यह थीम LIFE (Lifestyle For Environment) के महत्व को भी इंगित करती है। अर्थात हम व्यक्तिगत स्तर पर एवं राष्ट्र के स्तर पर ऐसी आदतें, व्यवहार और जीवन–शैली अपनाएं, जो पर्यावरण संरक्षणीय हों, अर्थात जो पर्यावरण के अनुकूल हों। उनसे प्रेरित होकर सारा विश्व, उसी के अनुरूप व्यवहार करे और हम आने वाली पीढ़ियों को एक स्वच्छ, सुंदर, हरित और रहने योग्य पर्यावरण दे सकें।

जी20 का लोगो और थीम – दोनों मिलकर विश्व को भारत का यह संदेश बखूबी रूप से देते हैं कि 'भारत एक सतत, समावेशी, और न्यायसंगत रूप से विश्व के सभी देशों की समान उन्नति और संवृद्धि की कामना करता है।' ये दोनों– आसपास के पारिस्थितिकी–तंत्र के साथ, संपूर्ण सामंजस्य में रहने के, भारत के अद्वितीय दृष्टिकोण का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। भारत जब अपनी आजादी का 'अमृत महोत्सव' मना रहा है और मानव मात्र के कल्याण को मूल में रखते हुए, एक समावेशी, समृद्ध और विकसित भारत की परिकल्पना के साथ, अपनी आजादी के शताब्दी समारोह मनाने की, शेष 25 वर्षों की यात्रा की ओर प्रयाण कर रहा है, तब जी20 की अध्यक्षता मिलने से, भारत के नेतृत्व को एक नया आत्मविश्वास मिल रहा है।

यदि हम आज के वैश्विक–परिदृश्य पर दृष्टिपात करें– तो भारत को जी20 की अध्यक्षता एक ऐसे विकट समय में मिली है, जब एक ओर विश्व कोविड –19 जैसी महामारी की निर्मम मार से उभरने की कोशिश कर रहा है, तो दूसरी ओर वह रूस–यूक्रेन युद्ध से उत्पन्न हालातों का सामना कर रहा है। इस युद्ध के कारण विश्व–शांति खतरे में पड़ गई है। साथ ही विश्व–शांति की रक्षा के लिए जिम्मेदार संस्था– संयुक्त राष्ट्र संघ (यूएन) की भूमिका पर भी सवाल उठ रहे हैं। रूस – यूक्रेन युद्ध ने छोटे देशों को अपनी संप्रभुता और अस्तित्व के प्रति आशंकित कर दिया है। बड़े देशों से अपनी सुरक्षा के प्रति आशंकित ये देश, अब अपनी सुरक्षा के लिए हथियारों के संग्रह और परमाणु–शक्ति हासिल करने की होड़ में शामिल होने पर विचार कर सकते हैं। रूस–यूक्रेन युद्ध के कारण विश्व तीन खेमों में विभाजित हो गया है। एक ओर जहाँ अमेरिका, यूरोपीय यूनियन और ब्रिटेन जैसे देश यूक्रेन के पक्ष में हैं, तो चीन और बेलारूस जैसे देश रूस के पक्ष में खड़े हुए हैं। वहीं तीसरा खेमा भारत जैसे देशों का है, जो तटस्थ रहकर अपनी भूमिका निभा रहे हैं। अमेरिका के नेतृत्व में नाटो यूक्रेन को हथियार

उपलब्ध करा रहा है। इन हालतों में एक छोटी सी चिंगारी भी विश्व को परमाणु-युद्ध की भीषण विभिषिका में झोंक सकती है। इस युद्ध के कारण विश्व के शक्ति-संतुलन में परिवर्तन आ सकता है। 24 फरवरी, 2022 को रूस ने यूक्रेन पर आक्रमण किया था, तब से लेकर अब तक, एक वर्ष से अधिक का समय गुजर चुका है, लेकिन यह युद्ध थमने का नाम नही ले रहा है। इस युद्ध को रोकने के लिए सारी कूटनीतिक कोशिशें नाकाम होती दिखाई दे रही है। ऐसे में विश्व, रूस के साथ भारत के प्रगाढ़ संबंधों को देखते हुए, इस युद्ध को रोकने में भारत की भूमिका को आशा भरी निगाहों से देख रहा है। इस युद्ध के कारण विश्व की आपूर्ति-श्रृंखला बहुत बुरी तरह से प्रभावित हो गई है, फलस्वरूप विश्व के कई देश महंगाई की मार से जूझ रहे हैं। यूरोप सहित विश्व के अनेक देशों में ऊर्जा- संकट पैदा हो गया है। ऐसे समय में जी20 की अध्यक्षता के दौरान भारत अपनी नेतृत्व क्षमता का परिचय देते हुए इन वैश्विक समस्याओं के हल में अपनी भूमिका निभा सकता है।

अपनी जी20 की अध्यक्षता के दौरान भारत पूरे देश के 50 शहरों में, 32 अलग-अलग कार्य-क्षेत्रों में, जी20 के तहत लगभग 200 बैठकों की अध्यक्षता करेगा। इस दौरान भारत के पास सभी प्रतिनिधिमंडलों को अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और भारतीयता को प्रदर्शित करने का अवसर मिलेगा। भारत, विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। यह विश्व की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। जनसंख्या की दृष्टि से भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा देश है। जनांकिकीय-लाभ (डेमोग्राफिक डिविडेंड) के मामले में भारत दुनिया का सबसे युवा देश भी है। भारत शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और बहुध्रुवीय विश्व-व्यवस्था का पक्षधर है। एक राष्ट्र के रूप में भारत ने आजादी से लेकर अब तक -विभाजन, युद्ध, विकास और उन्नत्ति की यात्रा के कई सोपान तय किये हैं। भारत के लोकतांत्रिक मूल्यों और बहुलतावादी समाज से विश्व बहुत कुछ सीख सकता है।

भारत ने अपनी जी20 के अध्यक्षता-काल की शुरुआत अनेक सांस्कृतिक गतिविधियों के आयोजन के साथ की है। इन गतिविधियों के अंतर्गत-अनेक जन-भागीदारी संबंधी गतिविधियाँ, और विश्वविद्यालयों में विविध कार्यक्रमों का आयोजन शामिल है। जी20 के आयोजनों को एक उत्सव का रूप देने के लिए भारत ने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) विभाग के 100 महत्वपूर्ण स्मारकों को जी20 के लोगों और थीम से सुसज्जित किया है। जी20 के सदस्य देशों के प्रतिनिधियों को नागालैंड के 'वोम्बिल फेस्टीवल' में उत्तर-पूर्व की संस्कृति से रुबरु करवाया गया है। सैंड आर्टिस्ट सुदर्शन

पटनायक ने उड़ीसा में पुरी के बीच पर जी20 के लोगो एवं थीम को सैंड (रेत) से उकेरा है। इसके अलावा अपनी अध्यक्षता की पूरी एक वर्ष की अवधि के दौरान भारत के विभिन्न शहरों में जी20 के विभिन्न कार्यबलों (वर्किंग-ग्रुप्स) की बैठकों के दौरान अनेक युवा-गतिविधियाँ, सांस्कृतिक-कार्यक्रम और भ्रमण आदि संबंधी कार्यक्रमों का आयोजित निर्धारित है। इन सभी गतिविधियों और कार्यक्रमों के माध्यम से भारत को जी20 के देशों को अपनी भाषाई और सांस्कृतिक-विविधता, प्राकृतिक-सुषमा, ऐतिहासिक-भव्यता और जीवन-मूल्यों और प्रत्येक प्रांत की अलग-अलग जीवन-शैली और परंपराओं को प्रदर्शित करने का सुअवसर मिलेगा। इस दौरान आयोजित होने वाली शैक्षणिक और सांस्कृतिक गतिविधियों से सदस्य देशों को एक-दूसरे देश को जानने का मौका मिलेगा। इससे भारत के पर्यटन क्षेत्र को भी लाभ मिलेगा।

भारत में जी20 की औपचारिक शुरुआत के बाद पहली शेरपा-स्तर की बैठक दिनांक 4 से 7 दिसंबर, 2022 तक उदयपुर, राजस्थान में आयोजित की गई। इसी के साथ भारत में जी20 की बैठकों की शुरुआत हो गई। इसके बाद 13 से 16 दिसंबर, 2022 को जी20 डेवलपमेंट वर्किंग -ग्रुप की पहली बैठक, मुंबई में आयोजित की गई। 1 से 15 दिसंबर, 2022 को बेंगलूरु में वित्त मंत्रियों एवं केंद्रीय बैंकों के उप-प्रमुखों की बैठक आयोजित की गई। दिनांक 16 से 17 दिसंबर, 2022 को बेंगलूरु में 'फ्रेमवर्क वर्किंग-ग्रुप' की पहली बैठक आयोजित की गई। इसी तरह अपनी जी20 अध्यक्षता के दौरान

पूरे साल भारत के अलग-अलग शहरों में जी20 के विभिन्न कार्यबलों की बैठकें आयोजित होती रहेंगी, जो जी20 के 'शिखर-सम्मेलन' तक चलेंगी।

यह भारत की नेतृत्व क्षमता का ही परिणाम है कि भारत की अध्यक्षता के दौरान बांग्लादेश, मिश्र, मॉरीशस, नीदरलैण्ड, नाइजीरिया, ओमान, सिंगापुर, स्पेन और यूएई, जी20 की बैठकों में आमंत्रित सदस्य के रूप में भाग ले रहे हैं। भारत की जी20 की अध्यक्षता में होने वाली विभिन्न बैठकों में अनेक अंतर्राष्ट्रीय संगठन भी विशेष आमंत्रित संगठनों के रूप में शिरकत कर रहे हैं। इन संगठनों के नाम हैं- संयुक्त राष्ट्र संघ, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक, विश्व स्वास्थ्य संगठन, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन, एफएसबी, ओईसीडी, एयू चेयर, नेपाड चेयर, एशियान चेयर, एशियाई विकास बैंक, आईएसए और सीडीआरआई आदि। भारत जी20 के इतने बड़े और व्यापक मंच पर अपनी वैश्विक नेतृत्व-क्षमता का प्रदर्शन कर सकता है।

जी20 अध्यक्षता के दौरान भारत की प्राथमिकताएं :

1. हरित विकास, जलवायु-वित्त और लाइफ (LiFE) : भारत की जी20 अध्यक्षता के दौरान पहली प्राथमिकता जलवायु परिवर्तन के कारण पैदा हुए अस्तित्व के संकट से निपटने की होगी। भारत इस मंच के माध्यम से सदस्य देशों के साथ विचार-विमर्श करते हुए, जलवायु परिवर्तन से निपटने के उपायों पर सहमति बनाने और एक कारगर रणनीति तय करने का प्रयास करेगा। इस दौरान भारत मुख्यतः जलवायु-वित्त और तकनीक पर भी ध्यान केंद्रित करेगा। भारत, विश्व के विकासशील देशों के लिए ऊर्जा-हस्तांतरण (एनर्जी ट्रांजीशन) के लिए काम करना चाहेगा। भारत ने विश्व को व्यवहार आधारित एक नई अवधारणा दी है, जिसे LiFE (Lifestyle For Environment) का नाम दिया गया है। भारत विश्व को एक ऐसी जीवन-शैली अपनाने के लिए प्रेरित कर रहा है, जो पर्यावरण के अनुकूल हो। भारत की यह अवधारणा उसकी प्राचीन संस्कृति, जीवन-पद्धति और प्रकृति के साथ उसके साहचर्य से प्रेरित है और भारत की जी20 अध्यक्षता की थीम - वसुधैव कुटुंबकम को सार्थक करती है।

2. तीव्र, समावेशी और सतत संवृद्धि : भारत की जी20 अध्यक्षता की दूसरी प्राथमिकता है कि वह समूह के देशों को विश्व की तीव्र, समावेशी और सतत संवृद्धि के लिए एकजुट होकर काम करने हेतु प्रेरित करे। इस हेतु भारत अवसंरचनात्मक परिवर्तन लाना चाहता है। भारत चाहता है कि विश्व व्यापार से एमएसएमई को जोड़ा जाए और व्यापार की भावना को 'सभी की संवृद्धि' के रूप में देखा जाए। भारत श्रमिक- अधिकारों एवं श्रमिकों के कल्याण के लिए काम करना चाहेगा। भारत, विश्व में कुशल-मानव संसाधन के अंतर को कम करने के लिए कौशल-विकास पर जोर देगा और समावेशी कृषि-मूल्य श्रृंखला (एग्रीकल्चर वैल्यू चेन) और भोजन-प्रणाली (फूड-सिस्टम) के लिए मिलकर काम करने हेतु सदस्य देशों को प्रेरित करेगा।

3. सतत विकास-लक्ष्यों(एसडीजी) को हासिल करना :- भारत जी20 के 'एजेंडे-2030' के अनुरूप सतत विकास के लक्ष्यों को हासिल करने की रणनीति बनाने के लिए सदस्य देशों के साथ विचार-विमर्श करेगा, ताकि सभी देश निर्धारित समय-सीमा के भीतर सतत विकास-लक्ष्यों को हासिल कर सकें।

4. तकनीकी हस्तांतरण और डिजिटल-सार्वजनिक अवसंरचना-निर्माण :- भारत कृषि और शिक्षा सहित विभिन्न क्षेत्रों में डिजिटल-सार्वजनिक अवसंरचना-निर्माण, वित्तीय समावेशन और तकनीक-आधारित विकास के लिए काम करना चाहेगा। भारत तकनीकी के प्रति मानव-कल्याण केंद्रित दृष्टिकोण अपनाते हुए सदस्य देशों के साथ मिलकर विमर्श करेगा और एक तार्किक निर्णय पर पहुंचने में अपनी भूमिका का निर्वहन करेगा। जी20 के सदस्य देश, कोविड-19 के दौर में भारत में यूपीआई के व्यापक उपयोग से बहुत कुछ सीख सकते हैं।

5. 21वीं शताब्दी के लिए बहुपक्षीय संस्थाओं के निर्माण के लिए प्रयास करना : भारत जी20 की चर्चाओं में 21वीं शताब्दी की चुनौतियों से निपटने के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं में उचित और न्यायसंगत प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए काम करने पर जोर देगा। भारत उत्तरदायित्वपूर्ण, समावेशी, समानता आधारित प्रतिनिधित्व और बहुध्रुवीय अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था का पक्षधर है।

6. महिलाओं के नेतृत्व में विकास पर जोर :- भारत जी20 की चर्चाओं में समावेशी संवृद्धि और विकास के लिए महिला-सशक्तिकरण और महिला-प्रतिनिधित्व पर जोर देगा। भारत सतत विकास-लक्ष्यों (एसडीजी) को हासिल करने और सामाजिक-आर्थिक विकास को गति देने के लिए महिलाओं की भूमिका को महत्वपूर्ण मानता है। अतः 'जी20 एम्पॉवर' समूह की बैठकों में महिलाओं की भागीदारी को चर्चाओं के केंद्र में रखना चाहेगा।

स्पेस इकॉनोमी लीडर्स मीटिंग (एसईएलएम) :- ग्लोबल इकॉनोमी का स्वरूप तय करने में अंतरिक्ष की भूमिका पर विचार-विमर्श करने के लिए भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, इसरो का अंतरिक्ष विभाग, भारत की जी20 अध्यक्षता में 'स्पेस इकॉनोमी लीडर्स

मीटिंग-(SELM) के चौथे संस्करण का आयोजन कर रहा है। इससे भारत, अंतरिक्ष-अनुसंधान के क्षेत्र में एक वैश्विक-नीति बनाने पर सहमति तक पहुंचने का प्रयास करेगा। आज अंतरिक्ष, वैश्विक-होड़ का नया युद्ध-क्षेत्र बन गया है। अंतरिक्ष में सेटेलाइटों का कचरा बढ़ता जा रहा है। साथ ही अंतरिक्ष के व्यवसायीकरण के संबंध में नये वैश्विक नियम बनाने की जरूरत महसूस की जा रही है। भारत इस पहल से अंतरिक्ष के क्षेत्र में अपनी विशेषज्ञता को प्रदर्शित कर सकता है। अपनी जी20 की अध्यक्षता के दौरान भारत इसी प्रकार के विविध मंचों पर अपनी सशक्त भूमिका से अमिट छाप छोड़ सकता है।

उपसंहार :- निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारत की जी20 की अध्यक्षता, आजादी के अमृत काल में भारत के लिए एक स्वर्णिम अवसर लेकर आई है। भारत को इस महत्वपूर्ण वैश्विक-मंच पर अपने राजनैतिक नेतृत्व-कौशल को प्रदर्शित करने का अवसर तो मिलेगा ही, साथ ही विभिन्न क्षेत्रों में भारत की विशेज्ञता और कौशल को दिखाने और दूसरे देशों से नये कौशल और विशेज्ञताएं सीखने का मौका भी मिलेगा। जी20 के 13 विभिन्न कार्यबलों की बैठकों, इनिशिएटिव्स और इंगेजमेंट्स में हुई चर्चाओं के माध्यम से अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लेने में भारत अपनी भूमिका निभा पायेगा। जी20 की बैठकों के माध्यम से भारत और सदस्य देशों के बीच विभिन्न क्षेत्रों में प्रगाढ़ता बढ़ेगी। सदस्य देशों के बीच शैक्षणिक-सांस्कृतिक-सामाजिक आदान-प्रदान से, परस्पर रूप से सभी को सीखने का अवसर मिलेगा। भारत आतंकवाद से ग्रसित देश रहा है।

भारत जी20 के सदस्य देशों को आतंकवाद से निपटने के बारे में बहुत कुछ सिखा सकता है। साथ ही आंतकवाद के बारे में वैश्विक-सहमति बनाने में मदद कर सकता है। जी20 के सदस्य देश डिजिटल भुगतानों के क्षेत्र में भारत के अनुभवों से सीख सकते हैं। भारत विश्व की सर्वाधिक तेज गति से उभरती हुई अर्थव्यवस्था और एक मजबूत सैन्य शक्ति भी है। अतः भारत सुरक्षित विश्व-व्यापार और हिंद-प्रशांत क्षेत्र सहित सभी अंतर्राष्ट्रीय समुद्री-व्यापार मार्गों के अबाध संचालन में अहम भूमिका निभा सकता है। आज की तात्कालिक आवश्यकता- रूस-यूक्रेन युद्ध को रोकने की है।

भारत इस दिशा में भी काम कर रहा है। उम्मीद की जानी चाहिए कि भारत, विश्व समुदाय के साथ मिलकर इस संकट का भी समाधान निकाल ही लेगा। रूस-यूक्रेन युद्ध से बाधित आपूर्ति-श्रृंखला को कायम रखने में भी भारत अहम भूमिका निभा सकता है। भारत के नेतृत्व में विश्व-सोलर एलायंस विश्व की ऊर्जा जरुरतों को पूरा करने के लिए काम कर रहा है। इस प्रकार भारत की जी20 की अध्यक्षता के अनेक निहित अर्थ हैं। संक्षेप में कहा जाए तो जी20 की अध्यक्षता के बाद वैश्विक मंच पर भारत की भूमिका में तीव्र गति से वृद्धि होगी।

अद्वैता

संपूर्ण महिला सशक्तिकरण के उद्देश्य की तरफ बढ़ते हुए हमारे केनरा बैंक ने मार्गदर्शी पहल अद्वैता की शुरुआत की है।'अद्वैत' की व्युत्पत्ति संस्कृत से है जिसका अर्थ है 'किसी से भी कम नहीं'। वह जो अतुलनीय है- बेमिसाल है, अद्वितीय है। हम अद्वैत हैं - भिन्न, अनोखे और अनुपम। यह प्रतीक-चिन्ह हमारा यथावत प्रतिनिधि है। अद्वैत का प्रतीक-चिन्ह केनरा बैंक के अंतर्गत है। इसका तात्पर्य है कि हम केनरा बैंक की छत्रछाया में हैं जो हमें आश्रय और सुरक्षा प्रदान करता है। इसके प्रतीक चिन्ह को ध्यान से देखें तो इसका नीला रंग जो कि समुद्र व आकाश का रंग होता है, यह शांति, स्थिरता, प्रेरणा, ज्ञान, स्वास्थ्य और गहराई का प्रतीक है तो वहीं यदि हम स्पेक्ट्रम को देखें तो उसके सभी रंगों में पीला रंग सबसे चमकीला होता है। यह खुशी, आशावादी, ज्ञान, रचनात्मकता, धूप और वसंत आदि का प्रतीक होता है तथा यह इंद्रधनुष रंगों से भरा, आकाश में दिखाई देने वाले रंगों का एक मेहराब है जो समावेशिता और विविधता का प्रतिनिधित्व करता है, तथा प्यार और दोस्ती की एक सर्वव्यापी छवि का प्रतीक है। यह अद्वैता की शुरुआत नारी शक्ति द्वारा बैंक के भविष्य को सुदृढ़ करने के लिए किया गया है। यह महिलाओं के समक्ष आने वाली अवरोधकों को दूर कर उन्हें उन्नति की दिशा की ओर मार्ग प्रशस्त करने का कार्य करता है, यह महिला केनराइट्स की वास्तविक समस्याओं का निराकरण कर उनकी प्रगति में आने वाली बाधाओं को दूर कर और उन्हें बैंक में पदानुक्रम सोपान में आगे बढ़ने के लिए अपेक्षित परामर्श, मार्गदर्शन, सलाह एवं कौशल विकास प्रदान करेगा जिससे कि वे बैंक को बेहतर बनाने में संपूर्ण रुप से योगदान दें सकें।

कविता

शक्ति स्वरूपा

अस्मिता द्विवेदी
अधिकारी
खुदरा आस्ति केंद्र, जबलपुर

पवन आवेग सी प्रबल
अग्नि ताप सी प्रखर
निरंतर सरिता सी बहने वाली
शक्ति स्वरूपा सृजन करने वाली।।

निर्भय जो हर मार्ग पर
सक्षम है जो हर कार्य में
मर्यादा की सीमा में रह कर
ऊंची उड़ान भरने वाली
शक्ति स्वरूपा सृजन करने वाली।।

आंचल में समेटे प्रेम अपार
आंखों में आंसू, हृदय विशाल
व्यक्तित्व में जिसके अनोखा राग
कोमल कंधे, मधुर आवाज
अमिट छाप बनाने वाली
शक्ति स्वरूपा सृजन करने वाली।।

कठिनाइयां वेणी में गूंथ कर
मुश्किलें आंचल में लपेट कर
छोटे छोटे कदम बढ़ा कर
हर मंजिल को पाने वाली
शक्ति स्वरूपा सृजन करने वाली।।

हर काम में गया उसको टोका
घर की दहलीज़ ने भी रोका
धीरज धर आगे बढ़ चली
मिलता गया जब भी मौका
सीख ही गई कंप्यूटर चलाना
बेलन-चिमटा पकड़ने वाली
शक्ति स्वरूपा सृजन करने वाली।।

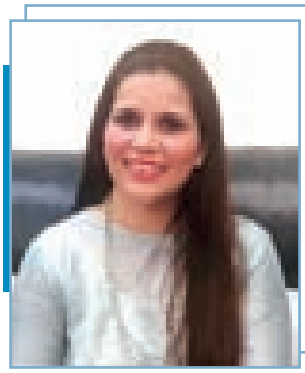

स्वाति पाण्डेय
वरिष्ठ प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता-1

कविता

गीत

सुरभित साँसों का अच्छा है,
सतत-सहज यह आना-जाना,
किन्तु मौत से भी बदतर है,
सपनों का अपने मर जाना,

जगती आँखों में भी अपनी,
सुंदर स्वप्न सजाकर रखना,
सारंगी पर स्वर जीवन का,
नियमित रोज बजाकर रखना,
चला-चली की सारी दुनिया,
कब जाने सब पड़े उठाना,

सुरभित साँसों का अच्छा है,
सतत सहज यह आना....

भाव-भावना अनुप्राणित कर,
आ अब नियम बदल दें यम का,
राग-रागिनी नव जीवन की,
साधें स्वर हम नव सरगम का,
स्वागत हो हर नूतन पल का,
फिर पीछे का क्या पछताना,

सुरभित साँसों का अच्छा है,
सतत सहज यह आना.....

आह जगाती पीड़ाएं फिर,
दंभ न भर लें आधिपत्य का,
आलंबन फिर मिले न उनको,
अर्थहीन इस अर्धसत्य का,
कर अवगाहन सुख-सरिता में,
व्यर्थ नहीं अब समय गंवाना,

सुरभित साँसों का अच्छा है,
सतत सहज यह आना.....

आलेख

क्रेडिट कार्ड पर कुछ अंतर्दृष्टि

निशीथ श्रीवास्तव
प्रबंधक (निरीक्षक)
राजकोट इकाई

क्रेडिट कार्ड का परिचय

क्रेडिट कार्ड एक भुगतान कार्ड है जो आपको वस्तुओं और सेवाओं के लिए भुगतान करने के लिए पैसे उधार लेने की अनुमति देता है। क्रेडिट कार्ड बैंकों और अन्य वित्तीय संस्थानों द्वारा जारी किए जाते हैं। जब आप क्रेडिट कार्ड का उपयोग करते हैं, तब आप जारीकर्ता से पैसे उधार ले रहें होते हैं, जिसे आपको ब्याज़ के साथ वापस भुगतान करना होता हैं।

क्रेडिट कार्ड माल और सेवाओं के लिए भुगतान करने का एक सुविधाजनक तरीका है, और वे कई लाभ प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, वे आपके क्रेडिट स्कोर को बनाने में आपकी मदद कर सकते हैं, जो महत्वपूर्ण है यदि आप ऋण लेना चाहते हैं। वे कैश बैक, छूट या इनाम यात्रा मील जैसे पुरस्कार भी प्रदान करते हैं।

हालांकि, क्रेडिट कार्ड भी ऋण का स्रोत हो सकता है यदि ज़िम्मेदारी से उपयोग नहीं किया जाता है। यदि आप अपने क्रेडिट कार्ड पर बैलेंस रखते हैं, तो आपसे बकाया राशि पर ब्याज़ लिया जाएगा। यह जल्दी से लागू हो सकता है और आपको ऋण का भुगतान करना मुश्किल हो सकता है। इसके अतिरिक्त, यदि आप भुगतान करने से चूक जाते हैं या देर से भुगतान करते हैं, तो आपसे शुल्क लिया जा सकता है और आपके क्रेडिट स्कोर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

क्रेडिट कार्ड डेबिट कार्ड से कैसे अलग है

क्रेडिट कार्ड और डेबिट कार्ड के बीच मुख्य अंतर यह है कि एक, क्रेडिट कार्ड आपको खरीदारी करने के लिए पैसे उधार लेने की अनुमति देता है, जबकि एक डेबिट कार्ड आपको अपने बैंक खाते में पहले से मौजूद पैसे खर्च करने की अनुमति देता है। जब आप क्रेडिट कार्ड का उपयोग करते हैं, तो आप जारीकर्ता से पैसे उधार ले रहे हैं, जिसे आपको ब्याज़ के साथ वापस भुगतान करना होगा। जब आप डेबिट कार्ड का इस्तेमाल करते हैं तो पैसा सीधे आपके बैंक खाता से लिया जाता है।

क्रेडिट कार्ड उपयोग करने के लाभ

क्रेडिट कार्ड विभिन्न प्रकार के पुरस्कार और लाभ प्रदान करता है। इसके कुछ लाभ निम्नलिखित हैं:

1. क्रेडिट पर खरीदारी: क्रेडिट कार्ड धारक को क्रेडिट सीमा प्रदान किया जाता है, जो उन्हें क्रेडिट पर चीजें खरीदने की अनुमति देता है। क्रेडिट का उपयोग करने से आपको क्रेडिट इतिहास बनाने में मदद मिल सकता है, जो भविष्य में ऋण या क्रेडिट के लिए आवेदन करते समय महत्वपूर्ण हो सकता है। आपातकालीन स्थिति में क्रेडिट धन का एक तीव्र स्रोत हो सकता है। यदि आप हर महीने अपने क्रेडिट कार्ड बिल का पूरा और समय पर भुगतान करते हैं, तो आपसे आपकी खरीद पर ब्याज़ नहीं लिया जाएगा। यदि आपका क्रेडिट कार्ड खो जाता है या चोरी हो जाता है और आप इसे तुरंत रिपोर्ट करेंगे, तो आपको धोखाधड़ी के आरोपों के लिए उत्तरदायी नहीं ठहराया जाएगा। क्रेडिट कार्ड उपभोक्ताओं को संरक्षण प्रदान करता है और शुल्क विवाद होने की स्थिति में भुगतान को रोकने की क्षमता प्रदान करता है।

2. भुगतान की सबसे स्वीकृत विधि : क्रेडिट कार्ड व्यापक रूप से स्वीकार किए जाते हैं, जो उन्हें वस्तुओं और सेवाओं के लिए भुगतान करने का एक सुविधाजनक तरीका बनाता है। क्रेडिट कार्ड स्वीकार करना ग्राहकों के लिए खरीदारी करना आसान बनाकर बिक्री को बढ़ावा दे सकता है। क्रेडिट कार्ड स्वीकार करना व्यापारियों को उनके साथ खरीदारी करने के लिए ग्राहकों के लिए अधिक सुविधाजनक बनाकर प्रतिस्पर्धी लाभ दे सकता है। क्रेडिट कार्ड स्वीकार करने से व्यापारियों को एक बड़े ग्राहक आधार तक पहुंचने में मदद दिला सकता है जिससे ग्राहकों के लिए कहीं से भी खरीदारी करना संभव हो

जाता है। क्रेडिट कार्ड स्वीकार करने से धोखाधड़ी और चोरी का खतरा कम हो सकता है, क्योंकि व्यापारियों को बड़ी मात्रा में नकदी को संभालने के बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। क्रेडिट कार्ड उपयोग करने के लिए सुविधाजनक है, क्योंकि उनका उपयोग ऑनलाइन और व्यक्तिगत रूप से खरीदारी करने के लिए किया जा सकता है।

3. ब्याज़ मुक्त नकद निकासी : कुछ क्रेडिट कार्ड ब्याज़ मुक्त नकद निकासी प्रदान करते हैं, जो आपातकालीन स्थिति में उपयोगी हो सकते हैं। ब्याज़ मुक्त नकद निकासी कुछ क्रेडिट कार्ड द्वारा दिया जाने वाला एक लाभ है। इसका मतलब है कि आप एक निश्चित अवधि के लिए निकाली गई राशि पर ब्याज़ लिए बिना अपने क्रेडिट कार्ड का उपयोग करके एटीएम से नकदी निकाल सकते हैं। क्रेडिट कार्ड जारीकर्ता और कार्ड की शर्तों के आधार पर ब्याज़ मुक्त अवधि की लंबाई भिन्न हो सकती है।

हालांकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि क्रेडिट कार्ड का उपयोग करके नकद निकासी महंगी हो सकती है, क्योंकि वे अक्सर उच्च शुल्क और ब्याज़ दरों के साथ आते हैं। इसके अलावा, ब्याज़ मुक्त नकद निकासी केवल सीमित समय के लिए उपलब्ध हो सकती है, जिसके बाद आपसे निकाली गई राशि पर ब्याज़ लिया जाएगा।

यदि आप नकद निकासी के लिए क्रेडिट कार्ड का उपयोग करने पर विचार कर रहे हैं, तो नियमों और शर्तों को ध्यान से पढ़ना और कार्ड से जुड़े शुल्क और ब्याज़ दरों को समझना महत्वपूर्ण है।

4. असीमित इनाम अंक : कई क्रेडिट कार्ड उपयोग करके की गई प्रत्येक खरीद के लिए इनाम अंक प्रदान करते हैं। इन अंक को कई तरह के इनाम के लिए रिडीम किया जा सकता है, जैसे कैशबैक, डिस्काउंट और मुफ़्त मर्चेंडाइज। क्रेडिट कार्ड रिवॉर्ड पॉइंट क्रेडिट कार्ड कंपनियों के लिए कार्ड धारकों को अपने कार्ड का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करने का एक तरीका है। हर बार जब आप खरीदारी करने के लिए अपने क्रेडिट कार्ड का उपयोग करते हैं, तो आप इनाम अंक अर्जित करते हैं। क्रेडिट कार्ड जारीकर्ता और कार्ड की शर्तों के आधार पर प्रत्येक खरीद आपके द्वारा अर्जित अंकों की संख्या भिन्न हो सकती है।

एक बार जब आप पर्याप्त इनाम अंक जमा कर लेते हैं, तो आप उन्हें विभिन्न प्रकार के पुरस्कारों के लिए भुना सकते हैं, जैसे कैशबैक, उपहार कार्ड या मर्चेंडाइज। प्रत्येक इनाम बिंदु का मूल्य क्रेडिट कार्ड जारीकर्ता और कार्ड की शर्तों के आधार पर भी भिन्न हो सकता है।

यदि आप क्रेडिट कार्ड इनाम अंक अर्जित करने और भुनाने में रुचि रखते हैं, तो अपने क्रेडिट कार्ड के नियमों और शर्तों को ध्यान से पढ़ना और यह समझना महत्वपूर्ण है कि पुरस्कार कार्यक्रम कैसे काम करता है।

5. बीमा कवरेज : कुछ क्रेडिट कार्ड यात्रा, किराये की कारों और खरीद जैसी चीज़ों के लिए बीमा कवरेज प्रदान करते हैं। क्रेडिट कार्ड बीमा कवरेज एक प्रकार की बीमा है जिसे क्रेडिट कार्ड धारकों को विभिन्न देनदारों की एक श्रृंखला से बचाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। बीमा की प्रकृति के आधार पर, यह योजना अदत्त क्रेडिट कार्ड बिलों, धोखाधड़ी और अनाधिकृत लेनदेन और आपातकालीन यात्रा सहायता के लिए किए गए खर्चों से वित्तीय सुरक्षा प्रदान करती है।

क्रेडिट कार्ड बीमा योजना भी खरीद सुरक्षा प्रदान करते हैं, जो बीमित क्रेडिट कार्ड के माध्यम से खरीदे गए उत्पादों की किसी भी क्षति या चोरी के खिलाफ 180 दिनों तक वित्तीय सुरक्षा प्रदान करता है। कवर की राशि अलग-अलग योजना में अलग-अलग हो सकती है।

क्रेडिट कार्ड बीमा खरीदने से पहले कुछ बातों पर विचार करना महत्वपूर्ण है। आपको क्रेडिट कार्ड बीमा में लागू समावेशन को जानना चाहिए, क्रेडिट कार्ड बीमा पॉलिसी के विशिष्ट बहिष्करण के बारे में पूछताछ करनी चाहिए, और विशेष रूप से आवश्यक कवरेज के लिए भुगतान करना चाहिए। आपको अनुसंधान करना चाहिए और अपनी विशिष्ट आवश्यकताओं की पहचान करनी चाहिए।

6.यात्रा को आसान बनाएं: कुछ क्रेडिट कार्ड यात्रा पुरस्कार प्रदान करते हैं, जैसे मील या होटल पॉइंट, जिन्हें मुफ्त यात्रा के लिए भुनाया जा सकता है। यात्रा क्रेडिट कार्ड विभिन्न प्रकार के लाभ प्रदान करते हैं जो आपके यात्रा अनुभव को अधिक सुखद और कम महंगा बना सकते हैं। ट्रैवल क्रेडिट कार्ड के कुछ सामान्य लाभों में एयरपोर्ट

लाउंज एक्सेस, यात्रा पर पुरस्कार, हवाई मील के साथ कमाई और लाभ शामिल हैं। आप इन ट्रैवल कार्ड के इस्तेमाल से कई ट्रैवल वाउचर, डिस्काउंट, रिवॉर्ड और कैशबैक कमा सकते हैं। आपके लिए उपलब्ध विकल्पों की विस्तृत विविधता को देखते हुए, आपको अपनी आवश्यकताओं के आधार पर निर्णय लेना चाहिए।

अधिकांश क्रेडिट कार्ड आपके द्वारा की जाने वाली खरीदारी पर बीमा के साथ आते हैं, जो यात्रा करते समय उपयोगी हो सकते हैं। क्रेडिट कार्ड बीमा योजना अवैतनिक क्रेडिट कार्ड बिलों, धोखाधड़ी और अनाधिकृत लेनदेन और आपातकालीन यात्रा सहायता के लिए किए गए खर्चों से वित्तीय सुरक्षा प्रदान करते हैं।

7. डिस्काउंट और कैशबैक : कई क्रेडिट कार्ड का उपयोग, की गई खरीदारी पर छूट और कैशबैक प्रदान करते हैं। कैशबैक एक रोमांचक सुविधा है जो चीज़ों को खरीदते समय हमारे निर्णय लेने पर हावी होती है। यह एक प्रोत्साहन है जो उपयोगकर्ताओं को तब मिलता है जब वे खरीदारी करते हैं या बिलों का भुगतान करते हैं। क्रेडिट और डेबिट कार्ड कैशबैक फ़ंक्शन कार्ड धारक को पात्र खर्च (आमतौर पर 0.25–5%) का प्रतिशत प्राप्त करने की अनुमति देता है। कुछ साइटें विशिष्ट क्रेडिट कार्ड का उपयोग करते समय अतिरिक्त कैशबैक प्रदान करती हैं। कुछ बैंकों ने कुछ ई–कॉमर्स साइटों के साथ टाई–अप किया है। यह टाई–अप आपको क्रेडिट कार्ड का उपयोग करके खरीदारी करने और खर्च किए गए धन का एक निश्चित प्रतिशत अर्जित करने की अनुमति देता है।

8. अपने क्रेडिट स्कोर में सुधार करें : क्रेडिट कार्ड की जिम्मेदारी से उपयोग करने से आपके क्रेडिट स्कोर को बेहतर बनाने में मदद मिल सकती है, जिससे भविष्य में ऋण और क्रेडिट प्राप्त करना आसान हो सकता है। क्रेडिट कार्ड आपके क्रेडिट स्कोर को कई तरीकों से बेहतर बनाने में मदद कर सकता है। आपके क्रेडिट स्कोर को प्रभावित करने वाले सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक आपके क्रेडिट कार्ड भुगतान की समयबद्धता है। ऑन–टाइम क्रेडिट कार्ड भुगतान आपके क्रेडिट स्कोर को बढ़ावा देने में मदद करता है जबकि देर से भुगतान आपके क्रेडिट स्कोर को नीचे लाएगा। देर से भुगतान क्रेडिट ब्यूरो को सूचित नहीं किया जाता है जब तक कि वे 3 दिन देरी से नहीं होते।

क्रेडिट कार्ड आपके क्रेडिट स्कोर को बेहतर बनाने के लिए विशिष्ट रूप से अनुकूल हैं क्योंकि क्रेडिट स्कोरिंग मॉडल, विभिन्न व्यवहारों का मूल्यांकन करता है। भुगतान इतिहास आपके स्कोर का 35% है और इसमें आपके समय पर भुगतान शामिल हैं। अधिकांश क्रेडिट कार्ड भुगतान मासिक रिपोर्ट किए जाते हैं।

क्रेडिट कार्ड आपके उपलब्ध क्रेडिट को बढ़ाकर आपके क्रेडिट स्कोर को बेहतर बनाने में भी मदद कर सकते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि आपका क्रेडिट उपयोग अनुपात, या आपकी कुल क्रेडिट सीमा की तुलना में आपके द्वारा उपयोग की जा रही क्रेडिट की मात्रा, आपके क्रेडिट स्कोर में एक महत्वपूर्ण कारक है। इस अनुपात को 30% से नीचे रखने से आपके स्कोर में सुधार होगा, लेकिन क्रेडिट उपयोग अनुपात 10% से नीचे रखना इष्टतम है।

9. खरीद सुरक्षा : खरीद सुरक्षा कुछ क्रेडिट कार्ड द्वारा दी जाने वाली एक मानार्थ लाभ है। यदि आपका क्रेडिट कार्ड खरीद सुरक्षा के साथ आता है, तो आप कार्ड के साथ खरीदी गई वस्तुओं की मरम्मत, प्रतिस्थापन या प्रतिपूर्ति के लिए पात्र हो सकते हैं। कवरेज कार्ड जारीकर्ताओं और विशिष्ट कार्ड बहुत भिन्न हैं, लेकिन आम तौर पर इसमें नई वस्तुएं शामिल होती हैं जो आपकी खरीद के 60 से 120 दिनों के भीतर क्षतिग्रस्त, दोषपूर्ण या चोरी हो जाती हैं।

एक क्रेडिट कार्ड की खरीद सुरक्षा आम तौर पर एक विशिष्ट समय सीमा के भीतर एक मूर्त वस्तु की चोरी और क्षति को कवर करती है जब आपने वस्तु खरीदा था। किसी वस्तु को खरीद सुरक्षा के लिए अर्हता प्राप्त करने के लिए, आपको इसे क्रेडिट कार्ड से खरीदना होगा जिसके तहत आप दावा दायर करने की योजना बना रहे हैं। क्षति कवरेज में एक योग्य वस्तु को भौतिक क्षति शामिल है। उदाहरण के लिए, यदि आप खरीद के 90 दिनों के भीतर आपकी फोन स्क्रीन चकनाचूर होती है, तो आप अपने क्रेडिट कार्ड नेटवर्क की खरीद सुरक्षा के तहत दावा दर्ज कर सकते हैं।

क्रेडिट कार्ड का उपयोग करने के नुकसान

क्रेडिट कार्ड माल और सेवाओं के लिए भुगतान करने का एक सुविधाजनक तरीका हो सकता है, लेकिन वे कुछ नुकसान के साथ भी आते हैं। क्रेडिट कार्ड के कुछ नुकसान यहां दिए गए हैं:

1. ब्याज़ की उच्च दरों का भुगतान करना : यदि आप महीने–दर–महीने बैलेंस रखते हैं, तो आप ब्याज़ शुल्क का भुगतान करेंगे। ये ब्याज़ दरें आम तौर पर उच्च होती हैं, जब तक कि आपके पास असाधारण क्रेडिट न हो या कोई विशेष प्रस्ताव न हो। क्रेडिट कार्ड की ब्याज़ दरें अधिक हैं क्योंकि क्रेडिट कार्ड ऋण असुरक्षित हैं, जिसका अर्थ है कि ऋण का बैकअप लेने के लिए कोई संपार्श्विक नहीं है। यह क्रेडिट कार्ड ऋण को अन्य प्रकार के ऋणों की तुलना में उधारदाताओं के लिए जोखिम भरा बनाता है, जैसे बंधक या ऑटो ऋण, जो संपार्श्विक द्वारा सुरक्षित होते हैं।

क्रेडिट कार्ड की ब्याज़ दरें भी अधिक हैं क्योंकि अन्य प्रकार के ऋणों की तुलना में क्रेडिट कार्ड के लिए उधार मानक बहुत कम हैं।

2. क्रेडिट क्षति : मिस्ड क्रेडिट कार्ड पुनर्भुगतान और चल रहे ऋण आपकी क्रेडिट फ़ाइल पर दर्ज किए जाते हैं और ट्रैक पर ऋण प्राप्त करने की आपकी संभावनाओं को प्रभावित कर सकते हैं। क्रेडिट कार्ड क्रेडिट के निर्माण के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण हो सकता है, लेकिन ज़िम्मेदारी से उपयोग नहीं किए जाने पर वे वित्तीय परेशानी का स्रोत भी हो सकते हैं। क्रेडिट कार्ड के कुछ खतरों में ऋण चलाना, कार्ड भुगतान से चूकना, शेष राशि ले जाना और ब्याज़ शुल्क लगाना, अपने कार्ड की सीमा का बहुत अधिक उपयोग करना और एक बार में बहुत सारे कार्ड के लिए आवेदन करना शामिल है।

क्रेडिट क्षति तब हो सकती है जब आप क्रेडिट कार्ड पुनर्भुगतान से चूक जाते हैं और सक्रिय ऋण हैं, जो आपकी क्रेडिट फ़ाइल पर दर्ज किए जाते हैं और ट्रैक पर ऋण प्राप्त करने की आपकी संभावनाओं को प्रभावित कर सकते हैं। अपने क्रेडिट कार्ड को बंद करने से आपके क्रेडिट स्कोर की दो श्रेणियों का नुकसान होगा: आपकी क्रेडिट की औसत आयु और आपका क्रेडिट उपयोग अनुपात। आपके क्रेडिट स्कोर पर प्रभाव का स्तर इस बात पर निर्भर करता है कि आपके पास कितने अन्य क्रेडिट कार्ड हैं।

3. क्रेडिट कार्ड धोखाधड़ी : क्रेडिट कार्ड धोखाधड़ी एक जोखिम है, और आप किसी भी धोखाधड़ी लेनदेन का शिकार हो सकते हैं। क्रेडिट कार्ड धोखाधड़ी कार्ड धारक के अलावा किसी अन्य व्यक्ति द्वारा खरीदारी करने या नकद अग्रिम प्राप्त करने के लिए क्रेडिट कार्ड का अनधिकृत उपयोग है। क्रेडिट कार्ड धोखाधड़ी विभिन्न तरीकों से हो सकती है, जिसमें कार्ड की चोरी, कार्ड धारक की पहचान की चोरी, या कार्ड धारक के खाते की जानकारी की चोरी शामिल हैं। क्रेडिट कार्ड धोखाधड़ी के कुछ सामान्य प्रकारों में स्किमिंग, फ़िशिंग और कार्ड-नॉट-प्रेजेंट धोखाधड़ी शामिल हैं। क्रेडिट कार्ड धोखाधड़ी से बचने के लिए, अपने क्रेडिट कार्ड की जानकारी को सुरक्षित रखना महत्वपूर्ण है। आप अपने कार्ड को एक सुरक्षित स्थान पर रखकर, किसी के साथ अपने कार्ड की जानकारी साझा नहीं करके और अनधिकृत लेनदेन के लिए अपने खाते की निगरानी करके ऐसा कर सकते हैं।

4. नकद अग्रिम शुल्क और दरें : यदि आप अपने क्रेडिट कार्ड का उपयोग करके नकदी निकालते हैं, तो आपसे नकद अग्रिम शुल्क और उच्च ब्याज़ दर ली जा सकती है। क्रेडिट कार्ड नकद अग्रिमों में आमतौर पर मानक क्रेडिट कार्ड खरीद की तुलना में उच्च ब्याज़ दर

होती है, जिसमें अधिकांश 19% प्रति वर्ष से 22% प्रति वर्ष तक होती है और कुछ 42% प्रति वर्ष तक हो सकती है। वह लेनदेन के 2-4% के नकद अग्रिम शुल्क को भी आकर्षित करते हैं और ब्याज़ मुक्त दिनों या इनाम अंक जैसी सुविधाओं के लिए पात्र नहीं होते हैं।

5. वार्षिक शुल्क : कुछ क्रेडिट कार्ड वार्षिक शुल्क लेते हैं। क्रेडिट कार्ड वार्षिक शुल्क के मुख्य नुकसानों में से एक यह है कि वे क्रेडिट कार्ड रखने की लागत को बढ़ाते हैं। आपके क्रेडिट कार्ड से आपको जो भी लाभ मिल रहा है, वह उस लागत से अधिक होना चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि आपके पुरस्कार क्रेडिट कार्ड में वार्षिक शुल्क है, तो आपके द्वारा अर्जित पुरस्कार उस राशि से अधिक होना चाहिए जो आप कार्ड को सक्रिय रखने के लिए भुगतान कर रहे हैं। अन्यथा, आप पैसे खो रहे हैं।

क्रेडिट कार्ड का उपयोग करने का एक और नुकसान क्रेडिट कार्ड जारीकर्ताओं द्वारा ली जाने वाली उच्च ब्याज़ दरें हैं। यदि आप महीने-दर-महीने शेष राशि ले जाते हैं, तो ब्याज़ शुल्क जल्दी से बढ़ सकते हैं, जिससे ऋण का भुगतान करना मुश्किल हो जाता है और ऋण का कुचक्र शुरू हो जाता है।

6. क्रेडिट कार्ड सरचार्ज : कुछ व्यापारी क्रेडिट कार्ड भुगतान के लिए अधिभार (सरचार्ज) लेते हैं। क्रेडिट कार्ड सरचार्ज व्यवसायों के लिए एक नुकसान हो सकता है। क्रेडिट कार्ड को रिचार्ज करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण संभावित कमियों में से एक ग्राहक की राय है। सरचार्जिंग प्रभावी कीमतों को भी बढ़ाती है, जो आपकी निचली रेखा को चोट पहुंचा सकती है, क्योंकि ग्राहक अन्य साधनों से खरीदने का फैसला कर सकते हैं।

7. अधिक खर्च : क्रेडिट कार्ड अधिक खर्च करना आसान बना सकते हैं। क्रेडिट कार्ड अधिक खर्च से महंगे कर्ज की समस्या पैदा हो

सकती है। अधिक खर्च के साथ समस्या विशेष रूप से क्रेडिट कार्ड के साथ यह है कि यह बड़े बैलेंस की ओर जाता है जो आपके क्रेडिट स्कोर को नुकसान पहुंचा सकता है, आपके बैलेंस का भुगतान करना कठिन और अधिक महंगा बना सकता है, और आपको कर्ज में डाल सकता है। अधिक खर्च करने के बाद, आपको इस वास्तविकता का सामना करना पड़ता है कि आपने क्या खर्च किया है और अपने आकस्मिक भोग की भरपाई करने के लिए आपको अपने खर्च को समायोजित करना होगा।

भारत में क्रेडिट कार्ड भुगतान प्रणाली

रुपे, वीजा, मास्टरकार्ड और अमेरिकन एक्सप्रेस भारत में प्रमुख क्रेडिट कार्ड भुगतान प्रणाली हैं। रुपे भारत में एक स्वदेशी क्रेडिट कार्ड भुगतान प्रणाली है। 30 नवंबर, 2020 तक, रुपे की बाज़ार हिस्सेदारी कुल जारी कार्डों में 60 प्रतिशत से अधिक हो गई है, जो 2017 में केवल 17 प्रतिशत थी। रुपे 2020 में भारत के कार्ड बाज़ार में 60 प्रतिशत हिस्सेदारी पर कब्ज़ा करने में कामयाब रहा है। इस शेयर में क्रेडिट के साथ-साथ डेबिट कार्ड भी शामिल थे। रुपे भारत का घरेलू भुगतान नेटवर्क है जो भुगतान करने के लिए सुरक्षित और फ़िशिंग-मुक्त वातावरण प्रदान करता है। अन्य अंतर्राष्ट्रीय भुगतान नेटवर्क, वीजा और मास्टरकार्ड की तरह, रुपे क्रेडिट कार्ड वेरिएंट की एक श्रृंखला प्रदान करता है जो कार्ड धारकों को उनकी आवश्यकताओं और जरूरत के अनुसार कार्ड चुनने का विकल्प देता है। रुपे एक इलेक्ट्रॉनिक भुगतान नेटवर्क और निपटान प्रणाली है जिसे भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम द्वारा स्वदेशी रूप से विकसित किया गया है। इस नेटवर्क के तहत जारी किए गए क्रेडिट कार्ड भारत के बाहर भी व्यापक रूप से स्वीकार किए जाते हैं।

केनरा महिला विकास योजना

केनरा महिला विकास योजना खुदरा व्यापारियों सहित सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों के तहत व्यापार संबंधी जरूरतों जैसे कारोबार परिसर की खरीद/निर्माण सहित, मशीनरी, उपकरण, वाहन और महिलाओं की कार्यशील पूंजी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए।

1. एमएसएमई दिशानिर्देशों (जैसा कि एमएसएमईडी अधिनियम 2006 के तहत एमएसएमई की परिभाषा में 01.07.2020 से प्रभावी संशोधन के साथ परिभाषित किया गया है, राजपत्र अधिसूचना दिनांक 26.06.2020 के अनुसार प्रासंगिक संशोधनों के साथ बाद में सूचित किया गया है) के अनुपालन में महिलाओं के स्वामित्व वाले उद्यम इस योजना के तहत पात्र हैं।
2. महिलाओं के स्वामित्व और प्रबंधन वाले वैयक्तिक, स्वामित्व, साझेदारी फर्म, एलएलपी, कॉरपोरेट निकाय। साझेदारी फर्म/एलएलपी/प्राइवेट/पब्लिक लिमिटेड कंपनियों के मामले में, महिलाओं के साथ न्यूनतम 51% की साझेदार पूंजी/ शेयर पूंजी को महिलाओं के स्वामित्व वाली इकाइयों के रूप में माना जाएगा।
3. कारोबारी संस्थाएं (मौजूदा/प्रस्तावित) जिन्होंने 2 साल तक कारोबार परिचालन पूरा कर लिया है और जिनका पिछले 2 वर्षों में मौजूदा बैंकर के साथ संतोषजनक ट्रैक रिकॉर्ड है (आवेदक इकाई की वित्तीय शाखा और वित्तीय दोनों के साथ खाते का संचालन)। साथ ही नई इकाइयों को प्रवर्तकों और परियोजना की संभावनाओं पर संतोषजनक बाजार राय के अधीन स्वीकार किया जा सकता है।
4. किसी भी पैनलबद्ध क्रेडिट ब्यूरो से व्यक्तिगत क्षमताओं में प्रमोटरों का न्यूनतम सीआईसी स्कोर (यानी उपभोक्ता सीआईसी स्कोर) 650 (या ऊपर, -1/अनरेटेड मामलों सहित) होना चाहिए।

सावधि ऋण और/या ओवरड्राफ्ट सुविधा के माध्यम से कार्यशील पूंजी

न्यूनतम : रु. 10 लाख से अधिक
अधिकतम : रु. 5.00 करोड़ टीएके

बैंक के आरएलएलआर से जुड़े बैंक के प्रचलित दिशानिर्देशों के अनुसार ब्याज दर, जो समय-समय पर परिवर्तनों के अधीन है।

20%

बैंक वित्त से सृजित आस्तियां (चल और अचल)।

I) भूमि/भूमि और भवन और/या अनुमोदित प्रतिभूतियों के माध्यम से प्रस्तावित ऋण राशि के 100% से अधिक मूल्य के साथ न्यूनतम संपार्श्विक सुरक्षा।

ii) न्यूनतम निर्धारित संपार्श्विक सुरक्षा सुविधा (मूल्य के संदर्भ में) का 50% केवल आवासीय/वाणिज्यिक भूमि और भवन के बंधक के माध्यम से प्राप्त किया जाएगा।

iii) प्रतिभूति सुविधा में निर्धारित प्रतिभूति सुविधा (मूल्य के संदर्भ में) के 25% की सीमा तक खाली भूमि भी शामिल हो सकती है, बशर्ते इसका स्पष्ट सीमांकन हो और बाउंड्री निकटतम सड़क के हों और किसी भी सरकार/सांविधिक निकाय द्वारा आवंटित की गई हों।

iv) योजना के तहत प्रतिभूतियों के रूप में स्वीकृत भूमि और भवन को अधिकृत सरकारी एजेंसियों से अनुमोदित भवन योजना द्वारा समर्थित होना चाहिए।

कार्यशील पूंजी: एक वर्ष के लिए देय
सावधि ऋण: उपयुक्त अधिस्थगन सहित अधिकतम 84 महीने।

आलेख

भविष्य का स्टोरेज

कर्णी शरण सक्सेना
वरिष्ठ प्रबंधक
प्रधान कार्यलय, बेंगलूरु

यह लेख हम क्यों पढ़ें ?

कंप्यूटर का हार्ड डिस्क, इसके मुख्य घटकों में सबसे धीमे कार्य करता है। आज हर उपयोगकर्ता की एक ही शिकायत होती है कि मेरा कंप्यूटर बहुत ही धीरे बूट तथा शट डाउन होता है, फाइल लोडिंग तथा सेव करनें में बहुत समय लगता है। अगर आप को भी यही समस्या आ रही है तो यह लेख आपके लिये उपयोगी है ।

समस्या का कारण क्या है ?

अगर हमारा डेस्कटॉप तीन साल या ज्यादा पुराना है तो हमें इसके कंफीगरेशन की विवेचना करनी पड़ेगी। जांच करें कहीं कंप्यूटर में हार्ड-डिस्क ST XXXX RPM तो नहीं लगी है। यहां RPM का अर्थ ROTTION PER MINUTE है तथा XXXX एक संख्या है जो कि यह बताती है कि एक मिनट में यह किस गति से घूमेगी। इस प्रकार हार्ड-डिस्क एक मेकेनिकल पार्ट है, अब यह स्पष्ट है कि जितना तेज गति से यह घूमेगी, डाटा उतनी ही तेज गति से ट्रांसफर होगा। अर्थात जितना ज्यादा आर.पी.एम. उतना ही तेज कंप्यूटर का बूटिंग तथा फाइल लोडिंग, फाइल सेविंग एवं शट डाउन होगा।

तो फिर इसका हल क्या है ?

यह देखा गया कि जब रेम, सीपीयू इत्यादि सभी उपस्कर इलेक्ट्रॉनिक हैं तो हार्ड-डिस्क मेकेनिकल क्यों? और इस दिशा में काम चालू हुआ कि हार्ड-डिस्क को कैसे इलेक्ट्रॉनिक बनाएं और परिणाम SSD के रूप में सामने आया।

क्या है SSD ?

SSD अर्थात SOLID STTE DRIVE मेकेनिकल हार्ड डिस्क का इलेक्ट्रॉनिक प्रतिरूप है तथा धीमा प्रदर्शन करने वाली मेकेनिकल हार्ड-डिस्क, जो की बोटलनेकिंग की समस्या का मूल कारण है, जिसकी वजह से डाटा लोड होने के इंतजार में सीपीयू साइकल व्यर्थ होते हैं, का निदान है।

कितने तरह की होती है एस.एस.डी. ?

एक एस.एस.डी. में सामान्य हार्ड-डिस्क से चार गुना तेज डाटा ट्रांस्फर होता है। बाजार में एस.एस.डी. के कई मॉडल उपलब्ध हैं, जिनमें से तीन मुख्य हैं :

1. **2.5" SATA**
2. **M.2 SATA**
3. **M2 NVME(PCI3.0/4.0)**

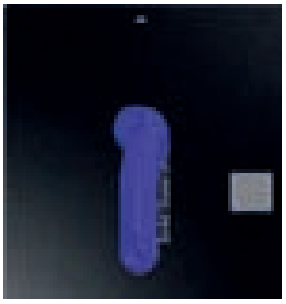

1. 2.5" SATA : यह एस.एस.डी. का आकार में सामान्य हार्ड-डिस्क की तरह लगभग 2.5" लंबी होती है तथा यह मुख्यत: सभी लैपटॉप तथा डेस्क्टॉप के सामान्य हार्ड-डिस्क की तरह साटा पोर्ट में लग जाती है। इस एस.एस.डी. की डाटा ट्रांस्फर रेट **600 एम बी पी एस** है। जिसका सीधा अर्थ यह हुआ कि 10 जीबी की फाइल (आप की कोई मन पसंद फिल्म या आफिस की डाटा फाइल) 15 से 20 सेकेंड में ट्रांस्फर हो जायेगी।

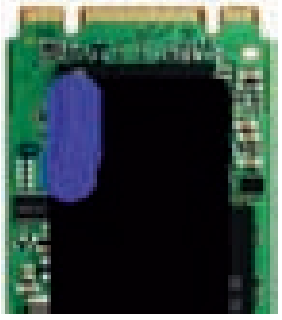

2. M2 SATA : यह 2.5" साटा का ही छोटा प्रतिरूप है। यह उतनी ही गति से डाटा ट्रांस्फर करती है किंतु इसमें केबल लगाने की जरूरत नहीं है तथा यह बहुत कम जगह घेरती है। इसको साटा पोर्ट की जगह मदर बोर्ड

पर बने स्लॉट पर लगाया जाता है इसके दो प्रकार हैं जिनको 'बी की' एवं 'एम की' कहते हैं। खरीदने से पहले यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि आपके कंप्यूटर में कौन सी वाली लगेगी जो कि मदरबोर्ड के यूज़र मैनुअल को पढ़ने से पता चलेगा।

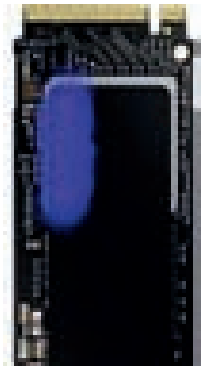

3. M2 NVME(PCI3.0/4.0) : अगर आपके कंप्यूटर के मदरबोर्ड में 'एम की' स्लॉट है तो आप M2 NVME के माध्यम से सबसे ज़्यादा स्पीड प्राप्त कर सकते हैं जो कि 7 जीबी पी एस तक हो सकती है। अर्थात 1 टीबी का फोल्डर 2.5 मिनट में ट्रासंफर।

मेरे कंप्यूटर में कौन सी एस.एस.डी. लगेगी?

उत्तर स्पष्ट है, 2.5" SATA एस.एस.डी. सभी लैपटॉप डेस्कटॉप में लग जाती है क्योंकि साटा इंटर्फेस सभी कंप्यूटरों में लगा होता है। अगर आप अपनी पुरानी हार्ड डिस्क को भी एस.एस.डी. के साथ लगा कर रखना चाहते हैं तो आपको सी.डी. ड्राइव हटा कर एक 'केडी' नामक फ्रेम उसके स्थान पर लगा कर उसमें एस.एस.डी. लगा सकते हैं, इस प्रकार लगाने से आपकी एस.एस.डी. तथा हार्ड-डिस्क दोनों साथ-साथ काम करेंगी। यह सुनिश्चित करने के लिए कि आपके कंप्यूटर में कौन सी वाली एस.एस.डी. लगेगी आपको मदरबोर्ड की यूज़र मैनुअल को पढ़ने से पता चलेगा। अगर आपने एक रेडी टू यूज डेस्कटॉप खरीदा है तो आप उसके मैनुअल को इंटरनेट पर पढ़ सकते हैं।

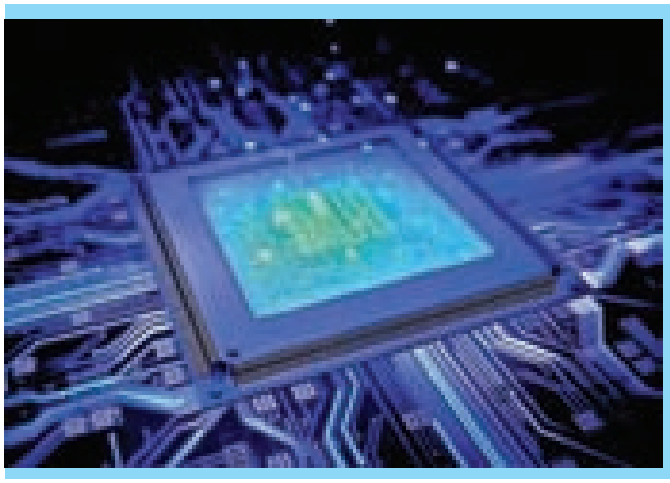

कितनी संचयन क्षमता की एस.एस.डी. ली जाए और खर्चा कितना आयेगा?

यह जानना बहुत आसान है:

अक्षर ऑप्रेटिंग सिस्टम डाल कर डाटा तथा मनोरंजन के लिए गाने तथा फिल्में स्टोर करना है	256 जीबी	रु.2700/-
व्यापारिक तथा कार्यालय में उपयोग के लिए	500 जीबी	रु.3900/-
कंप्यूटर गेम ग्राफिक्स फोटोग्राफी के लिए	1 टीबी या 2 टीबी	रु.5500/-

केनरा प्रीमियम पेरोल पैकेज

हमारे केनरा बैंक ने प्रतिस्पर्धी सुविधाओं के साथ वेतन खाता धारकों के लिए "**प्रीमियम पेरोल पैकेज**" पेश किया है। इसे वेतनभोगी ग्राहकों की सभी बैंकिंग आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। फ्री टर्म लाइफ इंश्योरेंस, इंस्टा ओवर ड्राफ्ट, फ्री पर्सनल एंड एयर एक्सीडेंट इंश्योरेंस कवरेज, प्रीमियम कार्ड जैसी सुविधाएं उत्पाद की कुछ अनूठी विशेषताओं के अलावा अन्य विभिन्न सुविधाओं की पेशकश की जाती है। खाते को वेतनभोगी वर्ग की संपूर्ण 360-डिग्री आवश्यकता के संदर्भ में डिज़ाइन किया गया है और सभी भारतीय निवासी पेरोल पैकेज बचत खाते के लिए पात्र हैं। सभी कर्मचारी जो कॉर्पोरेट कंपनियों का हिस्सा हो जो कम से कम एक वर्ष से चल रहे हैं और कम से कम 25 कर्मचारी, केनरा बैंक पेरोल पैकेज बचत बैंक खाते के लिए पात्र होंगे।

आलेख

मार्केटिंग एवं राजभाषा

शशिकांत पाण्डेय
प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय, लखनऊ

मार्केटिंग और राजभाषा एक विवेचन :

मानव सामाजिक प्राणी है। समाज में रहते हुए एक–दूसरे से विचारों, वस्तुओं का आदान –प्रदान अवश्यंभावी है। इस आदान प्रदान की कड़ी में भाषाओं का मुख्य योगदान है। कल्पना कीजिए कि यदि भाषा न होती तो मानव जीवन कैसा होता? क्या हम जिस अवस्था में आज रह रहे हैं वहाँ पहुंच पाते? शायद नहीं। ज्ञान, विज्ञान, कला आदि सभी क्षेत्रों का विकास भाषा के माध्यम से ही संभव हो पाया है। आज जिस भौतिकतावादी समाज में आप और हम रह रहे हैं उसे और अधिक आसान बनाने में भाषाओं का योगदान अकथनीय है। आप कंप्यूटर क्रान्ति को ही लें, उसकी भी अपनी भाषा है– बाइनेरी भाषा अर्थात मशीनी भाषा। जिसे कंप्यूटर, इंटरप्रेटर के माध्यम से समझता है।

अगर बात मार्केटिंग की करें तो मार्केटिंग मिक्स का एक प्रमुख अवयव है – संवर्धन या यूं कहिए प्रचार। इस प्रचार की कड़ी में एक से अधिक लोगों का होना अनिवार्य है। आप अपने ही लिए उत्पाद बनाकर उसका प्रचार नहीं करते हैं, बल्कि आप फायदे के लिए और दूसरे लोगों तक उत्पाद को पहुंचाने के लिए उत्पाद बनाते हैं और उत्पाद ज्यादातर लोगों तक पहुंचे उसके लिए आप संवर्धन या प्रचार का सहारा लेते हैं।

मार्केटिंग एक प्रकार की प्रक्रिया होती है। जिसका उपयोग व्यापारी अपने उत्पाद की जागरूकता और बिक्री के लिए करते है। इसके अंतर्गत कई प्रकार की गतिविधियां आती है। जिसके द्वारा उत्पाद की जानकारी ग्राहक तक पहुंचना आसान हो जाता है। अगर हम मार्केटिंग को दूसरे शब्दों में जाने तो इसका अर्थ यह भी है, कि यह एक ऐसा तरीका है, जो ग्राहक और उत्पाद के बीच एक संबंध बनाता है, जिससे कि ग्राहक ''उत्पाद'' के बारे में अच्छी तरह से जान सके।

मार्केटिंग का मतलब क्या होता है?

मार्केटिंग का हिंदी अर्थ विपणन होता है, इसके अंतर्गत मार्केटिंग मिक्स उत्पाद, मूल्य, स्थान, प्रोत्साहन की योजना बनाई जाती है, जिन्हें मार्केटिंग की भाषा में 4पीएस कहते है। एक उत्पाद को बनाने के बाद उसकी जागरूकता करने के लिए मार्केटिंग की योजना बनाई जाती है। जिससे ग्राहक का ध्यान उत्पाद पर केंद्रित और आकर्षित किया जा सके।

मार्केटिंग की विशेषताएं :

मार्केटिंग एक मानव द्वारा किसी कंपनी के लिए किया गया कार्य है। हालांकि आज के समय में मार्केटिंग के लिए बहुत सारे तकनीक आ गए हैं। लेकिन इन सभी का उपयोग भी मानव द्वारा ही किया जाता है। जिसे ध्यान में रखते हुए हम इसे मानवीय कार्य के अंतर्गत ही रखते है।

मार्केटिंग को सामाजिक कार्य भी कहा जाता है। इसको सामाजिक क्रिया इसलिए कहते है, क्योकिं यह समाज के भीतर रहकर ही किया जाता है, इसके अलावा इसे आर्थिक क्रिया भी कहते है, क्योंकि मार्केटिंग हमेशा फायदे के लिए की जाती है।

मार्केटिंग बिना आदान–प्रदान के संभव नहीं है, इसीलिए आदान–प्रदान को मार्केटिंग का मुख्य आधार माना गया है। मार्केटिंग के अंतर्गत एक कीमत में वस्तु या सेवा का आदान प्रदान किया जाता है।

मार्केटिंग एक ऐसा कार्य है, जो कभी भी बंद नहीं होता है। हालाकिं मार्केटिंग करने के तरीके बदलते है, लेकिन मार्केटिंग नहीं बदलती है। जो कंपनियां अपने ग्राहक के हित में कार्य करती है, उनके उत्पाद ग्राहक ज्यादा खरीदते है।

मार्केटिंग मिक्स

मार्केटिंग मिक्स के अंतर्गत 4Ps का मुख्य तौर पर जिक्र किया जाता है। जिसमे प्रोडक्ट, प्राइस, प्लेस और प्रमोशन शामिल है। लेकिन समय के अनुसार जैसे–जैसे मार्केटिंग की रणनीति बढ़ी है, इसमें और भी कई P को जोड़ा गया है। जिसमे वर्तमान समय में 11–12 P तक

शमिल है। लेकिन जो मार्केटिंग मिक्स के मुख्य P है, वह 4 P है, जिन्हें सभी लोग जानने की इच्छा रखते है। आइये जानते है, मार्केटिंग मिक्स क्या है –

1. उत्पाद

मार्केटिंग मिक्स के पहले P का मतलब ''उत्पाद'' होता है। मार्केटिंग करने के लिए आपके उत्पाद का उच्च होना बहुत आवश्यक है। आपके उत्पाद की जितनी अच्छी गुणवत्ता होगी, वह उतना ज्यादा ही ग्राहकों को पसंद आएगा। आपका उत्पाद ग्राहकों की जरूरतों को पूरा करने वाला होना चाहिए।

2. स्थान

जिस उत्पाद को बनाकर व्यवसायी बेचना चाहते है, वह उत्पाद बाजार में आसानी से उपलब्ध हो सके। इसके लिए अपने उत्पाद को शहर की सभी दुकानों और ऑनलाइन स्टोर आदि पर उपलब्ध होना चाहिए। जिससे कि सभी ग्राहकों की पहुंच उत्पाद तक हो सके।

3. मूल्य

आपको अपने उत्पाद का मूल्य इस तरह का रखना चाहिए, जिससे कि ग्राहक को किसी भी तरह का कोई नुकसान ना हो और सभी ग्राहक आपके उत्पाद को आसानी से खरीद सके। हालांकि अगर आपके उत्पाद की गुणवत्ता अच्छी है, तो आप उसका मूल्य बढ़ा भी सकते है। अगर आपका उत्पाद उच्च गुणवत्ता वाला होगा तो ग्राहक आपके उत्पाद को खरीद कर खुश होंगे।

4. संवर्धन(प्रचार)

आपको अपने उत्पाद को बनाने के बाद उसके लिए उसका संवर्धन करना बहुत जरुरी है। जिससे कि आपको एक सही ग्राहक मिल सके। संवर्धन के लिए वर्तमान समय में कई तरह के विपणन उपकरण है, जिनके द्वारा आप इन्टरनेट पर अपने उत्पाद का संवर्धन कर सकते है।

राजभाषा:

प्रशासन की भाषा राजभाषा कहलाती है, अस्तु सरकारी कार्यालयों में जिस भाषा का प्रयोग होता है तथा राज्य सरकारें जिस भाषा में अपने पत्र आदि केन्द्र सरकार की तथा केन्द्रीय प्रशासन अपने संदेश राज्य सरकारों को संप्रेषित करता है, वह राजभाषा कही जाती है। संविधान सभा ने लम्बी चर्चा के बाद 14 सितंबर सन् 1949 को हिंदी को भारत की राजभाषा स्वीकारा। इसके बाद संविधान में अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा के संबन्ध में व्यवस्था की गयी। इसकी स्मृति

को ताजा रखने के लिये 14 सितंबर का दिन प्रतिवर्ष हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

अंग्रेजी भाषा में राजभाषा को Lingua Franca (लिंग्वा प्रैंका) कहते है। केन्द्र की राजभाषा को ''संघभाषा'' भी कहा जाता है। सरकारी आदेश, आज्ञाएँ, विज्ञापन, पत्र–व्यवहार वगैरह इसी भाषा में मुद्रित और प्रसारित होते हैं। प्रदेशों के शासनात्मक एकता की स्थापना का बहुत अधिक महत्व है। प्रशासन की भाषा होने के कारण कुछ लोग इसे ''कचहरी की भाषा'' भी कहते हैं। इस देश में समय–समय पर कई राजभाषाओं द्वारा शासन स्थापित किया गया है। प्राचीन और मध्यकालीन भारत में संस्कृत ने राजभाषा का कार्य किया। मौर्यों के शासन का संचालन राज्यभाषा पालि ने किया। मुसलमानों के शासन काल में फारसी राजभाषा बनी और अंग्रेजी के शासनकाल में इस स्थान को अंग्रेजी भाषा ने ग्रहण किया। अब स्वतंत्र भारत में राजभाषा का सिंहासन ''हिंदी'' को सौंपा गया है।

14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा ने सर्वसम्मति से हिंदी को भारत की राजभाषा का दर्जा दिया, इसीलिए 14 सितंबर को प्रत्येक साल संपूर्ण देश में ''हिंदी दिवस'' मनाया जाता है। वस्तुतः यह ''दिवस'' स्वभाषा–चेतना एवं सभी भारतीय भाषाओं के बीच सद्भावना दिवस के रूप में मनाया जाता है। इतना ही नहीं, इस दिन भारत सरकार के कार्यालयों तथा प्रादेशिक कार्यालयों में भी विभिन्न तरह की संगोष्ठियाँ, प्रतियोगिताएँ, पुरस्कारों एवं सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है। अनुच्छेद 351 के अनुसार हिंदी के बढ़ाव–विकास के लिए राजभाषा विभाग विभिन्न नियमों, अधिनियमों, संकल्पों और आदेशों का कड़ाई के साथ पालन कर रहा है। यही कारण है कि हिंदी ज्ञान–विज्ञान, व्यापार–वाणिज्य, विज्ञान, संचार माध्यम तथा सामाजिक नियंत्रण की भाषा हो रही है। कुल मिलाकर भारत के जन कल्याणकारी गणतंत्र में संपर्क और राजभाषा के रूप में हिंदी का भविष्य सुखद और प्रीतिकर है।

राजभाषा का स्वरूप एवं क्षेत्र

स्वतंत्रता पूर्व ब्रिटिश शासन काल में समस्त राजकाज अंग्रेजी में होता था। सन् 1947 में स्वतंत्रता की प्राप्ति के पश्चात महसूस किया गया कि स्वतंत्र भारत देश की अपनी राजभाषा होनी चाहिए; एक ऐसी राजभाषा जिससे प्रशासनिक तौर पर पूरा देश जुड़ा रह सके। भारतवर्ष के विचारों की अभिव्यक्ति करने वाली संपर्क भाषा ''हिंदी'' को ''राजभाषा'' के रूप में स्वतंत्र भारत के संविधान में 14 सितंबर, 1949 में राजभाषा समिति ने मान्यता दी। संविधान सभा में भारतीय संविधान के अंतर्गत हिंदी को राजभाषा घोषित करने का प्रस्ताव दक्षिण भारतीय नेता गोपालस्वामी आयंगर ने रखा था। इससे हिंदी को देश की संस्कृति, सभ्यता, एकता तथा जनता की समसामयिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली भाषा के रूप में भारतीय संविधान ने देखा है।

26 जनवरी, 1950 से संविधान लागू हुआ और हिंदी को राजभाषा के रूप में संवैधानिक मान्यता मिली।

राजभाषा का संबंध प्रशासनिक कार्य प्रणाली के संचालन से होने के कारण उसका संपर्क बुद्धिजीवियों, प्रशासकों, सरकारी कर्मचारियों तथा प्राय: शिक्षित समाज से होता है। स्पष्ट है कि राजभाषा जनमानस की भावनाओं-सपनों-चिन्तनों से सीधे-सीधे न जुड़कर एक अनौपचारिक माध्यम के रूप में प्रशासन तथा प्रशासित के बीच सेतु का काम करती है। बावजूद इसके सरकार की नीतियों को जनता तक पहुंचाने का यह एक मात्र माध्यम है। साधारण जनता में प्रशासन के प्रति आस्था उत्पन्न करने के लिए यह आवश्यक है कि प्रशासन का सारा कामकाज जनता की भाषा में हो जिससे प्रशासन और जनता के बीच की खाई को पाटा जा सके। यह राजभाषा हिंदी सरकारी कार्यालयों में प्रयुक्त होकर ''कार्यालयी हिंदी'', ''सरकारी हिंदी'', ''प्रशासनिक हिंदी'' के नाम से हिंदी के एक नए स्वरूप को रेखांकित करती है। राजभाषा का प्रयोग सरकारी पत्र व्यवहार, प्रशासन, न्याय-व्यवस्था तथा सार्वजनिक कार्यों के लिए किया जाता है जिसमें पारिभाषिक शब्दावली का बहुतायत प्रयोग किया जाता है।

मार्केटिंग और राजभाषा का आपसी संबध–

उत्पादों को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए मार्केटिंग का सहारा लिया जाता है। हालाकिं परंपरागत मार्केटिंग पुराने समय में बहुत ज्यादा की जाती थी, लेकिन आज भी परंपरागत मार्केटिंग की जाती है। लेकिन वास्तव में यह डिजिटल आउटरीच प्रयासों को बाहर नहीं कर सकती है, क्योकिं डिजिटल मार्केटिंग द्वारा आपके बिज़नेस को लक्षित ग्राहक समूह मिलता है। अगर हम बात करें, की आज से लगभग 20 साल पहले मार्केटिंग किस प्रकार की जाती थी, तो आपको बता दें, कि उस समय रेडियो, दूरदर्शन, बिलबोर्ड, दैनिक समाचारपत्र, पत्रिकाओं, टेलिमार्केटिंग, सम्मुख मार्केटिंग के अलावा और भी कई माध्यमों का उपयोग करते हुए मार्केटिंग की जाती थी। हालाकिं आज भी कई कंपनियां ऐसी है, जिनके लिए डिजिटल मार्केटिंग से ज्यादा परंपरागत मार्केटिंग के द्वारा ज्यादा ग्राहक जुड़ते है।

अब यदि उपरोक्त मार्केटिंग माध्यमों को देखे तो आप पाएंगे कि बिना भाषा के आप उत्पादों की मार्केटिंग कर ही नही सकते हैं। उत्पादों के मार्केटिंग के लिए आप चाहे परंपरागत माध्यम का उपयोग करें या फिर डिजिटल माध्यमों का, बिना भाषा के यह कार्य संभव नहीं है।

भाषा के माध्यम से उत्पाद का प्रचार : कुछ रोचक तथ्य बहुराष्ट्रीय कंपनियों का दबदबा और भाषा–

आज के समय आप और हम जिस कंप्यूटर पर बैठ कर काम करते हैं और तमाम कामों को आसानी से निबटा रहे हैं उनको कई भाषाओं में कार्य करने के लिए सक्षम बनाया गया है। आप अपने कंप्यूटर को आज विश्व की किसी भी भाषा में खोल सकते हैं, काम कर सकते हैं और मार्केटिंग भी कर सकते हैं। यह मार्केटिंग का एक नायाब तरीका है और इसमें जबर्दस्त योगदान भाषा का है।

अमेज़न, फ्लिपकार्ट, नेटफ्लिक्स, इंस्टाग्राम, फेसबुक आदि विदेशी साइटें क्या बिना भाषा के इतनी सक्षम हो पातीं? आज अमेज़न जैसी कंपनी ने विश्व के कोने-कोने में हर घर में अपनी पैठ बनाई है। आप अपनी जरूरत की सभी चीजों को घर बैठे सुलभता से प्राप्त कर लेते हैं और इसके लिए आपको कहीं जाने की आवश्यकता भी नहीं है और फालतू खर्च भी नहीं करना होता है। अमेजन जैसी कंपनी क्या बिना भाषा के आगे बढ़ पाती? क्या आपने कभी सोचा है कि अमेज़न जैसी विदेशी मूल की कंपनी ने आज भारत के भी हरेक कोने में पहुंच चुकी है तो उसके पीछे के क्या कारण है? मेरी नजर में यह इसलिए संभव हो पाया क्योंकि उन्होंने क्षेत्र विशेष की भाषा में अपने उत्पादों की मार्केटिंग की। किसी भी त्योहार, विशेष दिन के अवसर पर अपने घर में आने वाले अखबार पर नजर डालिए, आपको अमेजन जैसी कंपनी के पूरे-पूरे पृष्ठ के विज्ञापन क्षेत्र विशेष की भाषा में छपे मिलेंगे।

इस तरह के मामले आपको लगभग सभी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के मिल जाएँगे। चाहे वह फ्लिपकार्ट हो, नेटफलिक्स हो या फिर सोशल मीडिया जैसे इन्स्टाग्राम या फिर फेसबुक या ट्विटर।

आपने महसूस किया होगा जब आप अपनी भाषा क्षेत्र से इतर क्षेत्र में जाते हैं या फिर कार्य करते हैं तो स्वभाषा बोलने वाले के साथ आप आत्मीयता महसूस करते हैं। आप की मित्रमंडली के बनने में भी आपकी स्वभाषा के बोलने वालों का बोलबाला होता है। इस बात को इन बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने बखूबी समझा है और कृत्रिम बुद्धिमता का उपयोग करते हुए आम जन में इतने गहरे तक पैठ बनाने में सफल हुए हैं। आप फेसबुक चला रहे होते हैं या यूट्यूब पर वीडियो देख रहे होते हैं तो बीच-बीच में विभिन्न कंपनियों के विज्ञापन के पॉप-अप भी प्रदर्शित होते हैं आप ने यह भी महसूस किया होगा कि कृत्रिम बुद्धिमता इसके लिए आपकी भाषा में ही विज्ञापनो को दिखाने का प्रयास करता है।

आप किसी भी कंपनी का मोबाइल क्यों न चलाते हों, क्या आपने कभी अपने मोबाइल के इंटरफेस को अपनी भाषा में करने का प्रयास किया है? यदि नहीं किया है, तो इसके पीछे यह कारण हो सकता है कि आप इससे अनभिज्ञ हों। आज के समय में सभी कंपनियों ने अपने इंटरफेस को विश्व की तमाम भाषाओं में लांच किया है। कोई भी नया मोबाइल जब लांच किया जाता है तो आपने यह देखा होगा कि उसका विज्ञापन भी क्षेत्र विशेष की भाषा में किया जाता है।

निष्कर्ष:

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि भाषा और विज्ञापन एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। आज किसी भी विज्ञापन को बिना भाषा के सफल नहीं माना जा सकता है। साथ ही, नए-नए विज्ञापनों से भाषा में भी निखार आता है।

उच्चतम शिक्षा वो है, जो हमें सिर्फ
जानकारी ही नहीं देती,
बल्कि हमारे जीवन को समस्त अस्तित्व के
साथ सद्भाव में लाती है।

खुशी पाकर खुश रहना तो बहुत
आसान है परन्तु जो दुःख में भी खुश रहे,
असल में खुश तो वही है।

जीवन के हर पल का आनंद लें,
क्योंकि जीवन का हर पल
बहुत कुछ सिखाता है।

रवींद्रनाथ टैगोर

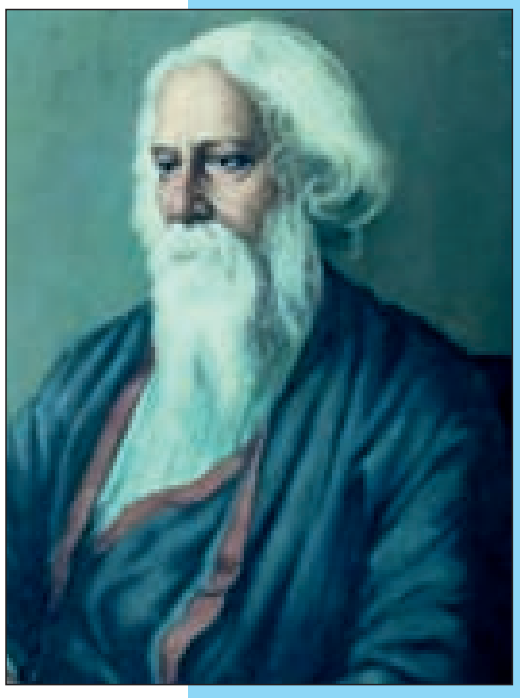

कविता

कितनों की नईया पार करूँ?

कुश राज
अधिकारी
राया शाखा, क्षेत्रीय कार्यालय, मथुरा

जग पर कितना उपकार करूं?
पग-पग किसका उद्धार करूं?
पूछे ईश्वर जन-मानुष से,
कितनों की नईया पार करूं?

निज हित में मानव तत्पर हैं,
संकट में सब जल-थल-चर हैं,
वाणी मृदु है कटुता हिय में,
बहुरूप लिए सारे नर हैं।

क्यों लड़े धर्म-मज़हब पर हैं?
क्यों आसक्त मतलब पर हैं?
आरंभ जन्म, मृत्यु है अंतिम,
धन वैभव बे-मतलब भर हैं।

निस्वार्थ भला जो करता है,
वह नाम युगों तक चलता है,
विद्या, तप, दान गुणहीन मनुज,
पृथ्वी पर भार ही बनता है।

हम आदर्श बनें बदलाव का,
आविर्भाव हो सदभाव का,
कुंठित, क्षीण बुद्धि हो सिंचित,
निश्चित हर क्षण हो सुधराव का।

पुष्कर पाण्डेय
प्रबंधक
खुदरा आस्तियां केंद्र-भोपाल

कविता

अबला क्यों?

श्याम से सुन्दर रूप है मेरा,
काया नई बनाती हूँ।
सृष्टि की अनुपम कृति हूँ मैं,
प्रकृति बन कर लहराती हूँ।
ज़िंदगी है हर रोज बदलती,
मैं अपनी धुन पर रमती हूँ।

अपनी ही मिट्टी पर गढ़ कर,
मैं खुद आगे बढ़ जाती हूँ।
बन जाती हूँ मोम कभी तो,
दिए की ज्योत बन जाती हूँ।
रोशन कर देती राहों को,
मैं अपने ज़िद में रहती हूँ।

कभी रहती हूँ ठोकरों में,
तो कभी मंदिर बन जाती हूँ।
बगिया घर की सूनी हो तो,
मैं फूल कली बन जाती हूँ।
हंसती हूँ मैं आँचल भर के,
टूटे अरमान सजाती हूँ।
हे इस युग के कालपुरुष,
मैं फिर भी 'अबला' कहलाती हूँ।

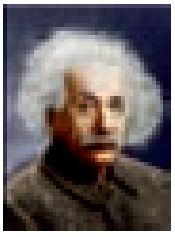

हमें सफल व्यक्ति बनने का प्रयास न करके, सिद्धांतों वाला व्यक्ति बनने का प्रयास करना चाहिए।

– अल्बर्ट आइंस्टीन

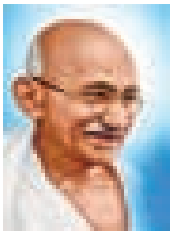

शुभ विचार करना एक अच्छी बात है और उससे अच्छी बात है उसे अमल में लाना।

– महात्मा गांधी

राजभाषा अधिकारियों की तीन दिवसीय हिंदी कार्यशाला की झलकियां

आलेख

कार्ड टोकनाइजेशन

डॉ. सुरेश कुमार
प्रबंधक (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, कोटा

कार्ड टोकेनाइजेशन क्या है :

टोकनाइजेशन एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें ऑनलाइन पेमेंट के समय डेबिट या क्रेडिट कार्ड के संवेदनशील डेटा को गैर-संवेदनशील डेटा में बदल दिया जाता है। संवेदनशील डेटा में आपका 16 डिजिट का प्लास्टिक कार्ड नंबर, नाम, एक्सपायरी डेट और कोड आते हैं। इस प्रक्रिया के अंतर्गत इन्हें एक यूनिक वैकल्पिक कोड में बदल दिया जाता है। आपके कार्ड की डिटेल्स को एक यूनिक वैकल्पिक कोड से बदल देना टोकनाइजेशन कहलाता है या इसे ही टोकन कहा जाता है। यह कोड आपको असाइन किए जाने के बाद हर बार कार्ड से ट्रांजेक्शन करते समय आपको उसका नंबर, सीवीवी व एक्सपायरी डेट जैसी जानकारी दर्ज नहीं करनी होगी, साथ ही जिस वेबसाइट से आप शॉपिंग कर रहे हैं और अगर उसका डेटा लीक हो जाता है तो भी आपकी निजी जानकारी के साथ समझौता नहीं होगा, क्योंकि आपका डेटा वेबसाइट पर सेव नहीं हुआ है। इस टोकन से ग्राहक किसी भी तृतीय पार्टी ऐप या वेबसाइट से कांटेक्टलैस भुगतान कर सकता है।

भारत में कोरोना काल के बाद से ऑनलाइन पेमेंट अर्थात डिजिटल भुगतान करने का प्रचलन काफी बढ़ गया हैं। इसका मुख्य कारण था कि लोग कोरोना महामारी से बचने के लिए घरों से बाहर निकलने में डर महसूस करते थे इसलिए अधिकतर लोग ऑनलाइन डिजिटल तकनीक से रूपये का भुगतान, पैसे का लेन-देन अधिक करने लगे। इसके लिए डेबिट कार्ड (Debit Card) और क्रेडिट कार्ड (Credit Card) का इस्तेमाल करते हैं। जिस तरह से ऑनलाइन भुगतान का तरीका बढ़ा है, उसी तरह से फ्रॉड के मामले भी बढ़ गए हैं।

भारतीय रिज़र्व बैंक ने क्रेडिट और डेबिट कार्ड ट्रांजेक्शन को ज्यादा सुरक्षित बनाने के लिए कार्ड टोकनाइजेशन नाम का एक नया सुरक्षा कवच तैयार किया है, जिसका मुख्य उद्देश्य ऑनलाइन भुगतान प्रक्रिया को अधिक सुरक्षित और मजबूत बनाना है।

ऐसे में भारतीय रिज़र्व बैंक ने इन फ्रॉड को रोकने के लिए सभी क्रेडिट और डेबिट कार्ड डेटा, ऑनलाइन, पॉइंट-ऑफ-सेल और इन ऐप से होने वाले लेन-देन को एक ही में मर्ज करते हुए एक यूनिक टोकन जारी किया है। इसको जारी करने के लिए कई बार तिथियों में बदलाव किया गया, लेकिन 01 अक्टूबर, 2022 से 'कार्ड टोकनाइजेशन' देश भर में लागू हो गया। इसका मकसद ग्राहक को ऑनलाइन ट्रांजेक्शन के समय व उसके बाद अधिक सुरक्षा प्रदान करना है। कार्ड टोकनाइजेशन लागू होने से मोबाइल ऐप, मर्चेंट (व्यापारी, ग्राहक), पेमेंट एग्रीगेटर्स आपके डेबिट या क्रेडिट कार्ड की महत्वपूर्ण जानकारी जैसे -कि सीवीवी कोड या एक्सपायरी डेट को सेव नहीं कर पाएंगे।

बैंकिंग क्षेत्र में बढ़ रही धोखाधड़ी को रोकने के लिए भारत सरकार के द्वारा भारतीय रिज़र्व बैंक को इस तरह के कदम उठाने पर बल दिया गया। इस कदम से क्रेडिट और डेबिट कार्ड के माध्यम से हो रही लेनदेन पहले के मुकाबले ज्यादा सुरक्षित हो जाएंगे। टोकनाइजेशन अर्थात भारतीय रिज़र्व बैंक की ओर से एक टोकन जारी किया जाएगा। इसमें आपके पेमेंट से जुड़े सभी ऑप्शन दिए जाएंगे। इसमें एक यूनिक कोड के जरिए वास्तविक कार्ड डिटेल्स को बदलना है। ऐसा इसलिए क्योंकि लेनदेन के समय आपके क्रेडिट और डेबिट कार्ड की एक्चुअल डिटेल्स मर्चेंट (व्यापारी/ग्राहक) के पास नहीं जाएगी बल्कि एक नंबर जाएगा। इससे धोखाधड़ी करना मुश्किल होगा। पॉलिसी के अमल में आने के बाद मर्चेंट (व्यापारी/ग्राहक) या कंपनियां कार्ड की सूचनाएं संरक्षित नहीं कर पाएंगी। सभी कंपनियों को कार्ड-होल्डर्स की सभी मौजूदा जानकारी हटानी होगी। इसमें हर ट्रांजेक्शन के लिए अलग कोड होगा। आपको अपने कार्ड के डिटेल की जगह यूनिक कोड सेव करना होगा।

जब भी आप किसी वेबसाइट या मर्चेंट (व्यापारी/ग्राहक) के साथ ऑनलाइन खरीदारी करने के लिए अपने डेबिट या क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल करते हैं, तो आमतौर पर आपके कार्ड की डिटेल्स मर्चेंट (व्यापारी/ग्राहक) के पास सुरक्षित हो जाती है। ऐसे में यदि किसी कारण मर्चेंट (व्यापारी, ग्राहक) की वेबसाइट हैक हो जाती है और ये डिटेल्स हैकर के हाथ लग जाती है तो ग्राहकों के लिए मुसीबत खड़ी हो जाती है। भारतीय रिज़र्व बैंक इसे ठीक करने के लिए टोकेनाइजेशंस को अनिवार्य करना चाहता है। इसके बाद कार्ड की सुरक्षा की जिम्मेदारी व्यापारियों पर नहीं, बल्कि बैंकों और प्रोसेसर पर रहेगी।

टोकनाइजेशन की प्रक्रिया में ग्राहक के संवेदनशील डेटा को एक बार इस्तेमाल होने वाली अल्फा-न्यूमेरिक आईडी में बदल दिया जाता है। इसकी खुद की कोई वैल्यू नहीं होती या फिर ऐसा कह सकते हैं कि इसका खाते के मालिक से कोई संबंध नहीं होता। इसे रैंडमली बने टोकन का इस्तेमाल ग्राहक के क्रेडिट या डेबिट कार्ड से जुड़ी जानकारी को सुरक्षित तरीके से संचारित करने में होता है। यह टोकन अपने पास ग्राहकों की किसी भी तरह की संवेदनशील जानकारी नहीं रखता। यह एक मैप की तरह बैंक को बताता है कि इस ग्राहक की संवेदनशील जानकारी उनके सिस्टम में कहा जमा हुई है। इन टोकनों को रद्द नहीं किया जा सकता। मर्चेंट (व्यापारी/ग्राहक) के सिस्टम से अलग इस टोकन की कोई वैल्यू नहीं होती है।

टोकनाइजेशन के बाद कार्ड के जरिए ट्रांजैक्शन के लिए एक टोकन जनरेट (Card Tokenization) किया जाएगा। ये टोकन ग्राहक की जानकारी का खुलासा किए बिना पेमेंट करने की अनुमति देंगे। इसके बाद मर्चेंट (व्यापारी/ग्राहक) आपकी कार्ड डिटेल्स सुरक्षित नहीं कर पाएंगे क्योंकि आपने पहले ही अपने कार्ड के लिए टोकन तैयार कर लिया होगा। मर्चेंट (व्यापारी/ग्राहक) के पास सिर्फ आपका तैयार किया टोकन जाएगा।

टोकनाइजेशन से होगा ये फायदा-

इससे ऑनलाइन पेमेंट करते समय कार्ड की डीटेल्स नहीं भरनी पड़ेगी। टोकनाइजेशन (Card Tokenization) का विकल्प हर ग्राहक को उसकी सुविधा के लिए मिलेगा। अगर आप टोकनाइजेशन का ऑप्शन चुनते हैं तो आपको सिर्फ सीवीवी और ओटीपी डालना होगा। ग्राहकों के पास खुद को कॉन्टैक्टलेस, क्यूआर कोड या इन-ऐप परचेज जैसी किसी भी सर्विस के लिए रजिस्टर और डी-रजिस्टर करने का अधिकार होगा। एक कार्ड का इस्तेमाल कई मर्चेंट्स के लिए किया जा सकता है और एक मर्चेंट (व्यापारी/ग्राहक) के लिए कई काड्र्स का इस्तेमाल किया जा सकता है। 'टोकनाइजेशन' से

आपको पहले जैसा ही पेमेंट अनुभव होता है, लेकिन ये कहीं ज्यादा सुरक्षित और सुविधाजनक होता है।

वीजा, मास्टरकार्ड और रूपे जैसे:- कार्ड नेटवर्क्स के जरिए टोकन जारी किया जाएगा और वह कार्ड जारी करने वाले बैंक को इसकी सूचना दे देंगे। कुछ बैंक कार्ड नेटवर्क्स से यह भी कह सकते हैं कि उन्हें टोकन जारी करने से पहले बैंक से इजाजत लेनी होगी।

मर्चेंट (व्यापारी/ग्राहक) और कार्ड के कॉम्बिनेशन के आधार पर एक यूनीक टोकन जारी होगा। यानी अगर आपके पास एक कार्ड है, जिससे आप 3 मर्चेंट (व्यापारी/ग्राहक) के पास ऑनलाइन ट्रांजेक्शन करते हैं तो आपको तीन टोकन जारी किए जाएंगे। यानी जितने अधिक मर्चेंट (व्यापारी/ग्राहक) के पास आप ट्रांजेक्शन करेंगे, आपके लिए उतने अधिक टोकन जारी होंगे।

इस प्रकार स्पष्ट है कि भारतीय रिज़र्व बैंक के दिशा निर्देश के अनुसार जारी 'कार्ड टोकनाइजेशन' से धोखाधड़ी के मामलो में कमी आयेगी, साथ ही बार-बार कार्ड के नंबर सेव करना और 16 डिजिट के नंबर का याद रखने की जरूरत नहीं होगी बल्कि अंतिम 4 अक्षर से ही काम चल जाएगा और ऑनलाइन भुगतान से होने वाली धोखाधड़ी पर भी लगाम लगेगी। भुगतान करने का यह सबसे अधिक सुरक्षित तरीका होगा, क्योंकि आपकी कार्ड की वास्तविक डिटेल ग्राहक / व्यापारी को नहीं दी जाएगी। ये डेटा व टोकन अधिकृत कार्ड नेटवर्क के पास ही स्टोर होगा। टोकन अनुरोध कर्त्ता आपका पैन और कार्ड की अन्य डिटेल सेव नहीं कर पाएगा। अतः कार्ड टोकनाइजेशन या कार्ड-टोकनीकरण डिजिटल रूप से होने वाली धोखाधड़ियों और आम ग्राहकों के हित में भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा की गई एक अभिनव, क्रांतिकारी और हितकारी पहल है।

आलेख

राष्ट्र निर्माण हेतु ग्रामीण युवाओं का सशक्तिकरण ।

मेरा विश्वास युवा पीढ़ी में है,
आधुनिक पीढ़ी में है,
उनमें से ही मेरे कार्यकर्ता तैयार होंगे।

– स्वामी विवेकानंद

लक्ष्मण राम
अधिकारी
गोगुंदा शाखा, उदयपुर

किसी देश के विकास का मूल स्रोत युवा होते है। इसके लिए ऐसी रणनीति तैयार करनी चाहिए जो प्रगतिशील परिवर्तन की ओर मार्ग प्रशस्त करें। भारत सरकार विभिन प्रतिमानों और योजनाओं के जरिए परिवर्तन लाने का प्रयास कर रही है। हमारे युवा भी नए अवसरों के अनुकूल अपने आपको ढालने के लिए उत्साहित है।

युवा किसी राष्ट्र की जनसँख्या का सर्वाधिक गतिशील हिस्सा होता है। इस हिस्से के विकास और सशक्तिकरण से किसी देश के लिए विकास के अवसरों का सृजन होता है। उनके लिए उचित शिक्षा, कौशल और उद्यमिता के अवसर किसी देश के लिए समग्र सामाजिक, आर्थिक विकास को गति प्रदान कर सकते है। भारत विश्व का सबसे युवा राष्ट्र है, युवाओं का अपनी पूर्ण क्षमता का सदुपयोग ही भारत को एक वैश्विक आर्थिक महाशक्ति बनाएगा। हमारे देश में भूगोलिकीय, जनसांख्यिकीय और सामाजिक रूप से व्यापक विविधता है जो उनके समावेशी विकास के लिए चुनौतियां हैं। शहरी युवा अवसरों को हासिल करने में सक्षम होते है और वे अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा कर सकते है, जबकि आदिवासी, दिव्यांग और ग्रामीण क्षेत्रों जैसे सीमांत क्षेत्रों के युवा समय पर सूचना और अवसरों की जानकारी के अभाव में इससे वंचित रह सकते हैं, जिसके परिणामस्वरुप बेरोजगारी और कम रोजगार की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

भारतीय युवा सामाजिक, आर्थिक विकास और प्रौद्योगिकीय नवाचार के लिए महत्वपूर्ण माध्यम है। उनकी सामूहिक ऊर्जा और दृष्टिकोण हमारे राष्ट्र के विकास का इंजन है। यह निजी क्षेत्र, सार्वजानिक क्षेत्र और नागरिक समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है कि वे युवाओं के सभी वर्गों को, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों के हाशिए पर पड़े युवाओं, दिव्यांगों और आदिवासियों के लिए शिक्षा, कौशल विकास और उद्यमिता का एक समान अवसर पहुंचाने के लिए पर्याप्त अवसर और कार्यक्रम प्रदान करें।

देश का ग्रामीण व शहरी युवा वर्ग जिस तेजी से मुख्यधारा की शिक्षा और कौशल को हासिल करने का प्रयास कर रहा है, उसे देखते यह अनुमान लगाया जा सकता है कि भारत में 2030 तक कुशल श्रमिक अतिरेक में होंगे। इसका मुख्य कारण श्रमशील आयु वर्ग के लोगों की व्यापक आपूर्ति तो है ही साथ ही सरकार की विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों की मदद से शिक्षा और कौशल विकास को प्रोत्साहन दे रही है। कुशल श्रमशक्ति की औद्योगिक मांग को पूरा करने में औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों की उल्लेखनीय भूमिका है।

ग्रामीण क्षेत्रों में भारत की जनसांख्यिकीय बढ़त का लाभ लेने के उद्देश्य से कौशल विकास के लिए वर्ष 2009 में पहली बार राष्ट्रीय नीति बनायीं गई थी। इस नीति का लक्ष्य वर्तमान में लागू कौशल–तंत्र की सीमा और क्षमता बढ़ाकर बदलती आवश्यकताओं के अनुरूप सभी तक इसकी पहुंच को सुनिश्चित करना, जीवन पर्यन्त ज्ञानार्जन का संवर्धन तथा स्कूली शिक्षा में समावेशन एवं प्रशिक्षण संस्थानों की क्षमता बढ़ाना है। राष्ट्रीय कौशल विकास नीति 2009 से वर्ष 2022 तक 50 करोड़ लोगों को कौशल प्रशिक्षण देने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है जिसमें संबंधित मंत्रालयों सहित सभी संबद्ध पक्ष भागीदार होंगे। प्रत्येक पांच साल में इस नीति की समीक्षा करने का प्रावधान रखा गया है।

सरकार ग्रामीण युवाओं के उत्थान के लिए विकासात्मक नतीजों के लिए प्रयास करती है, उनमें लोगों को रोजगार मुहैया कराना तथा उनकी आजीविका सुनिश्चित करना और आमदनी में सुधार लाना शामिल है। इन संवाहकों में कृषि उत्पादकता और आय में सुधार या कपड़ा निर्यात संवर्धन जैसे उद्देश्यों को लेकर क्षेत्र विशेष के लिए नीतियां शामिल है इनमें वित्तीय समावेशन में सुधार, डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर के निर्माण इत्यादि के लिए ली जाने वाली पर्यावरण अनुकूल व्यापक विकास पहले भी शामिल है। उद्यमिता या स्वरोजगार योजनाएं स्टार्टअप इण्डिया, मुद्रा आदि भी इन संवाहकों में हैं।

विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार प्रति वर्ष लगभग एक करोड़ 30 लाख व्यक्ति रोजगार प्राप्ति की आयु में आ जाते हैं लेकिन मात्र 30 लाख रोजगार ही हर वर्ष सृजित हो रहे है। विशाल जनसंख्या जिसका हमेशा से ही लाभ मिलता रहा है, के लिए यह मांग है कि ग्रामीण क्षेत्रों में श्रमिक शक्ति का इस तरह से कौशल विकास किया जाए कि उन्हें डिजिटल भारत, ग्रामीण सड़क संपर्क, स्मार्ट शहरों का विकास, एक्सप्रेस मार्ग, स्वच्छ भारत–ग्रामीण जैसे कार्यों से सृजित होने वाले सकारात्मक उत्पादक रोजगार में लगाया जा सके।

राष्ट्र निर्माण के अंतर्गत ग्रामीण युवा शक्ति का उद्भव (विकास) :

1. युवाओं के पास मजबूत आंतरिक इच्छाशक्ति होने की जरूरत है। साथ ही, आंतरिक स्पष्टता की क्षमता हो। इससे उन्हें उन सभी चुनौतियों का सामना करने का साहस और आत्मविश्वास मिलेगा जो उनके रास्ते में आती है और उन समस्याओं को हल करने की क्षमता भी। अर्थात हमेशा उन्हें शहरी क्षेत्र के युवाओं के समकक्ष मानना चाहिए, निसंदेह स्रोतों की कमी हो सकती है लेकिन आत्मविश्वास की नहीं।

2. बेहतर रोजगार के अवसर, बेहतर कनेक्टिविटी और अन्य बुनियादी ढांचे के लिए ग्रामीण युवाओं को जीवन में हमेशा सही दिशा में सोच समझकर लक्ष्योंमुखी निर्णय लेना चाहिए। अर्थात अपने अंदर छिपी हुई अव्यक्त प्रतिभा, ऊर्जा, जोश आदि उजागर करने चाहिए। वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए केवल सरकारी नौकरी पर निर्भर रहने की बजाय बड़ी संख्या में अब निजी क्षेत्र और स्वरोजगार की और पहल करनी चाहिए।

कौशल भारत कार्यक्रम एक स्वागत योग्य पहल है और इसे प्रभावी ढंग से लागू किया जाना चाहिए। इस कार्यक्रम के तहत 2022 तक 40 करोड़ नागरिकों को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य रखा गया है। इस

पहल में प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, राष्ट्रीय कौशल विकास और उद्यमिता नीति 2015 कौशल ऋण योजना तथा राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन जैसे विभिन्न कार्यक्रम शामिल हैं।

सरकार ने ग्रामीण युवाओं को आगे बढ़ाने के लिए कुछ महत्वपूर्ण पहल की है। भारत के 6.3 करोड़ सूक्ष्म, लघु और मझोले उद्यमों में से आधे से ज्यादा ग्रामीण क्षेत्रों में है, इसीलिए गांवों में रहने वाले युवाओं को आगे बढ़ाना और भी महत्वपूर्ण हो जाता है।

विभिन्न योजनाएं – रोजगार सृजन और कौशल विकास के जरिए **ग्रामीण युवाओं के सशक्तिकरण** की संभावना वाली विभिन्न योजनाओं का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है –

1. मुद्रा (माइक्रो यूनिट्स डेवलपमेंट एंड रिफाइनेंस एजेंसी)

इस योजना की शुरुआत करने का मुख्य उद्देश्य भारतीय अर्थव्यवस्था के सूक्ष्म हिस्से को वित्तीय सहायता देने और उसके पुनर्वित्तपोषण प्रदान करना है इससे 5.8 करोड़ गैर– कॉर्पोरेट छोटे व्यवसायों को गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियों, सूक्ष्म वित्त संस्थाओं, बैंको के जरिये धन मुहैया कराना है। इस योजना से शिक्षित और कुशल ग्रामीण युवाओं को खुद का व्यवसाय शुरू करने का अवसर मिला, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में भी रोजगार का सृजन होने लगा।

2. प्रधानमंत्री कौशल केंद्र

कौशल प्रशिक्षण देने के लिए उद्योगों की नवीनतम आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु उनके अनुरूप ही आधुनिकतम प्रशिक्षण उपकरण अत्यंत आवश्यक है। प्रधानमंत्री कौशल केंद्र ऐसे ही आदर्श कौशल विकास केंद्र है जिनमें औद्योगिक मानकों के अनुरूप कौशल विकास अवसरचना के निर्माण, प्रशिक्षण और प्लेसमेंट पर पूरा ध्यान दिया जाता है।

3. स्टार्टअप इंडिया

स्टार्टअप इंडिया आर्थिक विकास को बढ़ावा देने और रोजगार सृजन के लिए स्टार्टअप के अनुकूल परिवेश तैयार करने के उद्देश्य से की गई सरकारी पहल है। यह अभियान एक कार्ययोजना पर केंद्रित है जिसके तीन स्तंभ है : सरलीकरण और मार्गदर्शन, वित्तीय सहायता और रियायतें तथा उद्योग और शिक्षा जगत की भागीदारी एवं उद्भवन। यह उद्यमियों को ज्ञान की साझेदारी और वित्तीय सहायता हासिल करने में मदद करेगा।

4. मनरेगा (महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम)

यह योजना शुरुआत में भारत के 200 जिलों में चलायी गई, बाद में केंद्र सरकार द्वारा अधिसूचित अन्य क्षेत्रों में भी धीरे-धीरे विस्तार किया गया। यह युवाओं समेत ग्रामवासियों को वर्ष में 100 दिन तक रोजगार मुहैया करने के लिए चलाए जा रहे सरकार के प्रमुख कार्यक्रमों में से एक है।

5. राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन

इसे ग्रामीण विकास के लिए विशेष कार्यक्रम के तौर पर बनाया गया है। गरीबी-रेखा से नीचे के ग्रामीण युवाओं को बुनयादी कौशल विकास के लिए NLRM के तहत ग्रामीण स्वरोजगार संस्थान खोले गए हैं। ये संस्थान ग्रामीण युवाओं को सूक्ष्म उद्यम खोलने और वेतन वाला रोजगार पाने में सक्षम बनाते है। ये ग्रामीण गरीब युवाओं में कौशल विकास कर उन्हें न्यूनतम मजदूरी दर के बराबर या उससे अधिक नियमित मासिक वेतन वाले रोजगार मुहैया करवाते हैं। यह मिशन ग्रामीण आजीविका को बढ़ावा देने के लिए ग्रामीण विकास मंत्रालय की पहल में से एक है। आजीविका कौशल के कुछ चरण है - अवसरों के बारे में जागरूकता पैदा करना, गरीब ग्रामीण युवाओं की पहचान, दिलचस्पी रखने वाले ग्रामीण युवाओं को संगठित करना, युवाओं और उनके अभिभावकों को सलाह देना, रुझान के आधार पर चयन और ग्रामीण युवाओं की नियोजित क्षमता बढ़ाने के लिए उद्योग से जुड़े कौशल का ज्ञान प्रदान करना।

6. सहभागिता कौशल नवाचार

नमामि गंगे परियोजना के लिए कौशल प्रशिक्षित श्रमशक्ति का विकास करने के उद्देश्य से केंद्रीय कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय और केंद्रीय जल संसाधन, नदी विकास और पुनर्जीवन मंत्रालय के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

7. प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना

यह भारत सरकार के कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय की एक प्रमुख योजना है। इसका उद्देश्य युवाओं में व्यावसायिक कौशल को बढ़ाना है। विस्तार और संभावित असर के लिहाज से यह देश के ग्रामीण युवाओं पर व्यापक प्रभाव डालने वाली योजना है। इस कौशल प्रमाणन योजना का उद्देश्य बड़ी संख्या में भारतीय युवाओं को उद्योग के लिए उपयोगी कौशल का प्रशिक्षण लेने में सक्षम बनाना है। जिससे उन्हें बेहतर आजीविका हासिल करने में सहायता मिलेगी।

8. मेक इन इंडिया

यह योजना खासतौर से चर्चित योजना नहीं होने के बावजूद औद्योगिक विकास के लिए एक प्रमुख पहलकदमी है। विनिर्माण क्षेत्र में रोजगार सृजन के लिए इसका काफी महत्व है मेक इन इंडिया का कुल प्रभाव यही अनिच्छित है। लेकिन इसमें कृषि श्रम को विनिर्माण की ओर ले जाने की क्षमता है यह योजना मुद्रा ओर PMKVY के साथ मिलकर रोजगार कर सकती है।

9. प्रधानमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान

इस योजना के अंतर्गत पांच वर्षो में देशभर में उच्च शिक्षा के चयनित संस्थानों, स्कूलों, औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र एवं उद्यमिता विकास केन्द्रों में उद्यमिता शिक्षा और प्रशिक्षण के माध्यम से उद्यमिता विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियां तैयार करने का लक्ष्य रखा गया है। इसके अलावा, छात्रों के लिए ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर विशेषज्ञों, संरक्षकों, परिचालकों, कोष एवं वाणिज्यिक सेवाओं की उत्तम व्यवस्था मिलेगी।

10. दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना

यह योजना ग्रामीण युवाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के लिए शुरू की गई है। इस योजना का एक सकारात्मक पहलू यह है कि इसमें धन को डिजिटल वाउचर के जरिए योग्य आवेदक के बैंक खाते में सीधा भेजा जाता है। यह योजना ग्रामीण भारत को एक ऐसे संसाधन में पुनर्संमायोजित करती है जो वैश्विक मेनुफेक्चरिंग उद्योग की जरूरतों को पूरा कर सकता है।

11. सेल्फ एम्प्लॉयमेंट एंड टैलेंट यूटिलाइजेशन (setu)

यह एक तकनीकी वित्तीय उद्भवन और सरलीकरण कार्यक्रम है। यह खासतौर पर प्रौद्योगिकी संचालित क्षेत्रों में स्टार्टअप व्यवसाय के सभी पहलुओं तथा अन्य रोजगार गतिविधियों में सहायता पहुंचाता है।

12. स्वर्ण जयंती ग्रामीण स्वरोजगार योजना

इसकी शुरुआत ग्रामीण विकास मंत्रालय ने गांवों में गरीबी–रेखा से नीचे की परिवारों को स्वरोजगार अपने में सहायता देने के लिए की है। इस योजना के लिए धन केंद्र सरकार देती है और इसके तहत हाट शुरू करने और ऋण से संबधित मसलों पर सूचना और दिशा–निर्देश मुहैया करवाए जाते है।

13. शुल्क–आधारित प्रशिक्षण

NSDC द्वारा संचालित कौशल विकास के शुल्क आधारित मॉडल के अंतगर्त 74 लाख से अधिक युवाओं को प्रशिक्षण दिया गया है।

14. बागवानी में स्वरोजगार

इस कार्यक्रम में बागवानी फार्म खोलने के लिए 10 लाख तक की वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जाती है। यह कार्यक्रम बागवानी उत्पादन बढ़ाने के अलावा पोषण सुरक्षा सुधारने और कृषक परिवारों और अन्य की आय बढ़ाने में उपयोगी साबित हुई है। इसने बागवानी विकास के लिए चल रहे और नियोजित अनेक कार्यक्रमों के बीच समायोजन और तालमेल स्थापित किया है। यह कार्यक्रम विशेष तौर से बेरोजगार युवाओं समेत कौशल और कौशलरहित व्यक्तियों के लिए रोजगार पैदा करने में मददगार साबित होगा।

15. स्वर्ण जयंती ग्रामीण स्वरोजगार योजना

इसकी शुरुआत ग्रामीण विकास मंत्रालय ने गांवो में गरीबी–रेखा से नीचे के परिवारों को स्वरोजगार अपनाने में सहायता देने के लिए की है। इस योजना के लिए धन केंद्र सरकार देती है और इसके तहत हाट शुरू करने और ऋण से संबधित मसलो पर सूचना और दिशानिर्देश मुहैया करवाए जाते हैं।

16. संपूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना

ग्रामीण विकास मंत्रालय की यह ग्रामीण क्षेत्रों में अतिरिक्त रोजगार मुहैया करवाती है। इस तरह खाद्य सुरक्षा मुहैया करवाने और पोषण स्तर बढ़ाने का काम करती है।

स्वामी विवेकानंद ने कहा है – कि यदि राष्ट्र का एक युवा एक गरीब बच्चे को शिक्षित करने या उसे कुछ कौशल प्रदान करने में कुछ गुणवत्तापूर्ण समय व्यतीत करता है जो उसे एक अच्छी आजीविका कमाने में सक्षम बनाए तो यह राष्ट्र के प्रति महान सेवा होगी।

वर्तमान समय में हमारी युवा महिलाएं भी देश को आगे ले जाने में महत्पूर्ण योगदान दे रही हैं। सिविल सेवा जैसी महत्वपूर्ण परीक्षाओं को पास करके अपना नाम रोशन कर रही है, उसी तर्ज पर ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली बालिकाओं/महिलाओं को अच्छी स्कूली शिक्षा देकर समय की मांग के अनुसार सरकार द्वारा चलायी जा रही विभिन्न योजनाओं का लाभ दिलाते हुए उनका कौशल विकास किया जा सके, जिससे आने वाले समय में वो अपनी आजीविका के लिए खुद पर ही निर्भर रहें अर्थात आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिले, जिससे राष्ट्र की उन्नति होगी।

प्रौद्योगिकीय युग में ग्रामीण युवाओं के सशक्तिकरण के लिए डिजिटल समावेशन को भी बढ़ावा दिया जाए जिससे ग्रामीण क्षेत्रों के दूर दराज गांवों में रहने वाले युवाओं तक डिजिटल तकनीक की पहुंच आसानी से हो सके। प्रौद्योगिकी में दुनिया में बदलाव लाने और लोगों का जीवन सुधारने की क्षमता है। इसका युवा नेतृत्व वाले उद्यम और पहलों की अतुल्य भवन के साथ युवाओं के विकास के लिए उपयोग किया जा सकता है निजी क्षेत्र, सार्वजानिक क्षेत्र और नागरिक समाज को युवाओं को सशक्त बनाने क लिए कार्य करना है। समावेशी विकास और सतत विकास ऐसे महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

निष्कर्ष :– असली भारत गांवों में बसता है। यदि हम देश के ग्रामीण क्षेत्रों में एक छोर से दूसरे छोर तक यात्रा करते हैं, तो युवा, जो स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालय जाते है, कार्यक्रम आयोजित करते हैं और सामाजिक कार्यो में संलग्न होते है, उनका जोश और उत्साह एक मजबूत और समृद्ध राष्ट्र के लिए प्रतिबद्धता दर्शाता है। शिक्षा समाज के पुनर्निर्माण का साधन हो सकती है। ग्रामीण युवाओं के सन्दर्भ में यह अधिक प्रारसंगिक है।

कविता

किरदार

अतुल कुमार शुक्ल
प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता 1

बचपन की मासूमियत के भाव बदल जाते हैं,
उम्र के साथ जिंदगी के किरदार बदल जाते हैं,
किताबों के बस्ते से शुरू हुई थी जो जिंदगी,
जिम्मेदारियों के बोझ तले कंधे दब जाते हैं,
गाँव की पगडण्डी का रास्ता जो हमेशा याद था,
शहर के पक्के रास्तों मे अपने आप खो जाते हैं,
उम्र के साथ जिंदगी के किरदार बदल जाते हैं।।

कागज की नाव, कुछ मित्रों का साथ था,
आमों का बाग़ और घर के खाने का स्वाद था,
गिल्ली डंडे का खेल और समय अपार था,
अचानक यूं ही कहीं खो जाते हैं,
उम्र के साथ जिंदगी के किरदार बदल जाते हैं।।

नीम के पेड़ों की छाँव में जो चैन था,
अब एसी के ठंडक में भी पाते हैं,
गन्ने के रस का जो स्वाद था,
अब कोल्ड्रिंक्स में कहां पाते हैं,
उम्र के साथ जिंदगी के किरदार बदल जाते हैं।।

गाँव के तालाब की भी अपनी कहानी थी,
सुबह को सूर्य की लालिमा व शाम की बात ही निराली थी,
दादा दादी के प्यार से अपने आप हम मोटे हो जाते थे,
इस साल के कपड़े अगले साल फिर छोटे हो जाते थे,
अब कहां ऐसा समय फिर से पाते हैं,
उम्र के साथ जिंदगी के किरदार बदल जातें हैं।।

कविता

नाम

अक्षता वी. नूली
लिपिक
नूतन विद्यालय शाखा, कलबुर्गी

भीड़ भरी इस दुनियां में पहचान बनाने मैं चला,
जग को अपने अस्तित्व का पता अपने नाम से देने मैं चला

हो नाम ऐसा, सुनकर जिसे जगे हर मन,
हो सावन सा दर्पण, दीप सा प्रकाश हो जिसमें,
हो उज्ज्वल भाव, पर कोमल हो एहसास भी,
सुरीली हो साज़ जैसे कोई सरगम

सोचूं सूरज कहलाऊं, जिसकी रश्मि दे कोमलता व प्रकाश भी,
पर सरगम-सा साज़ तो पाया तारों में,
टिमटिमाते तारों से अंधियारों में भी जगे उम्मीद,
पर जो रोशनी आ जाए पास, छू-मंतर कर गुम हो जाए,
देख जो सुबह शाम खिले और जिसे देख हर मन मुस्काए,
ऐसे फूलों का नाम सबको भाए, फूलों से ही सावन सा दर्पण,
इसमें है शीतलता का वास, जब पवन मंद-मंद बहे पास,
दीर्घ सुगंध का तभी होवे आभास, पवन से ही तो दीप हैं जलते,
कोमलता है इसके कण-कण में, इससे सरगम गीत है बनी,
और होता चक्र जीवन-मरण,

सोच में पड़ा जो कोई, नाम न ऐसा पाया,
जिसमें मैंने अपने-आप को पाया,
न सूरज, तारे, चाँद में, न फूलों की खुशबू में,
न बहती हवा में, न झरती नदियों में, न जगमगाते दिए में,
न इतराती तितलियों में पाई अपनी संपूर्णता,

मन ही मन मुसकाया मैं जब,
भीड़ भरी इस दुनियां में पहचान बनाने मैं चला,
जग को अपने अस्तित्व का पता अपने नाम से देने मैं चला,
नासमझ था जो नाम खोजते खो गया अपने ही बवंडर में

जैसे प्रकाश है सूरज में, खुशबू है फूलों में,
पाऊं पहचान मैं भी कर्म से अपने,
जाग गए गुण मेरे अस्तित्व के,
धीमे से जब दूं मैं, दस्तक अपने।

यात्रा वृत्तांत

मुसाफिर हूँ यारों

निखिल दीप मेहंदीरत्ता
अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय-1, लखनऊ

अगली बार कहाँ? हर बार जब मैं अपनी किसी भी यात्रा से वापस घर की ओर निकलता हूँ, तो यह प्रश्न जरूर मेरे ह्रदय में प्रकट होता है। किसी भी यात्रा के अंत में जो दुःख होता है, वह किसी भी यात्रा के पहले दिन हमारे उत्साह और सकारात्मकता के विपरीत होता है।

मुझे याद है वह दिन जब मैं अपनी अगली यात्रा के बारे में सोच रहा था, मुंबई से लखनऊ के विमान की खिड़की से अंतहीन आकाश को देखते मेरे ह्रदय में कई विचार उठ रहे थे। मैं अपने अतुल्य भारत में नब्बे शहर घूम चुका था।

मैंने कन्याकुमारी के प्राचीन समुद्र तट, उत्तर में हिमालय की ऊंची ऊंची पहाड़ियाँ, दार्जिलिंग के चाय बागान, राजस्थान के किले देखे थे। इतने विविध स्थानों का दौरा करने के बाद भी मेरा मन एक और अनोखे अनुभव के लिए तरस रहा था।

मैं हमेशा एक पहाड़ प्रेमी व्यक्ति रहा हूं और जब भी मुझे अपनी अगली यात्रा की योजना बनाने का अवसर मिलता है, तो पहला विचार मेरे मन में जो आता है वह है कि किसी हिल स्टेशन की यात्रा करना। इसमें एक अलग एहसास है, आप प्रकृति से इतना जुड़ा हुआ महसूस करते हैं, यह एक भावना की तरह है जिसे शब्दों में बयां करना मुश्किल है।

मैंने अपने जीवन में कभी भी एकल यात्रा का अनुभव नहीं किया और हमेशा यह पता लगाने की कल्पना थी कि एकल यात्रा करना कैसा होता है। बस यूंही अलग अलग शहरों के बारे में सोचते सोचते मेरा मन किया कि क्यूँ ना इस बार एकल यात्रा ट्रेक पे चला जाए। एकल यात्रा के बारे में बहुत सुना था। एकल यात्रा करने का अनुभव बेहद ही अलग, रोमांचक होता है और इस से कुछ अनुभव ऐसे होते है जो ज़िंदगी भर आपके साथ रह जाते हैं।

मैंने अगले कुछ दिन अपने ट्रेक के लिए जगह चुनने में बिताए। कई तरह की जगह मेरे मन में आ रही थी जैसे चंदरशीला टुँगनाथ का ट्रेक जहा विश्व का सबसे ऊंचा शिवलिंग है, केदारकंठक का ट्रेक आदि परंतु यह सब ट्रेक काफी कठिन माने जाते हैं और क्यूंकि यह मेरे जीवन का पहला ट्रेक होने वाला था तो मुझे ऐसी जगह का चयन करना था जो रोमांचक भी हो और साथ में ज़िंदगी में पहली बार ट्रेक कर रहे इंसान क लिए ज्यादा कठिन साबित ना हो। हर जगह के बारे में अनुसंधान करने के बाद मैंने त्रिउंड जो कि धौलाधार पहाड़ियों में स्थित धर्मशाला शहर के नज़दीक है, जाने का फैसला किया।

त्रिउंड ट्रेक को एक आसान ट्रेक के रूप में वर्गीकृत किया गया है। त्रिउंड ट्रेक का बेस कैंप या उद्गम स्थल मैक्लोडगंज है, जो धौलाधार पहाड़ियों के बीच एक खूबसूरत हिल स्टेशन है, जहाँ परम पावन दलाई लामा का घर भी है।

अक्टूबर महीना मेरा सबसे पसंदीदा महीनों में से एक है। यह पतझड़ का मौसम बेहद ही सुहावना होता है, व्यक्तिगत रूप से यह अद्भुत मौसम के साथ सबसे खूबसूरत मौसमों में से एक है। मैं शरद ऋतु के मौसम में यात्रा करना काफी पसंद करता हूं और इसीलिए मैंने त्रिउंड जाने के लिए अक्टूबर महिना चुना।

मैंने अपनी यात्रा के लिए ट्रेक जूते, सर्दी के लिए कपड़े, कुछ जरूरी दवाईयां, अपना कैमरा और खाने का समान पैक किया।

मैंने लखनऊ से पठानकोट (निकटतम रेल्वे स्टेशन) का सफर ट्रेन से तय किया। रेल यात्रा के बारे में पसंद करने के लिए बहुत कुछ है, जिन लोगों से आप मिलते हैं, जो चीजें आप देखते हैं, रेल यात्राएं अपने आप में एक अनूठा अनुभव पेश करती हैं। भारत को अगर किसी को करीब से देखने का अनुभव करना है तो उसे अपने जीवन में भारत के अलग अलग कोने रेल यात्रा कर के अनुभव करने चाहिए।

पठानकोट जम्मू से पहले एक छोटा सा शहर है जहा भारतीय वायु सेना का महत्वपूर्ण बेस है। पठानकोट से हिमाचल के कई हिल स्टेशनों, जैसे डलहोउसी, खज्जियार आदि को जाने के लिए बसे

लगातार चलती रहती हैं। पठानकोट मेरी ट्रेन सुबह 6 बजे पहुंच गई थी, यह स्टेशन बहुत छोटा सा था जहाँ कुछ सुबह के नाश्ते के लिए उपलब्ध नहीं था, तो मैंने बाहर बस अड्डे की ओर जा कर चाय और गरमा गरम आलू पराठे खाए और 7 बजे की बस में सवार हो कर धर्मशाला की ओर निकाल गया।

पठानकोट से धर्मशाला की कुल दूरी 85 किलोमीटर है, जिसको बस से तय करने में तकरीबन 3 घंटे लगते हैं। रास्ते में पंजाब हिमाचल का चेक पोस्ट पार करते ही कुछ दूर में पहाड़ दिखने लग जाते है और मौसम भी बदलने लग जाता है। हवा में अलग ही ताज़गी आप महसूस कर सकते हैं। पठानकोट से धर्मशाला के रास्ते पर भारत के प्रसिद्ध मंदिरों में शुमार कांगड़ा देवी, चामुंडा देवी, ज्वालामुखी, बैजनाथ पपरोला इत्यादि के लिए रास्ते अलग होते हैं। और तो और यहाँ से पालमपुर भी पास में ही पड़ता है, जो की चाय क बागान क लिए उत्तर भारत में काफी मशहूर है।

हमारी बस कंगरा बस स्टेशन क लिए कुछ देर के लिए रुकी, और धर्मशाला पहुचते हमे 10 बज गए थे। मेरा उत्साह चरम सीमा पर था क्योंकि इस यात्रा में बहुत कुछ पहली बार अनुभव करने का अवसर मिल रहा था। यह पहली बार था जब मैं अकेले यात्रा कर रहा था और वह भी पहली बार किसी ट्रेक पर लखनऊ से धर्मशाला पहुंचने के सफर में 18 घंटे लगे। हर बीतते घंटे के साथ उत्साह कई गुना बढ़ गया। मैं करीब 18 घंटे का सफर तय कर 11 बजे मैक्लोडगंज पहुंचा, लेकिन मुझ पर किसी तरह की कोई थकान नहीं थी, ऐसा उत्साह था।

मैंने थ्रिलोफिलिया वेबसाइट से एक पैकेज खरीदा था, जिसमें एक गाइड, कैंपिंग और रात का खाना शामिल था। मुझे उनके बेस कैंप में रिपोर्ट करने का निर्देश दिया गया, जो मैक्लोडगंज बाजार से 10 मिनट की दूरी पर था। धर्मशाला से मैक्लोडगंज जाने के लिए मैंने बस के सह यात्रियों के साथ मिल कर टैक्सी की, जिसने हमे मैक्लोडगंज के बाजार में उतार दिया। मैक्लोडगंज में उतर कर मैंने बेस कैंप जाने का रास्ता पूछा, और बसे कैंप पहुंचने पर, हमने कुछ औपचारिकताएं पूरी कीं, कुछ खाने का राशन लिया सफर के लिए और ट्रेक शुरू करने से पहले अपनी पानी की बोतलें फिर से भर लीं। बस्ते का वजन कम करने के लिए, जिस समान की हमे ट्रेक के दोरान जरूरत नहीं थी उसे हमने बसे कैंप के लॉकर में रख दिया।

ट्रेक की कुल दूरी 9 किमी थी। हम एक गाइड के साथ 10 यात्रियों का एक समूह था, सह यात्री भारत के भिन्न-भिन्न राज्यों से आए थे।

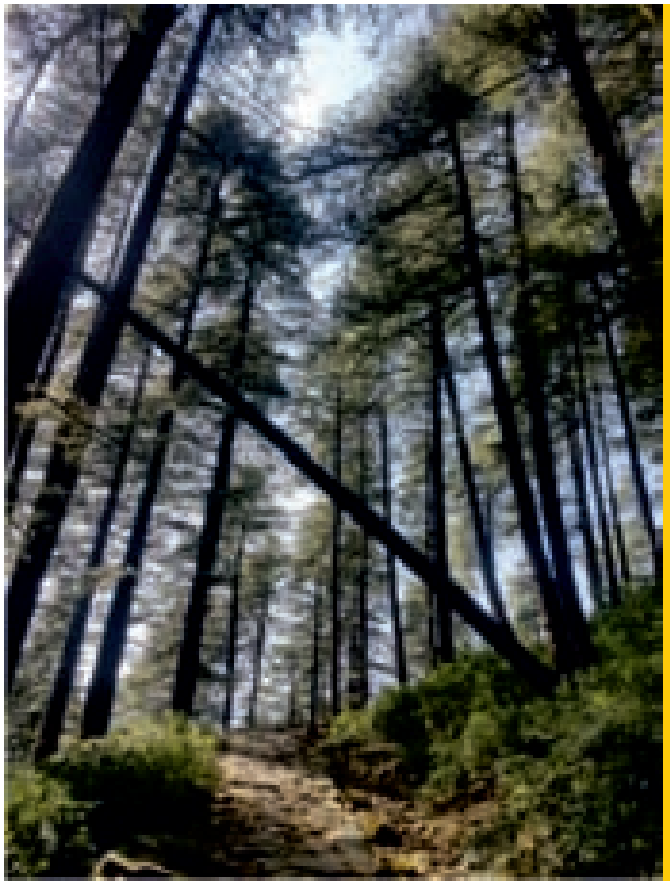

कई लोग मेरी तरह पहली बार ट्रेक पर आए थे। हमने दोपहर के 12 बजे अपना ट्रेक शुरू किया।

1 किमी के बाद एक चेक पोस्ट थी जहां पर्यटकों को संभावित सामान के लिए चेक किया जा रहा था जो जगह की प्राकृतिक सुंदरता को खतरे में डाल सकता है और वनस्पतियों और जीवों को स्थायी नुकसान पहुंचा सकता है। वैसे तो हमे खुद ही समझना चाहिए कि अगर हम अपने पर्यावरण का ख्याल नहीं रखेगे तो जो हम प्राकृतिक सुंदरता का लुफ्त उठाने विभिन्न जगह आते जाते हैं वह कुछ साल बाद नहीं रहेगी।

चेक पोस्ट को पार करने के बाद, हमने त्रिउंड शिखर की ओर अपनी चढ़ाई शुरू की। ट्रेक में कुछ किलोमीटर तय करने के पश्चात ऐसा महसूस हो रहा था की जैसे हम किसी पहाड़ी इलाके नहीं बल्कि दूर मैदानी इलाकों में हो और गर्मी के दिन जैसा महसूस हो रहा था।

आराम का एकमात्र स्रोत पेड़ों की छाया और गुजरते बादल थे। फोन नेटवर्क चले गए थे और हम बाहरी दुनिया से पूरी तरीके से कट चुके थे। लेकिन उस समय इसका अलग ही रोमांच था।

हमें शिखर से सूर्यास्त के अद्भुत दृश्य के बारे में बताया गया और इस प्रकार हमारा लक्ष्य शाम 5.30 बजे तक ट्रेक पूरा करने का था। दोपहर के 2 बजे तक हम ट्रेक का आधा रास्ता तय कर चुके थे, जब हमें हमारे गाइड ने बताया कि पहले 8 किलोमीटर का झुकाव धीरे-धीरे बढ़ता है लेकिन आखिरी किलोमीटर एक खड़ी चढ़ाई है। हम बार-बार विराम ले रहे थे, खुद को हाइड्रेटेड रखना महत्वपूर्ण था, क्यूंकि हमारी जीवनशैली ऐसे ट्रेक के लिए अनुकूल नहीं है।

आधे रास्ते के बाद एक कैफे था और यह सामान्य से अधिक लंबा ब्रेक होने वाला था। पहाड़ों में गर्म मैगी और गर्मा-गरम मोमोस का क्या ही कहना। उस दिन हमारे समूह से शायद ही कोई होगा जिसको वहाँ मैगी खाते ना देखा हो। कुछ ही दूरी पर हरे-भरे घास के मैदान थे और हम घास के किनारों पर भेड़ों के झुंड को चरते हुए देख सकते थे।

लगभग आधे घंटे के ब्रेक के बाद हमने अपने ट्रेक के आखिरी हिस्से के लिए खुद को फिर से इकट्ठा किया, आखिरी लेकिन सबसे चुनौतीपूर्ण हमारे ब्रेक के बाद मुश्किल से एक किलोमीटर की दूरी पर हमने देखा कि मौसम खराब हो गया है। कुछ काले बादल इकट्ठे हो गए और कुछ ही मिनटों में तेज़ बारिश होने लगी। बारिश का कोई पूर्वानुमान नहीं था लेकिन ये मौसम की भविष्यवाणियां हमेशा पेचीदा होती हैं। हम छिपने के लिए भागे, अपने आप को भीगने से बचाने के लिए क्योंकि यह समस्याग्रस्त साबित हो सकता था, तापमान रात के दौरान शिखर पर $1^{0}C$ जितना नीचे पहुंच जाता था।

सौभाग्य से यह सिर्फ एक हल्की बौछार थी, और मजबूरन रुकावट के बाद हमने अपनी यात्रा फिर से शुरू की। शाम के 4.30 बज रहे थे और ट्रेक का यह आखिरी पड़ाव बचा था, जो कि एक खड़ी चढ़ाई थी। हम सब पहले से ही थके हुए थे लेकिन यह जानकर कि केवल एक किलोमीटर ही बचा था, हम सब ने एक नई शक्ति की लहर को महसूस किया।

सूरज एक घंटे के बाद अस्त होने वाला था और हम उस मोहक दृश्य को देखने से चूकना नहीं चाहते थे। यह वास्तव में सभी चढ़ाईयों में

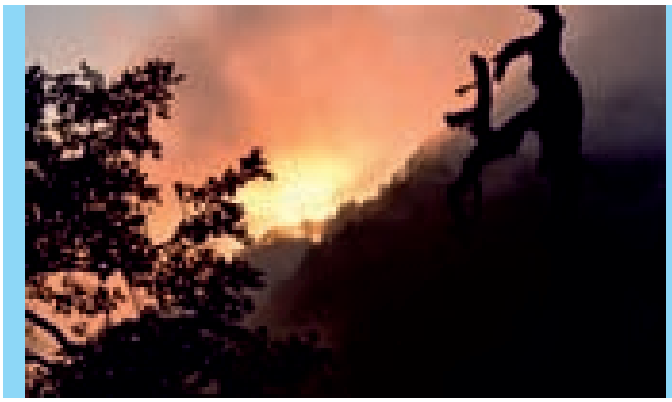

सबसे खड़ी चढ़ाई थी, और हम हर छोटे मोड़ पर थक-कर विश्राम ले रहे थे।

शिखर के शीर्ष पर दृश्य अवास्तविक था, दूर-दूर तक मैदान था, जिसके चारों ओर चट्टानें फैली हुई थीं, जो एक तरफ बर्फ से ढके पहाड़ों से घिरा हुआ था, जबकि दूसरी ओर धर्मशाला शहर के सुहावने नज़ारे थे। सूर्य लगभग अस्त हो चुका था, और पूरे आकाश में नारंगी रंग की छाया थी।

हम घास के किनारों पर फैले कई टेंटो को देख सकते थे, वहाँ साथी पर्यटक ब्लूटूथ स्पीकर के साथ संगीत बजा रहे थे, एक बड़ा टेंट भी था जो एक किचन की तरह था। हम किचन टेंट के पास इकट्ठे हो गए जहाँ हमें गरमा-गर्म चाय के साथ पकौड़े परोसे गए, जो कुछ ही सेकंड में ठंडे हो गए।

शाम के लगभग 7 बज रहे थे, हर घंटे तापमान गिर रहा था। कुछ यात्रियों ने पूछा कि हम लकड़ी जलाकर हाथ ताप सकते हैं क्या, परंतु हमे यह बताया गया कि वन विभाग से स्पष्ट निर्देश थे कि पेड़ काटकर लकड़ी नहीं जलाई जाएगी।

जैसा कि रात के खाने की तैयारी जोरों पर थी, हमें स्लीपिंग बैग के साथ-साथ अपने-अपने टेंट आवंटित कर दिए गए। मेरे बैठने के लिए तम्बू काफी बड़ा था। मैंने अपना बैग टेंट के अंदर रखा और थोड़ा टहलने चला गया। बेहद अंधेरा था, साथी ट्रेकर्स की केवल कुछ फ्लैश-लाइट दिखाई दे रही थी और दूर से हम धर्मशाला में घरों की रोशनी को टिमटिमाते हुए देख सकते थे। जैसे ही बादल साफ हुए, चाँद की रोशनी ने पूरे पहाड़ों को रोशन कर दिया। दूर पहाड़ों पर बर्फ चंद्रमा की रोशनी से चांदी की तरह चमकने लगी। रात का खाना 8 बजे परोसा गया, जिसमें दाल, चावल, सब्जी और रोटियां शामिल थीं। कोई दूसरा अनुमान नहीं लगा सकता था कि खाना परोसते ही ठंडा हो गया।

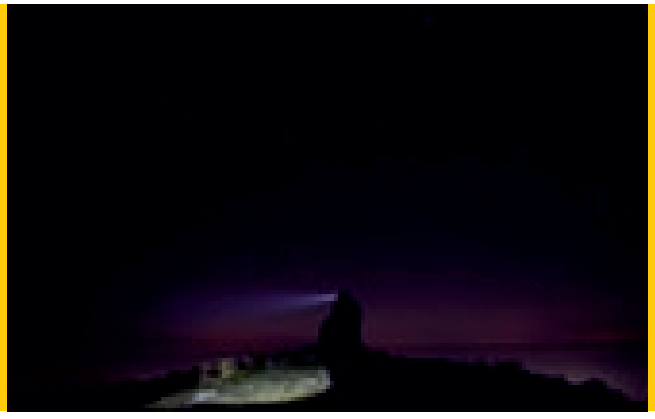

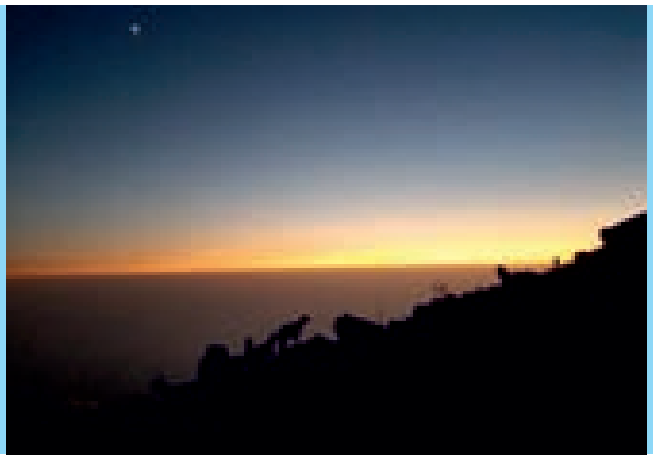

रात के खाने के बाद, मैंने कई थके हुए पर्यटकों को आराम करने के लिए अपने-अपने टेंट में वापस जाते देखा, जबकि कुछ टहलने निकल गए, मैंने साफ आसमान का अधिकतम लाभ उठाना चाहा और अपना कैमरा निकाल कर "एस्ट्रो-फोटोग्राफी" करने चल पड़ा।

एस्ट्रो-फ़ोटोग्राफ़ी एक प्रकार की फ़ोटोग्राफ़ी है, जहाँ हम आकाशीय पिंडों की फ़ोटो लेने का प्रयास करते हैं, चाहे वह तारे हों, चाँद हों, नक्षत्र हों। सर्वश्रेष्ठ शॉट प्राप्त करने के लिए, यह आवश्यक है कि बादल का आवरण या किसी भी प्रकार का प्रकाश-प्रदूषण न हो, जो गुणवत्ता को प्रभावित कर सकता है तस्वीर का।

मेरे संग्रह के लिए अच्छे शॉट्स प्राप्त करने के लिए सेटिंग एकदम सही थी। मुझे एक आदर्श स्थान मिला, जहाँ मैंने अपने सेट अप की व्यवस्था की। एस्ट्रो-फ़ोटोग्राफ़ी शॉट्स प्राप्त करने के लिए एक और महत्वपूर्ण बात, धैर्य रखना है, क्योंकि प्रत्येक शॉट को विकसित होने में 30 सेकंड लगते हैं, इसलिए आपको यह पता लगाने के लिए 30 सेकंड तक इंतजार करना होगा कि आपके द्वारा ली गई तसवीर अच्छी है या नहीं। जीरो डिग्री सेल्सियस पर 30 सेकंड़ उस रात 3 मिनट की तरह महसूस हो रहे थे। मनचाहे शॉट्स लेने के बाद, मैंने अपना सारा सामान पैक किया और अपने टेंट पर लौट आया।

शिविर में मैंने जो रात बिताई वह शायद अब तक की सबसे लंबी रात थी। मैं इतना थक गया था कि किसी भी नियमित जगह पर मुझे नींद आ जाती। जगह इतनी शांत थी, कि आप घड़ी कि आवाज़ के साथ खुद के दिल की धड़कन भी सुन सकते थे।

मैंने अपने आप को स्लीपिंग बैग के अंदर पैक कर लिया। उस रात एक खुले मैदान में आसमान के नीचे, ऐसे सुनसान स्थान पर सोना एक अविस्मरणीय अनुभव था। यह एक ऐसा एहसास था जो शब्दों में बयां करना उचित नहीं था।

मैं सुबह 4 बजे उठा और धैर्यपूर्वक सूर्योदय की प्रतीक्षा करने लगा। मैंने अपने टेंट की ज़िप खोली और कुछ मिनटों के लिए तारों को निहारता रहा। सुबह 5 बजे मेरा धैर्य मुझ पर हावी हो गया, जब मैंने सैर पर जाने का फैसला किया। उस समय कोई नहीं उठा था। एक अलग ही तरह की शांति थी। जैसे जैसे सूर्य उदय होने लगा, आकाश में पंछी अपनी मधुर आवाज़ में दिन का स्वागत करने लगी।

भोर के समय के नज़ारे उतने ही शानदार थे, जितने कि पिछली शाम के समय के थे। जैसे ही धीरे-धीरे सूरज पहाड़ों के पीछे से निकलने लगा, चारों ओर आसमान सुनहरा हो गया।उस सुबह सूरज की किरणों से ओस की छोटी-छोटी बूंदें घास पर छोटे-छोटे मोतियों की तरह चमकने लगीं। एक घंटे तक धूप सेंकने के बाद भारी मन से हमने नीचे उतरना शुरू किया। नीचे उतरना उतना कठिन नहीं होता, लेकिन एक यात्रा के अंत होने की जो मायूसी होती उससे वो जोश और उत्साह नहीं रहता।

नीचे उतरने में हमें 5 घंटे लगे, बेस कैंप पहुंच कर हमने अपना समान लिया और मैक्लोडगंज बाजार की ओर प्रस्थान किया। वहाँ से टैक्सी ले कर धर्मशाला बस अड्डे आ गया, 3 बजे की बस में सवार हो कर शाम तक पठानकोट। पठानकोट से लखनऊ की ट्रेन रात के 10 बजे की थी, और लखनऊ पहुचने का समय अगले दिन दोपहर का था।

यह अनुभव अपने तरह का अनूठा था, पहला ट्रेक, पहली एकल यात्रा, पहली बार रात भर के लिए कैम्पिंग इत्यादि। यह अनुभव मुझे हमेशा याद रहेगा, इस सफर में मैंने न सिर्फ खुद को महसूस किया बल्कि पर्यावरण के हर एक पहलू से काफी करीब से वाकिफ होने का सौभाग्य प्राप्त किया।

रात में कब नींद आ गई पता ही नहीं चला। अगले दिन सुबह उठा तो खिड़की से बाहर देखते मन में फिर वही सवाल था- अगली बार कहाँ?

केनरा पेरोल पैकेज बचत खाते की विशेषताएं और लाभ

केनरा बैंक का पेरोल पैकेज बचत बैंक खाता को खोलते समय किसी प्रारंभिक जमा की आवश्यकता नहीं है। न्यूनतम औसत मासिक शेष राशि रु.1000 होनी चाहिए। न्यूनतम औसत मासिक शेष राशि नहीं रखने पर रु.100 की पेनाल्टी लगेगी। पेरोल पैकेज में खाते खोलने पर ग्राहकों को एनईएफटी/ आरटीजीएस/आईएमपीएस नि:शुल्क सुविधा मिलती है और ग्राहकों को एक नि:शुल्क व्यक्तिगत चेक दिया जाता है, जिसमें 200 चेक पन्ने होते हैं। साथ ही, यह खाता खोलते समय, ग्रहकों को अपनी तस्वीर के साथ एक नि:शुल्क वैयक्तिकृत प्लेटिनम डेबिट कार्ड प्रदान किया जाता है। एसएमएस अलर्ट, इंटरबैंक मोबाइल भुगतान प्रणाली और नेट बैंकिंग केनरा बैंक के पेरोल पैकेज बचत बैंक खाता रखने वाले सभी ग्राहकों के लिए उपलब्ध है और पूरी तरह से नि:शुल्क है।

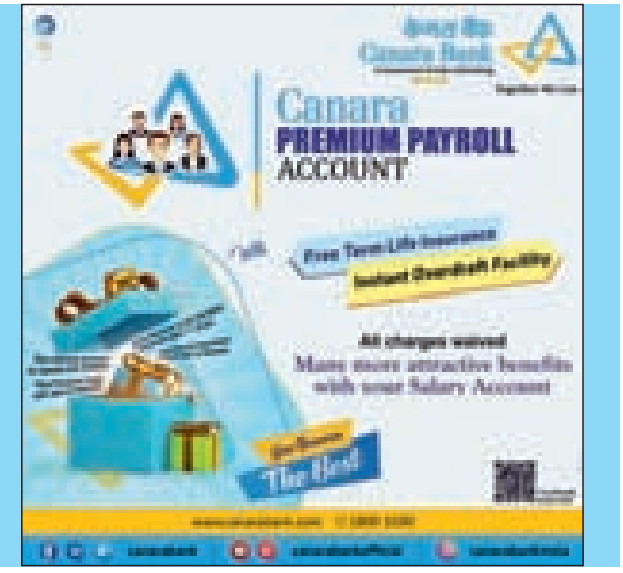

हास्यप्रधान आलेख

बैंकर की रसोई

बिनय कुमार मिश्रा
प्रबंधक
कलाईकुण्डा शाखा, क्षेत्रीय कार्यालय, हावड़ा

आवश्यकता ही आविष्कार की जननी होती है। अगर इस वाक्य का अर्थ मैंने सही शब्दों में समझा तो इसका श्रेय अनुशासन की उस जीवन शैली को जाता है जिसे बैंक की नौकरी ने हमें सिखाया। बात उन दिनों की है जब मैं बैंक में एक लिपिक के तौर पर नियुक्त ही हुआ था। एक अनजान शहर जिसका नाम भी पहले नहीं सुना था पर बेहद दोस्ताना। शहर ने कैसे हमें अपना बना लिया पता भी न चला। शाखा में उपस्थित होने से पहले आपा-धापी में हम 2-3 नवनियुक्त साथियों - मैं, सौरभ और अखिल ने एक अच्छा सा पी.जी. ढूंढ ही लिया। घर से दूर पहली बार निकले हम 2-3 साथी पी.जी. वाले अंकल की तरफ ऐसे ही निहार रहे थे जैसे मानो वही हमारे तारणहार हों। माता-पिता के बाद अब जो हमारे जीवन की नैया पार लगाने वाले थे, वो पी.जी. वाले अंकल थे, 1 दिन पहले तक जिन्हें हम जानते भी न थे उनसे अब अपने जीवन की मूलभूत आवश्यकताएं - रोटी, कपड़ा और मकान आदि घर जैसी सुविधाओं की चाह रखते थे।

बैंक जैसी उत्तम नौकरी मिलने की खुशी में शुरुआत के कुछ हफ्ते किसी परिकथा जैसे थे। आर्थिक स्वतंत्रता और समाज में मिल रही इज्जत से मन प्रफुल्लित था। कार्य अवधि के बाद का समय हम सभी साथी घूमने फिरने में बिताने लगे। धीरे - धीरे हम महसूस करने लगे थे कि पी.जी. अब हमें नुकसान पहुंचाने लगा है। शाखा से घर आने में विलंब हो जाए तो ठण्डे खाने की चिंता, सही समय पर धुले कपड़े न मिलने की चिंता, छुट्टी के दिन भी वही घिसा पिटा भोजन, भोजन में वही तैरता तेल जो शायद पी.जी. वाले अंकल को घी महसूस होता था और रोज रोज वही बोरियत भरा भोजन अब हमें जबरदस्त तरीके से उबाने लगा था। कल तक जो पी.जी. हमें पालनहार लग रहा था, आज वही पी.जी. कारावास लग रहा था। हम सभी मित्र अब कुछ भी करने को तैयार थे पर इस पी.जी. में रहना नहीं चाहते थे। बैंक की 8 घण्टे की नौकरी के बाद जैसा भोजन हम चाह रहे थे वैसा भोजन न हमें अपने पी.जी में मिल रहा था और न वैसे भोजन की उम्मीद हमें आस पास के किसी पी.जी. से थी।

अब हम असंतुष्ट साथियों के पास पी.जी. की नाकाफी सुविधाओं के त्याग कर नये स्वतंत्र घर के अलावा कोई उपाय न बचा। जब यह तय हो गया कि आरामदायक जीवन जीने के लिए हमें पी.जी. ही छोड़ना पड़ेगा तो हमने नये आशियाने की तलाश शुरु कर दी। आस पास के मोहल्लों के किराना दूकानें, पान की दूकानें और होटलों से हमने नये किराये के मकान की खबर यूं निकालनी शुरु की मानो हम रॉ के एजेण्ट हों और देश की सबसे बड़ी जिम्मेदारी हमारे कंधों पर हो। इस मिशन में हमने कई अच्छे घर मिले। कुछ घर इतने मंहगे थे कि हमने किराये की रकम सुनते ही नौ-दो-ग्यारह हो लेना उचित समझा। कुछ घर किफायती लगे तो उनमें मकान मालिक सिर्फ किसी परिवार वाले को ही किरायेदार रखना चाहता था। उस दिन हमें इस बात का अहसास हुआ कि विवाह कितना जरूरी है न सिर्फ स्वयं के जीवन यापन के लिए बल्कि किराये पर घर लेने के लिए। एक मकान मालिक तो बोला कि विवाह कर आओ, यह रही घर की चाभी। नादान था। भला एक घर किराये पर लेने के लिए हम अपनी बली दे देते क्या?

खैर पूरे 27 दिनों के जासूसी अभियान का वह सुखद क्षण आ ही गया जिसका हम सब बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। पास के मोहल्ले में एक रेलवे कर्मचारी का खाली मकान हमें किराये पर मिल गया। तीन लोगों में बंटने के बाद किराया भी बेहद किफायती ही महसूस हो रहा था। घर का सबसे पसंदीदा कोना जिस पर हमने सबसे पहले गौर किया, वह था रसोईघर एक नज़र में पसंद आने वाली उस रसोईघर में वैसे तो कोई खास बात न थी, पर बर्तन, चूल्हे रखने के अलावा बर्तन धोने की भी उत्तम व्यवस्था थी। ताज्जुब की बात तो यह थी कि भले ही हमने पी.जी. छोड़कर स्वतंत्र रूप से रहने का निर्णय ले लिया हो पर आज हम उस रसोई का चयन कर रहे थे जिसमें हमें अपने जीवन के कुल 5 मिनट भी इससे पहले नहीं बिताये थे। हममें से किसी को

भी खाना बनाने यहां तक कि पानी उबालने का भी पूर्व में कोई अनुभव न था।

पी.जी. को आखिरी बार अलविदा कहने से पहले हम अपनी गृहस्थी जोड़ने में लग गए। आनन फानन में हमने नए घर के लिए चारपाई, गद्दे, चादर से लेकर मच्छरदानी तक की खरीदारी कर ली। हमारी सूची में अब रह गई थी सबसे महत्वपूर्ण चीजें – रसोईघर के सामान। समस्या अब यह नहीं थी कि यह खरीदारी करनी थी बल्कि यह भी कि हमें एक रसोई की जरूरतों का भी उतना ही अनुमान था जितना हम फिल्मों में देखा करते थे। काफी जांच पड़ताल के बाद हमने एक बर्तनों के एक थोक विक्रेता का पता लगाया। शाखा से छूटने के बाद हम नौसिखिये सीधे बर्तनों की दुकान में पहुंचे। दुकानदार हमसे दो चार सवाल जवाब में ही समझ गया था कि हमें रसोई क्या, रसोई में काम आने वाले बर्तनों का भी कोई अता–पता नहीं है। एक कुटिल मुस्कान के साथ अब दुकान का सबसे तेज तर्रार सेल्समैन हमें गोल मटोल बातों में फंसाने लगा। कहने को हमारी जरुरतें सिर्फ 3 लोगों की रसोई की थी पर सेल्समैन के स्वप्नलोक की रसोई में हम ऐसे खोए कि हमने न सर्फ तीन अलग – अलग नाप की कड़ाही ले ली बल्कि डिनर सेट, चम्मचों का सेट, थालियों का सेट और न जाने क्या–क्या हम खरीदते चले गए। रसोई में इस्तेमाल होने वाले हर बर्तन के अब हमारे पास दर्जन भर सेट थे। मामला कुछ यूं बिगड़ चुका था कि हम 3 साथी जो सिर्फ 3 थैलों में गृहस्थी समेटने का मन बना कर गये थे, अब दो रिक्सों में रसोई का सामान भर चुके थे। दुकानदार की तिजोरी हमने कुछ यूं भर दी थी कि उसने बर्तनों को हमारे घर पहुंचाने के लिए भी तैयार हो गया था। बर्तनों के लश्कर के साथ जब हम अपने नये घर पहुंचे तो मोहल्ले में हंगामा मच गया। हमें महसूस हुआ कि आस पड़ोसी की सारी भाभियां और चाचियां हमारे सामान को देख कर ठिठोलियां करने लगीं। हमें उस पल भी शायद यह अंदाजा न लगा कि दुकानदार ने अच्छी तरह हम नौसिखियों की जेब काट ली है और हमें जरुरत से कहीं ज्यादा सामान थमा दिया। खैर इन सभी हास्य विनोद के बाद हमने रसोई में सामान को रख दिया।

अब हमारा संपूर्ण ध्यान खाने बनाने वाली महिला तलाश करने में लगाना शुरु किया। साक्षात्कार का ऐसा दौर शुरु हुआ कि हम न सिर्फ हतप्रभ रह गये बल्कि बर्तनों की खरीदारी के बाद हमें मंहगाई से सीधा–सीधा साक्षात्कार खाने बनाने की सेवा प्रदान करने वाली महिलाओं ने करा दिया। पारिश्रमिक हमारे एक महीने की तनख्वाह का करीब – करीब 80 प्रतिशत था। दो पल के लिए हमने तो यह भी सोच लिया था कि अगर बाजार के हालात ये हैं तो चलो पार्ट टाइम में हम क्यूं न यह काम भी शुरु कर दें। करीब 18 महिलाओं के साक्षात्कार के बाद यह तय हो गया कि अब भोजन हमें ही बनाना

होगा। समस्या बड़ी ही विकट थी। खाना बनाने का पूर्व का कोई अनुभव हमें नहीं था। खैर मरता क्या न करता। हम साथियों ने आखिरकार पी. जी. छोड़ ही दिया और रविवार की एक सुहानी सुबह हम अपने नये घर में आ धमके। दोपहर का भोजन हमने बाहर ही कर लिया और तय हुआ कि आज रात का भोजन हम स्वयं बनाएंगे। हमने अब रुख किया किराने की दुकान का। बर्तनों की खरीदारी के अनुभव से हमने सीखा और इस बार किराने के सामान की तालिका हमने घर बैठकर बना ली थी। बड़े ही आत्मविश्वास के साथ जब हमने सामान की तालिका जब किराने वाले को सौंपी तो दुकानदार ने हमें ऊपर से नीचे तक यूं घूरा मानो हम दूसरे ग्रह के प्राणी हों और अभी–अभी इस धरा पर अवतरित हुए हो। दो मिनट के लिए हमें लगा मानो हमने तालिका ही गलत बनाई है। अब दुकानदार ने हमसे अपने पहले शब्द कहे–भैया कितना लेना है यह सब सामान। हमें अब अहसास हुआ कि जल्दबाजी में तो हम यह लिखना ही भूल गए कि कौन सा सामान किस मात्रा में हमें लेना है। खैर हमने अब बताना शुरू किया – आटा–10 किलो, चावल 10 किलो, जीरा आधा किलों, सौंफ आधा किलो, तेजपत्ता आधा किलो इत्यादि। हालांकि हमने महसूस किया कि दुकानदार हमारी मात्रा सुनकर भौचक था। कई बार उसे पास की दुकान से भी चीजें लानी पड़ी। लेकिन उसने हमें हमारी गलती बताने की जरुरत नहीं समझी। परिणाम वही ढाक के तीन पात। हमारे पास फिर से इतनी ज्यादा मात्रा में सामान हो गया कि फिर से रिक्सा करना पड़ा। पूरे घटनाक्रम में हमने सिर्फ एक काम सही किया था कि हमने गैस का वैध कनेक्शन अपने नाम पर ले लिया था।

अब रोमांच की वह घड़ी आ चुकी थी जब हम तीन साथी खाना बनाने के लिए पूरी तरह तैयार थे। हमने तय किया कि आज हम दाल, चावल और रोटी बनाएंगे। उन दिनों इंटरनेट काफी मंहगा हुआ करता था। यू–ट्यूब और गूगल की किसी भी प्रकार की सहायता हमें प्राप्त न थी। लिहाजा भोजन हमें सुनी–सुनाई विधि से स्वयं बनाना था। रोटी

बनाने का जिम्मा मुझे दिया गया। सौरभ सब्जी और चावल बनाने के लिए तैयार था और अखिल हम दोनों की सहायता करने वाला था। हमने भुजिया बनाने के लिए करेले काटने शुरु किए। साथ ही साथ हमने दाल कुकर में चढ़ा दी थी। करेले कट चुके थे पर हमारी अपेक्षा के विपरीत 20 मिनट बाद भी दाल की सीटी टस से मस न हो रही थी। गहन अध्ययन के बाद हमें पता चला कि कूकर की रबर तो ढक्कन में लगाना ही भूल गये। हे ईश्वर! यह क्या हो गया? खैर अब कुकर की रबर लगा कर 15 मिनट के भीतर हमारी रसोई में सबसे मधुर ध्वनि कुकर ने जब सीटी के रुप में बजाई तो हमारी आत्मा वहीं आधी तृप्त हो गई। अब दाल छौंकने के लिए हींग और अन्य सामग्री को चमचे पर जब हमनें गर्म करना शुरु किया तो चन्द मिनटों में छौंक चमचे से छिटक-छिटक कर कुछ इस तरह उछलने लगा जैसे चुनाव की किसी रैली में अतिउत्साही कार्यकर्ता हो। इसी बीच छौंक में आग लगी गयी। जैसे तैसे बड़ी मुश्किल से हमने आखिरकार दाल में छौंक लगा ही दी। अब बारी रोटी की थी। मैने रोटी के लिए जैसे-तैसे आंटा गूंथ ही डाला। बारीकियां तो पता न थीं। पता नहीं कैसा आंटा गूंथा था कि रोटी पतली बेल ही नहीं पा रहे थे हम। बारी बारी से हम तीनों ने गोल रोटी बेलने की जी-तोड़ कोशिश की। कभी आस्ट्रेलिया, कभी दक्षिण अफ्रीका तो कभी चीन के नक्शे सी बनती रोटी ने मानो गोल न होने की कसम खा रखी हो। आखिरकार हमें हार कर रोटी को इसी रूप में सेंकने का निर्णय लेना पड़ा। रोटी को तवे पर सेंकने के बाद हमने गैस की आंच में रोटी को फूलाना था और जैसे ही रोटी को हमने गैस की सीधी आंच दिखाई ही थी कि रोटी ने आग पकड़ ली। मानव सभ्यता के इतिहास में हम शायद पहले बावर्ची बन चुके थे जिन्होंने जलती रोटी का आविष्कार कर डाला था। घबराहट में उस जलती हुई रोटी को हमें पानी की बाल्टी में बुझाना पड़ा। हमारा रोटी बनाना न सिर्फ अब हमारी सेहत बल्कि घर की सुरक्षा के लिए भी खतरा बन चुका था। लिहाजा हमने आज का खाना बिना रोटी के ही खाना तय किया। कटे हुए करेले अभी भी हमारी ओर बड़े करुणा के भाव से निहार रहे थे, मानो कह रहे हों कि हमें बख्स दो। पर करेले की भुजिया तो बनानी ही थी। कड़ाही में तल कर हमने किसी तरह करेले की जली-भुजी भुजिया बना ही ली।

भोजन बनाने के कार्यक्रम को शुरु हुए 2 घण्टे बीत चुके थे। पेट में चूहे कूद रहे थे और अब चावल ठीक-ठाक बनाना ही हमारा एक मात्र उद्देश्य रह गया था। खैर इस बार हमने रबर सुनिश्चित कर नारायण का नाम लेते हुए चावल कुकर में चढ़ा ही डाला। आधे घण्टे लगे पर आज चावल ने हमारी लाज रख ली। ढाई घण्टे की कड़ी मशक्कत के बाद आखिरकार बेहद लजीज दाल और चावल का स्वाद हमने चखा। करेले की भुजिया बेहद कड़वी थी। एक तो करेला ऊपर से नीम चढ़ा कहावत का सही अर्थ हमें अब समझ आ चुका था। फिर भी अंतःकरण तृप्त हो चुका था। हम इतना ज्यादा थक गए थे कि हमने मच्छरदानी लगाने की जहमत उठाने के बजाय, मच्छरों को अपना रक्त दान करना उचित समझा।

अगली सुबह हमें अहसास हुआ कि एक घर की गृहलक्ष्मी वास्तव में कितनी अहम जिम्मेदारी का निर्वाह करती है। भोजन बनाने जैसा अहम और बेहद कठिन कार्य कैसे हंसते मुस्कुराए हमारी माताएं, बहनें प्यार से न सिर्फ पूरा करती हैं बल्कि हमारी फर्माइशों का भी ध्यान रखती हैं। आज हमारे मन में गृहलक्ष्मी स्वरूपा देवी के लिए सम्मान और भी ज्यादा बढ़ गया था।

हमने अगली सुबह का भोजन होटल में किया। शाम का भोजन बनाने का जोखिम उठाने की क्षमता हममे से किसी की भी न हो रही थी। अपने एक स्थानीय मित्र के चाचा-चाची के शरणागत हो कर भोजन बनाने की विधि सीखने का प्रण लेकर हम उस शाम चाचा-चाची के घर पहुंच गए। पिछली शाम का सारा वाकया सुन कर न सिर्फ चाचा और चाची बल्कि उनके घर पधारे एक अतिथि भी हंस-हंस हमारे मजे ले रहे थे। खैर इसके बाद हमें भोजन बनाने की कई गुप्त रहस्यों का पता चला। जैसे अच्छी रोटी के लिए सबसे अहम सही आटा गूंथना जरूरी है। दाल छौंकने के लिए कढ़ाई भी इस्तेमाल की जा सकती है। करेले की भुजिया बनाने से पहले कुछ देर हल्दी में लपेट कर छोड़ देना चाहिए। इन गूढ़ रहस्यों को जानने के बाद आखिरकार एक हफ्ते के अंदर हम भोजन बनाना सीख ही गए।

हम तीनों मित्र करीब 3 साल तक उसी शहर में एक साथ रहे। हम अपना भोजन अपनी पसंद से खुद बनाने में सक्षम हो चुके थे। 3 साल बाद जब हमारा तबादला अलग - अलग शहरों में हुआ तब तक हम भोजन बनाने में पारंगत हो चुके थे। परिस्थितियों ने हमें सही मायनों में स्वावलंबी बना दिया था और हमारा आत्मविश्वास भी काफी बढ़ चुका था। कड़वे करेले, जलती रोटी और अधपके चावल हालांकि अब भी हमारी स्मृति में ताजा हैं।

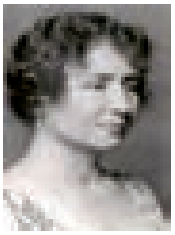

विश्वास वो शक्ति है
जिससे उजड़ी हुई दुनिया में भी
प्रकाश किया जा सकता है।
– हेलेन केलर

कविता

दर्पण

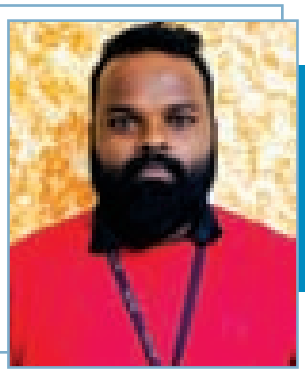

बिनोद कुमार बेदिया
वरिष्ठ प्रबंधक
तुपुदाना, रांची

सबको होती सुन्दर दिखने की अभिलाषा,
पर कोई नहीं समझ पाया दर्पण की परिभाषा,
दर्पण है दिखलाती हमें सच्चा चरित्र,
हमें बताती कौन है दुश्मन और कौन है मित्र,
मिलो दर्पण से एकांत में, जो खुद को जानने की जिज्ञाषा ।।

लाख छुपाओ अपने.गमों को,
दिखाकर अपना मुस्कुराता चेहरा,
दर्पण वो है जो सच्चाई दिखलाये,
कि तुम्हारा घाव कितना है गहरा।
कितना भी छू लो बुलंदियों को मगर,
खुद पर होता है उम्मीदों का पहरा,
पर जब भी दर्पण के समक्ष खड़े हो,
लगे जैसे वक़्त वही पर है ठहरा।।

कहने को तो लोग सिर्फ चेहरा है देखते,
पर दर्पण में पूरा व्यक्तित्व है बस्ता,
जो तू रोये तो दर्पण रोता,
जो तू हँसे तो दर्पण हँसता,
अमीरी-गरीबी से नाता नहीं दर्पण का,
सिर्फ सच्चाई बताये, दर्पण महंगा हो या सस्ता।।

हास्य रस में,
देख-देख जी भरा ना उसका,
कली खिल, पुष्प बन चुका है कबका,
परत दर परत जोश उतरे श्रृंगार चहरे से,
दर्पण भी खुद मुकर जाए सबका।।

सौंदर्य रस में,
दर्पण देख जो तूने किया श्रृंगार,
जैसे खिल उठे चमन और आयी बहार,
यौवन और हुस्न बन चुके जैसे अंगार,
हसरत है मेरी कि बन जाऊं तेरे गले का हार,
भर कर आगोश में घूम लूं सारा संसार,
दर्पण देख जो तूने किया श्रृंगार।।

ना होता कोई कुरूप यहाँ,
सब में होती है सुंदरता,
भूल कर सारा अभिमान अपना
दर्पण सिखाती हमें मानवता।।

सबको होती सुंदर दिखने की अभिलाषा,
पर कोई नहीं समझ पाया दर्पण की परिभाषा।।

यात्रा वृत्तांत

चलें दक्षिण की ओर

रोहित कुमार
परि.अधिकारी
करीमनगर शाखा II, क्षेत्रीय कार्यालय, वारंगल II

मैं हरियाणा के शहर यमुनानगर से हूं और इन दिनों तेलंगाना शहर के करीमनगर में परिविक्षाधीन अधिकारी के पद पर कार्यरत हूं। मैंने अपने जीवन में कई यात्राएं की हैं पर मेरी दक्षिण भारत की यात्रा सबसे यादगार रही।

दक्षिण भारत की खूबसूरती के बारे में सुना तो बहुत था लेकिन कभी जाना हुआ नहीं था, तो हुआ यूं कि इस साल मैंने सोचा क्यों ना नववर्ष की शुरुआत तीर्थ नगरी रामेश्वरम से की जाए, तो बस सोचना क्या था। मैं, मेरी पत्नी और हमारे 2 साल की नटखट बेटी शिवी निकल पड़े अपनी पहली दक्षिण यात्रा के लिए।

हमने अपनी यात्रा की शुरुआत वारंगल से चेन्नई तक ट्रेन में की, वहां हमने मरीना बीच की खूबसूरती का लुफ्त उठाया। यह समुद्र तट भारतवर्ष का सबसे लंबा समुद्र तट है। हमने हरिद्वार में गंगा के जल में डुबकियां तो बहुत लगाई थी मगर समुंदर की लहरों का अनुभव पहली बार किया। जैसे ही आप समुद्र के किनारे पहुंचते हैं समुंदर की वह तेज लहरें और आवाज दूर से ही आपका मन मोह लेती हैं। हमने काफी समय मरीना बीच में ही बिताया, फिर शाम को हम निकल पड़े चेन्नई से रामेश्वरम की तरफ।

1 जनवरी 2023, नव वर्ष की सुबह हम रामेश्वरम पहुंच गए। होटल में चेक इन के बाद हम चल पड़े मंदिर की ओर सबसे पहले हमने अग्नि तीर्थम में स्नान किया फिर मान्यता अनुसार 22 कुंडो में स्नान के पश्चात हम पहुंचे भव्य विशाल रामनाथ स्वामी भगवान के दर्शन करने। इस मंदिर की सुंदरता अतुलनीय है, हमने इस मंदिर के बारे में सुना तो कई बार था मगर यह अनुभव पहली बार किया।

मंदिर में दर्शन के बाद हम निकल पड़े धनुष्कोटी, जहां से श्रीलंका मात्र 20 किलोमीटर दूर रह जाता है। इस जगह की खूबसूरती का वर्णन शब्दों में करना मुश्किल है, वहां होना ही अपने आप में बहुत सुखदायी है। समुद्र की लहरें और आपका अपने देश के अंतिम छोर पर होने का एहसास बहुत ही अलग होता है। धनुष्कोटी से रामेश्वरम वापस आकर हम पूर्व राष्ट्रपति श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के घर कलाम हाउस में गए। यह हमारे लिए बहुत ही गौरव की बात थी कि हम द मिसाइल मैन ऑफ इंडिया के नाम से मशहूर और हम सबके प्रेरणा स्त्रोत पूर्व राष्ट्रपति जी के जन्म स्थान को देख पाए और उनके बारे में बहुत कुछ जानने को मिला।

2 दिन रामेश्वरम में रुकने के बाद हम एक और सुंदर शहर मदुरै पहुंच गए। मदुरै प्रसिद्ध है अपने विशाल मीनाक्षी मंदिर के लिए। सुबह हम तीनों पारंपरिक दक्षिण भारतीय परिधान में इस विशाल मंदिर में दर्शन करने पहुंचे। जितना सुना था यह स्थान उससे भी कहीं ज्यादा विशाल और भव्य है। दक्षिण भारतीय शैली में बने इस मंदिर की सुंदरता अविश्वसनीय है। यह मंदिर इतना बड़ा है कि इसमें घूमने के लिए 4 से 5 घंटे भी कम है। प्राचीन काल में बिना किसी अत्याधुनिक मशीनों के इतनी सुंदर नक्काशी करना कितना मुश्किल रहा होगा, यह मंदिर हमारे भारतवर्ष के गौरवशाली इतिहास को दर्शाता है।

एक रात मदुरै में बिताने के बाद, हम चल पड़े अपने अगले गंतव्य मुन्नार की ओर इस रास्ते में सड़क के दोनों और खूबसूरत नारियल के पेड़ देखने को मिलते हैं जो इस सफर को बहुत ही मनोरंजक बना देते हैं। लगभग 5 घंटे की यात्रा के बाद हम मुन्नार पहुंच गए। हमने उत्तर भारत के बर्फ से लदे पहाड़ तो कई बार देखे थे लेकिन चाय की पत्ती

से लिपटे मखमली पहाड़ पहली बार देखने का अनुभव हुआ। हमारा होटल चाय बागान के बिल्कुल बीच में था जहां हमें प्रकृति के बीच रहने का अनुभव प्राप्त हुआ। हम मुन्नार में 4 दिन रूके। मदुरै से मुन्नार के 5 घंटे का सफर होने के कारण हम काफी थक चुके थे तो इसलिए हमने पहले दिन आराम करने का निर्णय लिया। अगले दिन सुबह हम मुन्नार घूमने निकल पड़े। सबसे पहले हम वहां के विश्व प्रसिद्ध टी म्यूजियम देखने गए। वहां पर हमने चाय पत्ती बनने की प्रक्रिया देखी और भारत में चाय का इतिहास जानने को मिला। वहाँ हमें जानने को मिला कि ब्लैक टी और ग्रीन टी के अलावा भी कई प्रकार की चाय होती है जैसे की Rose Tea, White Tea, Cardamom Tea आदि। वहाँ हमने चाय पी और घर के लिए भी विभिन्न प्रकार की चाय पत्ती खरीदी। यहां से हम मुन्नार की प्रसिद्ध चॉकलेट फैक्ट्री देखने के लिए चले गए। वहां हमने देखा कि किस प्रकार चॉकलेट को मशीनों द्वारा बनाया जाता है। चॉकलेट तो सब बच्चों को पसंद होती है तो वहां हमारी बेटी शिवी ने भी अपनी शॉपिंग करी और कई प्रकार की चॉकलेट खरीदी। इसके बाद हम हस्तशिल्प केंद्र गए जहां हमने कारीगरों को हाथ से कांचीपुरम साड़ी बनाते देखा,मेरी पत्नी को वो साड़ियां बहुत पसंद आई और उन्होंने अपने लिए 2 साड़ी खरीदी। इसके बाद हम होटल वापस पहुंचे और डिनर करके सो गए।

अगले दिन हम एलिफेंट सफारी करने गए जहां की हमारी बेटी शिवी ने पहली बार इतने नजदीक से हाथी को देखा। वहां पर एक हास्यास्पद बात हुई, एक छोटे हाथी ने अपनी सूंड से शिवी के गाल को छू दिया। यह बात शिवी को आज भी याद है और उसे याद करके वह बोलती है पापा, हाथी राजा ने छू दिया।

वहां से हम निकले बोटिंग करने लेकिन हमारी बेटी छोटी होने के कारण हमने बोटिंग नहीं की और वहां के सुंदर नजारों का आनंद लिया। कुछ नजारे तो ऐसे भी थे जिन्हें आज तक हमने सिर्फ फिल्मों में और पेंटिंग में ही देखा था। यह सब देखते हुए हमें रात हो गई और फिर बाकी चीजें हमने अगले दिन के लिए छोड़ दी।

अगली सुबह हम जल्दी ही निकल पड़े क्योंकि हमें सूर्योदय देखना था इसके लिए हम सुबह निकल गए। बहुत ही कठिन रास्ते से होते हुए हम सनराइज प्वाइंट पर पहुंचे वहां का खूबसूरत नज़ारा देखकर सफर की सारी थकान मिट गई। अब मुन्नार में हमारे पास ज़्यादा वक़्त नहीं था तो हमने केरल के प्रसिद्ध लोकल नृत्य कत्थकली देखने का मन बनाया। क़ई खूबसूरत नज़ारे देखते हुए हम नाट्य स्थल पर पहुंचे, कलाकारों का अद्भुत नाट्य देखकर हमें अपने भारतीय होने पर बहुत गर्व हुआ, वहाँ देश विदेश से आए हुए सैलानियों ने हमारे भारतीय परंपराओं की काफ़ी प्रशंसा की।

एक और दिन ख़त्म हुआ, अब हमने यहाँ से अपना बस्ता उठाया और हम निकल पड़े अपने आख़री सफ़र कोयंबटूर की ओर। मुन्नार की घुमावदार पहाड़ियों में से होते हुए हम आदियोगी मूर्ति देखने गए जो कि कोयंबटूर में स्थित है। काफ़ी दूर से ही हमें आदियोगी की विशाल मूर्ति दिखने लगी अब यह सफर की आखरी मंज़िल थी, हम थक तो चुके थे मगर हमारा जोश कम नहीं हुआ था। हमने वहाँ काफ़ी समय बिताया, इतने सुंदर सफर का अनुभव हमें कभी ना भूलने वाली अनेक यादें दे गया।अपने इस सफर को मैं एक शेर में बयां करता हूं।

'ज़िंदगी की तरह ये वादियां भी कितनी हसीन हैं
आसमान नीला और जमीन रंगीन है।'

कंठस्थ

ट्रांसलेशन मेमोरी (टी.एम.) मशीन-साधित अनुवाद प्रणाली का एक भाग है, जिससे अनुवाद की प्रक्रिया में सहायता मिलती है। ट्रांसलेशन मेमोरी वस्तुतः एक डेटाबेस है जिसमें स्रोत भाषा (Source language) के वाक्यों एवं लक्षित भाषा (Target language) में उन वाक्यों के अनुवादित रूप को एक-साथ रखा जाता है। ट्रांसलेशन मेमोरी पर आधारित इस सिस्टम की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें अनुवादक पूर्व में किए गए अनुवाद को किसी नई फाइल के अनुवाद के लिए पुनः प्रयोग कर सकता है। यदि अनुवाद की नई फाइल का वाक्य टी.एम. के डेटाबेस से पूणत: अथवा आंशिक रूप से मिलता है तो यह सिस्टम उस वाक्य के अनुवाद को टी.एम. से लाता है। ट्रांसलेशन मेमोरी पर आधारित यह सिस्टम भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अधीन राजभाषा विभाग के लिए विकसित किया गया है। इस सिस्टम के माध्यम से अंग्रेजी से हिंदी तथा हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद संभव है।

लघु कथा

एक थी नारायणी

मीता भाटिया
अधिकारी
मिड कॉर्पोरेट शाखा, सूरत

बात तब से शुरू होती है जब मैं सिर्फ नौ दस साल का था। हमारे घर के पीछे के मकान में गली के पार एक विधवा रहती थीं। नाम था नारायणी। उसकी एक बड़ी लड़की थी, कौशल्या जिसका विवाह दूसरे मुहल्ले में हुआ था और उससे छोटा एक अठारह-बीस साल का लड़का था गिरधारी। नारायणी अपने घर में दो देवरों के परिवार के साथ रहती थी और अपने लड़के के जवान हो जाने के बाद अपनी पुरानी तकलीफें लगभग भूल चुकी थीं। उसका लड़का गिरधारी भी खुदा की रहमत से लंबा पूरे कद का सजीला जवान था और मुहल्ले में उसके जलवे बिखरने शुरू हो गये थे। नारायणी यदा कदा मेरी मां के पास स्वेटर बुनने, सीखने या किन्हीं दूसरे कामों से आया करती थीं और मुझे बड़ा छेड़ा करती थीं। उसके चले जाने के बाद मैं हमेशा अपनी मां से ये कहा करता था कि इसको यहां इतनी देर बैठाने की क्या जरूरत है फिर कि बैठा कर चाय और पिलाती हैं आप और मेरी मां मुझे हमेशा ये कहती थी कि बहुत मुश्किल से तो इसके दिन फिरे हैं। पहले तो घर से निकलती भी नहीं थी। हमारे घर की छत पर चारों तरफ ऊंची ऊंची दीवारे हैं और उनमें चौड़े-चौड़े आले बने हुए हैं और नारायणी के घर की तरफ एक बड़ी चौखाने जैसी खाली जगह है। जहाँ से उनके घर की छत दिखती थी। कई बार मेरी गेंद उस चौखाने जैसी जगह में से निकल कर उन की छत पर चली जाती थी और मैं उस नारायणी से अपनी गेंद वापस करने की गुहार करता था, तब उसके हाथ मौका मिल जाता था। मुझे चिढ़ाने का और चिढ़ा कर कहती थी कि अब अपने घर मुझे देख कर मुहं बनाएगा। मैं जब सिर हिलाकर ना में जवाब देता तभी वो मेरी गेंद वापस करती थी दरअसल वो घाघरा ओढ़नी पहनती थी। पैरों में चमड़े की जूतियां डालती थी और मुझे उसके पहनावे से अजीब-सी घिन आती थी, एक अच्छे इंग्लिश स्कूल में जो पढ़ता था मैं। चाय भी वो सुड़क-सुड़क के पीती थी और मुझसे वो आवाज़ बर्दाश्त नहीं होती थी। पर जब भी मैं स्कूल से लौट कर आता था और वो घर में एक मुड्डे पर बैठी मिलती थी तो बहुत स्नेह से मेरे सिर पर हाथ फेर कर कहती थी विद्या तेरा छोरा लगे बड़ा मलूक है इस इस्कूल डिरेस में और मैं अपने सिर पर से उसका हाथ बड़ी नाराजगी से हटाता था, वो बस हल्का से हँस देती थीं।

उसका लड़का मगर हमारे मुहल्ले में बड़ा चर्चित था, जिस रंग की पैन्ट उसी रंग की कमीज़, पैन्ट की जेब में मैंचिग रूमाल और चाल में जवानी की उछाल अपने बालों में भी वो देव आनंद की तरह एक ऊंचा गुफ्फा निकालता था। होंठ गोल कर के सीटी बजा सकता था और खेंच से पतंगों के पेंच बातों बातों में काट सकता था.. मैं भी उसे आते जाते बड़ी हैरत और इर्ष्या से देखा करता था.. खासकर उसके दायें हाथ में पड़े एक चमकते लोहे के कड़े को... गिरधारी महीनों महीनों बाद अपने घर लौटता था। वो अपने पिता की तरह ट्रक चलाया करता था।

कुछ दिनों तक मुहल्ले में मौज कर के फिर वापस लौट जाता था। जब जब गिरधारी घर से बाहर रहता था तो उसकी मां नारायणी बहुत बेचैन रहती थी और समय काटने के लिए हमारे घर आ जाया करती थी उसे तब कहां पता था कि कितनी बड़ी अनहोनी आगे उस का इंतजार कर रही थी।

होली के आसपास की बात थी। हमेशा की तरह गिरधारी अपने घर से एक महीने से बाहर था कि एक शाम मुहल्ले में एक खबर आई कि मेरठ के पास कहीं गिरधारी के ट्रक का ऐक्सीडेंट हो गया है, मुझे आज भी अच्छी तरह याद है। मुहल्ले में कैसा सन्नाटा छा गया था और नारायणी कितनी बदहवास मेरे बाऊ जी के पास दौड़ कर आयी थी ये कहने कि हो सके तो थाने में जा कर पूरे सच का पता लगायें कि गिरधारी कैसा है। कितनी चोट लगी है उस को। नारायणी के दोनों देवर कटले में अनाज की ढेरियां लगाते थे और थाने में जाने से डरते थे जहां से एक सिपाही गिरधारी के एक्सीडेंट की खबर लाया था। मेरे बाऊजी तुरंत साइकिल ले कर पुलिस थाने गये और वहां पता चला कि हकीकत में तो गिरधारी की मौत हो चुकी थी और चूंकि लाश सुबह तक ही आ पाएगी इसलिए अभी एक्सीडेंट की खबर ही नारायणी को दी गई है। जब बाऊजी पुलिस थाने से वापस घर आए तो उनका चेहरा लटका हुआ था। वो काफी दुखी नज़र आ रहे थे, भीतर कमरे में आते ही अपनी कमीज उतारते हुए मां से बोले- "सुनो, सब खत्म हो गया, गिरधारी की मौत हो गई। उसकी लाश सुबह-सुबह मुहल्ले में आ

जाएगी।'' माँ हतप्रभ खड़ी अपने आंचल से आंखें पोंछती हुई इतना ही कह पाई। ''नारायणी को पता चल गया। बाऊ जी बोले ''नहीं! उसके बड़े देवर मिसरू को बता दिया है, वो अपने हिसाब से बता देगा अपनी भाभी को।'' मैं दरवाज़े से लगा जो सब देख सुन रहा था। एकदम रूआंसा हो आया। आंखों से अपने आप आंसू बहने लगे, कि बाऊ जी ने मुझे देख लिया, पास आकर अपने हाथ से मेरे आंसू पोंछते हुए मां की तरफ देखते हुए बोले, ''देखो, इसे कुछ खिला-पिला कर सुला दो।''

मेरा मन तो जाने कैसा ही हो गया था मेरी आंखों के आगे आज गिरधारी का नहीं नारायणी का चेहरा घूम रहा था। वो कैसे हंसती बोलती थी, तेज़ आवाज़ में, कैसे मुझे बार बार चिढ़ाती थी, खिझाती थी। रह-रह कर याद आता था। पता नहीं क्या गुजरेगी उस पर, सुबह पता नहीं चार का वक्त था या पांच का, पर एकदम पूरा मुहल्ला खूब तेज चिल्लाहटों रोने-पीटने की आवाजों से गूंज उठा, हमारा सोने का कमरा घर में बिल्कुल पीछे था इसलिए रौशनदान से नारायणी के घर से उसकी तेज चीखें मिली-जुली चिल्ला हटें साफ-साफ सुनाई पड़ रही थीं। वो बहुत आपस दारी के दिन थे। कैसे सुबह हुई। कैसे वो पूरा दिन निकला और शाम हुई शब्दों में लिख पाना असंभव है। मेरे लिए बस इतना समझ लीजिए पूरा मुहल्ला जैस एक गहरे अवसाद और सन्नाटे में डूब गया था। इस घटना के दो महीने बाद तक मैंने फिर नारायणी को उसके घर के बाहर नहीं देखा दस पंद्रह दिन बाद वैसे भी सब नार्मल होने लगा था। मैं भी नारायणी को भूल-सा गया पर एक दिन लगभग दो महीने बाद जब मैं स्कूल से लौटा तो नारायणी हमारे आंगन में खंबे के पास एक बोरी के टुकड़े पर सिमटी सी बैठी थी। चुपचाप एकदम कमज़ोर पीली सी बेरंग, वो शायद तब मेरी मां के सामने खूब रो चुकी थीं। मैंने बहुत कोशिश की उसका ध्यान बंटाने की कई बार चल-चल कर पास गया। पर उसने मेरी तरफ देखा तक नहीं, हार थक कर मैं ऊपर छत पर खेलने चला गया।

उसके बाद धीरे-धीरे उसकी आमद रफ्त मेरे घर में फिर बढ़ने लगी, कई बार वो खाना बनने तक मेरे घर में ही रह जाती। मां का हाथ बंटाती और फिर खाना खाकर ही जाती। बाऊजी ने भी मां को कह दिया था कि वो उसका ख्याल रखे कुछ भी जरूरत हो तो उसे दे दिया करे। अब मेरा और नारायणी का रिश्ता भी तब्दील हो गया था। मेरे मन में उसके लिए मोह और उसके मन में मेरे लिए स्नेह समय के साथ बढ़ता ही गया। धीरे-धीरे ये भी स्पष्ट हो गया कि उसकी अब अपने घर में कोई जरूरत नहीं रही थी। वो वहां भारी उपेक्षा झेल रही थी, पति और बेटे की मौत के बाद अब वो जैसे दुनिया में एकदम अकेली थी। मेरा मन उसके लिए बहुत दुखता था। पर मैं क्या कर सकता था। पर मेरे घर से उसे बहुत सहारा मिला, पूरे मुहल्ले में भी जैसे उसके साथ सहानुभूति थी, दस साल जैसे-तैसे गुजर गए, नारायणी फिर पहले जैसी हो गई, सब कुछ जैसे अच्छा था पर अभी उसके जीवन का

सबसे दुखद मोड़ बाकी था.. मेरे बाऊजी को पैरालिटिक अटैक पड़ा और एक महीने के भीतर उनका देहांत हो गया। मुझे नौकरी के लिए बाहर जाना पड़ा और इस उठा पटक में नारायणी अपनी बेटी कौशल्या जिसने रेलवे की पटरी के पार कहीं घर बना लिया था उसके घर में रहने चली गई और हमारा संपर्क जैसे टूट-सा गया। मैं दो-तीन साल बाद वापस अपने शहर में ट्रांसफर हो कर आ गया था। एक दिन बातों-बातों में मुझे पता लगा कि नारायणी अपनी बेटी के घर खुश नहीं है। मेरे पीछे वो कई बार मेरे घर आई भी थी। कुछ पैसे-वैसे मांगने, उसके देवरों ने भी उसे घर से एक तरह से बेदखल कर दिया था, अब उसका अपनी बेटी के घर के अलावा कोई ठौर ठिकाना नहीं था मैंने कई बार सोचा उसकी खोज खबर लूं पर गया नहीं।

दो चार-दिन बाद पता चला कि नारायणी का अपनी बेटी से किसी बात पर काफी झगड़ा हो गया और वो कहीं घर छोड़ कर चली गई। मुझे अपने पर बहुत गुस्सा आया कि काश मैं दो दिन पहले दाऊदपुर में उसका घर ढूंढ लेता पर क्या मैं उसको अपने घर में रख पाता, खैर अब अफसोस के सिवा क्या चारा था। पर ईश्वर को मुझे अभी कुछ और ही दिखाना था, एक दिन मैं ऑफिस के बाहर मोटर साइकिल से शाम को घर के लिए निकला ही था कि हल्की बूंदें चालू हो गई, रेलवे स्टेशन के पास ही पावर हाऊस में मेरी नौकरी थी, मैं बारिश से बचने के लिए स्टेशन के बाहर एक पुरानी गुमटी जैसी जगह में रूक गया,वहीं कोने में कोई कंबल में लिपटा पड़ा था, पास में एक स्टील की एक छोटी बाल्टी रखी थी जिसमें कुछ सिक्के और एक-दो नोट पड़े थे, मैंने भी एक पांच का नोट उस बाल्टी में डाल दिया। दूसरे दिन सुबह-सुबह माँ बाहर मंदिर से लौटी और आते ही बोली -- ''सोनू! पता है नारायणी मर गई।'' मैं अखबार छोड़कर खड़ा हो गया, ''कैसे''?

''पता नहीं, कल उसकी लाश, रेलवे स्टेशन के पास वाली गुमटी में पड़ी मिली है।'' माँ ने कहा और अपनी आंखें पोंछने लगी। आप यह समझ सकते हैं कि इस घटना को सुनकर मेरी क्या हालत हुई होगी।

लघु कथा

मैं (अहम्)

यतीश कुमार गोयल
सहायक महाप्रबंधक
अंचल कार्यालय, हुब्बल्लि

राम गोपाल के परिवार में चार लोग थे। वो, उसकी पत्नी विमला और दो बच्चे। बड़ा पुत्र किशन 9 बरस का और पुत्री कमली 7 बरस की। रामगोपाल गांव में अपने घर के अंदर ही एक छोटी सी परचून की दुकान खोलकर बड़ी मुश्किल से घर का गुजारा कर पाता था। दुकान में ज्यादा सामान न होने के कारण कम ही ग्राहक उसकी दुकान पर आते थे। ग्राहक अधिकतर उसी दुकान पर ज्यादा जाता है, जहाँ उसकी रोजमर्रा की जरुरत का सामान एक ही जगह पर और मुनासिब दाम मे मिल जाए।

रामगोपाल में थोड़ा अकड़ था, लेकिन था स्वाभिमानी। कभी कोई बेईमानी न करता। तौल भी पूरी देता। इसी कारण थोड़े बहुत ग्राहक उसके पास आ जाते थे। किसी तरह थोड़े में ही बड़ी मुश्किल से गुजर बसर चल रही थी।

रामगोपाल के बच्चे उसकी एक न सुनते और दिन भर उधम मचाते। पत्नी विमला बहुत सरल स्वभाव की थी। बच्चे भला उसकी कहाँ माने। पढ़ाई में तो उनका मन ही न लगता। रोज ही स्कूल के मास्टर साहब रामगोपाल को उसके बच्चों की शिकायत करते। रामगोपाल मन ही मन में रोता। पत्नी विमला कई बार रामगोपाल को ढांढस बंधाती, सब सही हो जाएगा। रामगोपाल को लगता कि जब तक वो जीवित है किसी तरह से घर चल रहा है। उसके न होने पर तो घर का सत्यानाश हो जाएगा। जो कुछ भी है, सब उसकी वजह से ही है। विमला तो ठहरी अनपढ़ और सीधी। रामगोपाल को लगता कि अगर उसको कुछ हो गया, तो उसके परिवार का क्या होगा। इसी उधेड़बुन में लगा रहता कि मैं हूँ तो थोड़ा बहुत है, मेरे बाद क्या होगा। **मैं मैं मैं (अहम्)** के आगे उसको सब शून्य दिखता। रामगोपाल दिनभर दुकान पर उदास बैठा रहता। साधु द्वारा उसकी दुकान पर आकर भोजन मांगने पर, रामगोपाल ने तराजू से बांट उठाया और साधु को दिखाते हुए कहा कि निकल लो बाबा, यहाँ अपने खाने के लाले पड़े है और तुम मुस्टंडे होकर भी काम नहीं करते हो। साधु बेचारा दुम दबाकर किसी तरह भागा। रामगोपाल की परेशानियां रामगोपाल के व्यवहार पर असर दिखा रही थी।

रामगोपाल सोच-सोच कर घुटा जा रहा था। आत्माभिमान के कारण किसी नातेदार से अपनी परेशानी का जिक्र भी न करता। न ही किसी से मदद की गुहार लगाता। ऐसे तो उसके कई रिश्तेदार संपन्न थे और रामगोपाल के परिवार से सहानुभूति भी रखते थे। लेकिन रामगोपाल अपनी **मैं (अहम्)** के कारण किसी को कुछ न बताता।

बस हर दम विमला और बच्चों से यही कहा करता कि जब तक मैं हूं मजे ले लो। मेरे बाद भूखों मरोगे।

ईश्वर सर्वव्यापी एवं अंतरयामी है। वो सब जानता है। वो ही पालनहार है। सब उसकी इच्छा से ही है। मैं और तुम क्या हैं।

ईश्वर ने मैं (अहम्) मयी रामगोपाल को एक दिन अपनी शरण में ले लिया।

घर में कोहराम मच गया। पत्नी विमला ने ऐसा कभी बुरे सपने में भी न सोचा होगा। बच्चे भी सहम गए। सभी का रो-रोकर बुरा हाल था। लेकिन ईश्वर की मर्जी के आगे किस की चली है।

नातेदार भी दसवां, तेरहवीं के बाद धीरे धीरे चले गए। अब विधवा विमला के सिर पर बच्चों की जिम्मेदारी आन पड़ी। स्थिति नाजुक थी। विमला के सामने और कोई चारा न था, विमला ने दुकान पर बैठना शुरु किया। बच्चे पिता की आकस्मिक मौत के बाद, संजीदा हो गए। अब वो उधम न करते और मां की ओर देखते, उसका कहना मानते। स्कूल जाते। अपना काम खुद ब खुद करते। अब मास्टर साहब को शिकायत का मौका भी न देते। विमला भी परीस्थितियों

वश मजबूत हो रही थी। विमला ने अब चुनौती को स्वीकार कर लिया था। अपनी बड़ी जिज्जी से मदद की गुहार कर, दुकान में सामान बढ़ाया। अपने मरहूम पति रामगोपाल के ईमानदारी को कायम रखा। लिहाजा दुकान चल पड़ी। अब तक एक सरल नारी विमला अब एक मजबूत और समझदार नारी के रूप में परिवर्तित हो रही थी। उसकी सरलता और व्यवहारिकता से अब उसकी दुकान गांव के अन्य दुकानों से ज्यादा लाभप्रद हो रही थी। विमला ने अपने लिहाज को कस कर पकड़ा हुआ था। चीजें सही हो रही थी।

लगभग एक वर्ष बाद, ईश्वर ने सोचा कि क्यों न रामगोपाल को एक बार उसके गांव ले जाया जाए। सो एक दिन ईश्वर ने रामगोपाल को साधु के वेश में उसके घर भेज दिया।

रामगोपाल अपनी दुकान पर गया। उसने देखा कि दुकान सामान से लबालब भरा हुआ है। कई ग्राहक सौदा खरीद रहे हैं। विमला बड़ी जिम्मेदारी से दुकान को चला रही है। किशन घर की आंगन में

गंभीरता से पढ़ रहा है और कमली अपनी मां के कहने पर साधु बाबा के लिए भोजन की थाली ला रही है।

घर के चबूतरे पर एक दुधारू गाय भी रंभा रही है।

कविता

इतवार

पूजा धालीवाल
प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत

धूप छांव से बीते वो पल दो चार कहाँ से लाऊं,
फुर्सत वाला पहले सा वो इतवार कहाँ से लाऊं ।

बीते वो दिन जब हफ्ते में इक वार हमारा आता था,
संग अपने वो मीठे किस्से और यार हमारे लाता था ।

कागज की एक नांव बनाकर घंटों खेला करते थे,
छोटी छोटी खुशियों को हम जी भर के जिया करते थे ।

पीछे मुड़ कर देखो तो सब, अब भी अपना लगता है,
मनमौजी बेफिक्रा बचपन अब तो सपना लगता है ।

बहुत आगे निकल गए हम, वो दौर पीछे छूट गया,
बचकानी और अटखेलियों से, नाता हमारा टूट गया ।

बीते दौर की याद दिल को अब भी बहुत सताती है,
थक कर अब वो पहले जैसी चैन की नींद भला किसको आती है ।

सब सपनों को गिरवी रखकर हम भी रेस में आ गए,
बचपन के सब संगी साथी, सारे ही अब स्ट्रेस में आ गए ।

जीवन की रेस में जीतने की सबकी तैयारी है,
कहते हैं सब लोग कि पूजा यही 'दुनियादारी' है ।

एक दिन दो फुर्सत का सब खोज रहे हैं बरसों से,
जो बचपन में ही छूट गया है, जाने कितने अरसों से ।

रंगोली, शक्तिमान, मोगली और वो चित्रहार कहाँ से लाऊं,
बचपन का वो छुट्टी वाला इतवार कहाँ से लाऊं ।

कविता

मैं एक औरत हूं

संध्या बाला
अधिकारी
अंचल कार्यालय, मुंबई

हां मैं एक औरत हूं
लेकिन मैं एक मां हूं
सहनशीलता से भरपूर
ममता का सागर हूं

हां मैं एक औरत हूं
लेकिन मैं तुम्हारा आधा हिस्सा हूं
स्वयं से परे तुम्हारी शुभचिंतक हूं
मौत के सामने तुमसे पहले खड़ी
तुम्हारी अर्धांगिनी हूं

हां मैं एक औरत हूं
लेकिन मैं एक बेटी भी हूं
मां पिता के आंगन की हंसी हूं
मां का विश्वास
पिता का अभिमान हूं

हां मैं एक औरत हूं
लेकिन एक भाई की कलाई पर
राखी बांध उसकी लंबी उम्र
की दुआएं मांगती उसकी बहन हूं

हां मैं एक औरत हूं
जिसने तुझे है बनाया
उसी सृष्टि कर्ता की
एक कृति हूं
नए जीवन को रचती

हां मैं एक औरत हूं

ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता श्रृंखला

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' हिंदी के प्रमुख साहित्यकार थे। इन्होंने हिंदी कविता को नया विषय, नया शिल्प, नए उपमान एवं नवीन भाषा प्रदान की। तार सप्तक के प्रकाशन से इन्होंने हिंदी काव्य में प्रयोगवाद का सूत्रपात किया जिसका विकास कालांतर मे नई कविता के रुप में हुआ। अज्ञेय बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार थे। वह उनके समृद्ध अनुभव सहज परिणति है। अज्ञेय की प्रारंभिक रचनाएं अध्ययन की गहरी छाप अंकित करती हैं या प्रेरक व्यक्तियों से दीक्षा की गरमाई का स्पर्श देती हैं, बाद की रचनाएं निजी अनुभव की परिपक्वता की खनक देती हैं और साथ ही भारतीय विश्वदृष्टि से तादात्म्य का बोध कराती हैं। इन्होंने अभिव्यक्ति के लिए कई विधाओं, कई कलाओं और भाषाओं का प्रयोग किया जैसे कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, यात्रा वृत्तांत, वैयक्तिक निबंध, वैचारिक निबंध, अनुवाद, समीक्षा, संपादन आदि। काव्य कृतियों के साथ कहानियां, उपन्यास, संस्मरण, निबंध आदि अनेक विधाओं में साहित्य रचना की। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के कुशीनगर में सन् 1911 में हुआ। इनका बचपन लखनऊ, कश्मीर, बिहार और मद्रास में बीता। इन्होंने लाहौर और मद्रास में शिक्षा ग्रहण की और फिर बी.एससी तक की शिक्षा ग्रहण करने के बाद अंग्रेजी, हिंदी तथा संस्कृत का स्वाध्याय से अध्ययन किया। क्रांतिकारियों के संपर्क में रहने के कारण इन्हें चार वर्ष तक कारावास में तथा दो वर्ष नजरबंद रहना पड़ा। कुछ समय तक अमरीका में भारतीय साहित्य और संस्कृत के अध्यापक रहें। इन्होंने सैनिक, विशाल भारत, साप्ताहिक दिनमान, नया प्रतीकनामक पत्र-पत्रिकाओं के संपादन से भी संबद्ध रहें। इन्होंने 1943 में सात कवियों के वक्तव्य और कविताओं को लेकर एक लंबी भूमिका के साथ तार सप्तक का संपादन किया। इन्हें 1964 में 'आंगन के पार द्वार' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार और 1978 में 'कितनी नावों में कितनी बार' के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

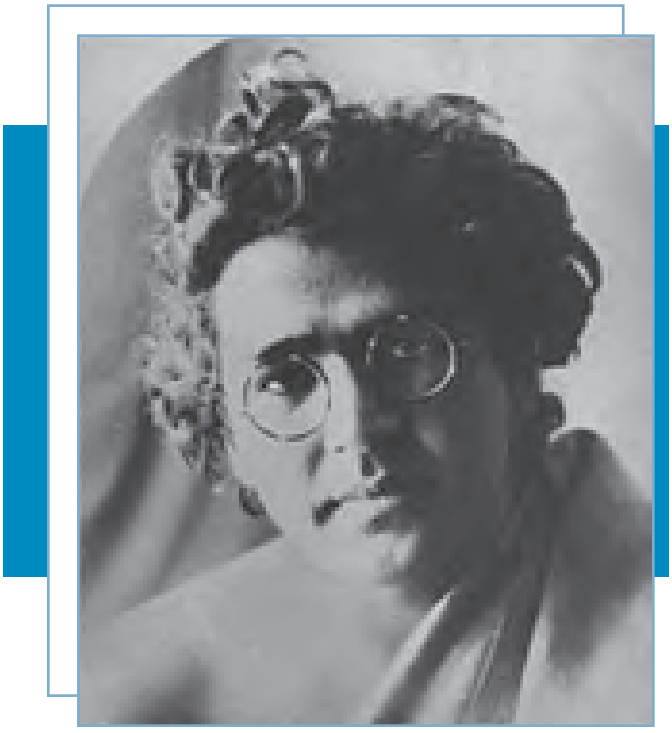

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'
(7 मार्च 1911
4 अप्रैल 1987)

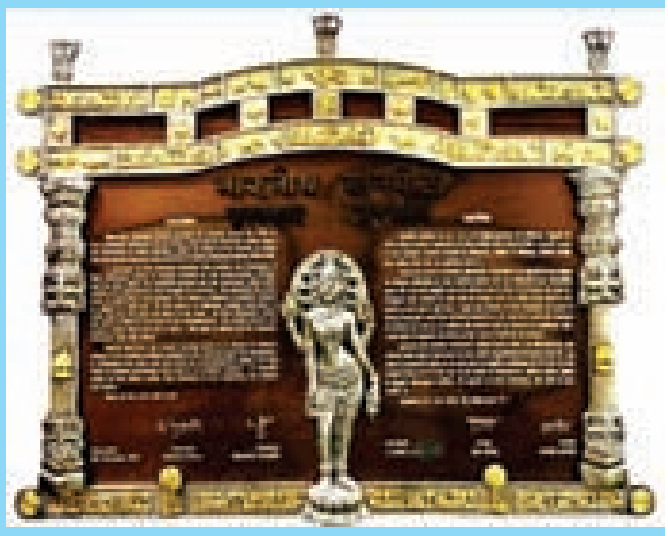

दिनांक 17/04/2023 से 19/04/2023 तक केनरा उत्कृष्टता केंद्र, गुरुग्राम में आयोजित राजभाषा अधिकारियों की तीन दिवसीय हिंदी कार्यशाला के उद्घाटन सत्र के दौरान **'राजभाषा संदर्भिका'** पुस्तक का विमोचन करती हुईं श्रीमती अंशुली आर्या, सचिव, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार, साथ में श्री अशोक चंद्र, कार्यपालक निदेशक, श्री शंकर एस, मुख्य महाप्रबंधक, मानव संसाधन विभाग, प्रधान कार्यालय बेंगलूरु, श्री भवेंद्र कुमार, मुख्य महाप्रबंधक, अंचल कार्यालय, दिल्ली एवं उपस्थित अन्य गणमान्य।

दिनांक 19 अप्रैल, 2023 को केनरा उत्कृष्टता केंद्र, गुरुग्राम में आयोजित राजभाषा अधिकारियों की तीन दिवसीय हिंदी कार्यशाला के समापन समारोह की मुख्य अतिथि डॉ. मीनाक्षी जौली, संयुक्त सचिव, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार का पुष्पगुच्छ से स्वागत करते हुए श्री जी.एस. रविसुधाकर, महाप्रबंधक, मानव संसाधन विभाग, प्रधान कार्यालय बेंगलूरु।

केनरा बैंक
Canara Bank
A Government of India Undertaking
Together We Can

सर्वोत्तम
आपका अधिकार

केनरा
वाहन
ऋण
8.80%* प्रति वर्ष
से शुरू

केनरा
आवास
ऋण
8.55%* प्रति वर्ष
से शुरू

कागज़ी कार्यवाही और
फुटकर खर्चों पर 100% छूट

प्रसंस्करण
शुल्क में छूट

ऊंची किस्तों का बोझ कम करें...
अपने आवास ऋण को केनरा बैंक में स्विच करें

www.canarabank.com
1800 1030
canarabank | canarabankofficial | canarabankindia